संबंधपरक शिष्यत्व

क्रूस प्रशिक्षण

परमेश्वर के लिये प्यार में बढ़ें. दुसरो के लिये प्यार में बढ़ें

Paul J. Bucknell

पॉल जे. बकनेल द्वारा पुस्तकें

आज हमारे जीवन से बात करने के लिए बाइबल की अनुमति!

- चिंता पर काबू पाना: शांति की खोज, ईश्वर की खोज
- सामान्य से परे पहुँचना: अतिरिक्त होना
- जीवन का मूल: हृदय की महान प्रशिक्षण की खोज
- धर्मी मनुष्य: जब ईश्वर मनुष्य के जीवन को छूता है
- शास्त्रों के माध्यम से छुटकारे
- परिवार के लिए ईश्वरीय शुरुआत
- बाइबिल परवरिश के सिद्धांत और व्यवहार
- एक महान विवाह का निर्माण
- क्रिस्चियन शादी के पूर्व परामर्शदाताओं के लिए परामर्श नियम
- संबंधपरक शिष्यत्व: क्रूस प्रशिक्षण
- दौड़ भाग करना: वासना पर काबू पाना
- उत्पत्ति: नींव की पुस्तक
- रोमन की पुस्तक: जीवित टिप्पणी
- रोमन की पुस्तक: बाइबल अध्ययन के प्रश्न
- इफिसियों की किताब के लिए बाइबल अध्ययन के सवाल
- यीशु के साथ चलना: मसीह में रहना
- टाइटस में प्रेरक बाइबिल अध्ययन
- 1 पतरस बाइबल अध्ययन प्रश्न: एक पतित दुनिया में रहना
- सेवा में अपना अगला कदम उठाएँ
- सेवा के लिए प्रशिक्षण अगुआ
- योना के लिए अध्ययन मार्गदर्शिका: परमेश्वर के दिल को समझना

www.foundationsforfreedom.net
पर इन मूल्यवान संसाधनों की जाँच करें

संबंधपरक

शिष्यत्व

क्रूस प्रशिक्षण

पॉल जे. बकनेल

रिलेशनल डिसिप्लिनशिप: क्रॉस ट्रेनिंग

कॉपीराइट © जुलाई, 2010, 2014 पॉल जे। बकनेल पिट्सबर्ग,

पीए 15212 यूएसए

ई-बुक:

आईएसबीएन -10: 1619930315

आईएसबीएन -13: 978-1-61993-031-5

किताबचा:

आईएसबीएन -10: 1619930307

आईएसबीएन -13: 978-1-61993-030-8

प्रशंसा

हम परमेश्वर की स्तुति करते हैं जो हमारे हाथों को मजबूत करता है,
हमारे पाप को धो डालो,
ज्ञान प्रदान करता है, और
हमें मजबूत बनाने और उनकी महिमा को दर्शाने के लिए हमारी
परिस्थितियों को नियंत्रित करता है!

NASB संस्करण का उपयोग तब तक किया जाता है जब तक कि अन्यथा कहा न जाए।

न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबिल © 1960, 1995 अनुमति द्वारा उपयोग किया गया, लॉकमैन फाउंडेशन www.lockman.org।

सभी अधिकार सुरक्षित। सीमित उत्पादन घर और शैक्षिक उपयोग के लिए पूर्व अनुमति के बिना स्वीकार्य है। व्यापक प्रतिलिपि के लिए लेखक से info@foundationsforfreedom.net पर संपर्क करें।

पॉल बकनेल ने इन विषयों और आगे के संसाधनों जैसे कि पावरपॉइंट्स पर बड़े पैमाने पर लिखा है, www.foundationsforfreedom.net पर हमारे शिष्यत्व (डी 1) प्रशिक्षण पुस्तकालय की जांच करें।

विषय - सूची

प्रस्तावना.....8

#1 पिता बालक.....10

#2 चरवाहा मेमना.....20

#3 शिक्षक शिष्य.....30

#4 राजा साम्राज्य.....40

#5 वर वधु.....49

#6 न्यायाधीश पापियों.....58

#7 याजक लोग.....67

#8 प्रभु सेवक.....76

#9 उद्धारक चुना हुआ.....86

#10 आधारशिला पत्थर.....95

#11 पति पत्नी.....104

#12 बेल शाखाएँ.....114

परिशिष्ट # 1 संबंध शिष्यत्व का उद्देश्य 123

परिशिष्ट # 2 संबंधपरक शिष्यत्व उपयोगकर्ता की मार्गदर्शिका.....126

परिशिष्ट # 3 पुस्तक सारांश.....134

परिशिष्ट 4: क्रूस प्रशिक्षण बाइबल सन्दर्भ.....135

परिशिष्ट 5: लेखक परिचय.....137

प्रस्तावना

के लोगों को तत्काल अनुशासित होने की आवश्यकता है! यह अधिक सच हो रहा है क्योंकि दुनिया भर के समाजों में बदहवास परिवारों की संख्या बढ़ रही है। विश्वासियों के पास यह समझने में कठिन समय होता है कि विभिन्न रिश्तों में क्या उचित या संभव है।

वास्तविक समस्या चर्च में उदासीनता की भावना में निहित है, इसकी जिम्मेदारी उसके लोगों को शिष्य बनाने की है। जो वास्तव में शिष्य विश्वासियों के शिष्य हैं, एक अपवाद हैं। दुनिया भर में स्थिति समान है। फिर, शिष्यत्व के लिए दृष्टि की कमी दोनों ने व्यक्तिगत बुनियादी प्रशिक्षण के लिए इस महान आवश्यकता को पैदा किया है। तितुस की पुस्तक समाधान की ओर इशारा करते हुए इस समस्या का सामना करती है (तितुस 2: 1-10) - चरित्र के पुरुषों और महिलाओं को उठाएं जो युवा विश्वासियों को प्रशिक्षित करेंगे। शिष्यत्व एक अनिवार्यता है (मत्ती २8: 18-20)

इस बारह-भाग की बाइबिल श्रृंखला के माध्यम से आपको शिष्य बनाने में सक्षम होना चाहिए, और विशेष रूप से उन लोगों से लैस होना चाहिए जो कठिन पारिवारिक परिस्थितियों में बड़े हुए हैं। परमेश्वर और मनुष्य के साथ अच्छे संबंध रखने के पीछे निहित बुनियादी सच्चाइयों को सीखने और लागू करने से, परमेश्वर के लोग धर्मी और समृद्ध ईसाई जीवन जीएंगे।

मैं खुद एक बिगड़े हुए घर में पला-बढ़ा हूं। कड़वाहट के साथ तलाक को आदर्श के रूप में स्वीकार किया गया था। मुझे इतनी व्यक्तिगत समस्याओं से जूझना पड़ा। मेरी इच्छा है कि मेरे पास कोई शिष्य हो। इसके बजाय मुझे खुद इन व्यक्तिगत समस्याओं से जूझना पड़ा, अपनी असफलताओं को कई गुना बढ़ा दिया।

एक बच्चे की तरह, एक नए विश्वासी को व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के वचन द्वारा पोषित करने की आवश्यकता होती है। संबंधपरक शिष्यत्व, शिष्यत्व पाठ्यक्रम परमेश्वर के लोगों को दूसरों के साथ ठीक से कैसे संबंध रखता है, जो वे अन्यथा कभी नहीं देख सकते हैं। यह पुस्तक विश्वासी को एक भाईचारा दृष्टिकोण प्रदान करने के लिए डिज़ाइन की गई है कि कैसे उचित रिश्ते कार्य करते हैं और इस प्रकार विश्वासी के आध्यात्मिक जीवन के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है।

प्रत्येक अध्याय शिष्य-निर्माताओं के लिए वास्तव में संभावित समस्याओं पर चर्चा करने का एक नया अवसर प्रदान करता है जो शिष्य जीवन के उस क्षेत्र में सामना कर रहा हो सकता है। यीशु ने अपने लोगों को गहरी सैर पर ले जाने के लिए जान-बूझकर उदाहरणों का इस्तेमाल किया। पिता-बच्चे, पति-पत्नी, बेल-शाखाएँ, न्यायाधीश-पापी, चरवाहे-मेमने कुछ उदाहरण हैं। हमें आगे ले जाने के लिए मसीह हमारा सर्वोच्च उदाहरण है।

अब समय आ गया है कि हम सभी विश्वासियों को परमेश्वर के लिए और दूसरों के लिए प्यार करने के लिए प्रशिक्षित करना शुरू करें। परमेश्वर के इस महान कार्य में अपना हिस्सा लें। शिष्य-निर्माता बनो। संबंधपरक शिष्यत्व और अन्य संबद्ध संसाधन जीवन चित्रण, भाईचारा ध्वनि शिक्षण, सहायक आरेख, गहरी और समृद्ध अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं ताकि नए विश्वासी को विकसित करने में मदद मिल सके जो गहन आध्यात्मिक आधार की आवश्यकता है। परिशिष्ट संसाधनों और इसके उद्देश्य का उपयोग करने पर अन्य सहायक उपकरणों की आपूर्ति करते हैं।

जुलाई 2010, अद्यतन 2014

पॉल जे। बकनेल

पिट्सबर्ग, पेंसिल्वेनिया, संयुक्त राज्य अमेरिका

क्रूस प्रशिक्षण

संबंधपरक शिष्यत्व

#1 पिता ⟷ बच्चे

प्यार में बढ़ रहा है
परमेश्वर और दूसरों के लिए!

पिता और बच्चे

हमारे पिता जैसा दिखने वाला

यीशु ने अपने व्यक्तिगत और मंत्रालय की सभी जरूरतों की देखभाल करने के लिए अपने पिता पर पूरा भरोसा किया। उसी तरह हम अपने स्वर्गीय पिता पर भरोसा करके और उनकी आज्ञा मानकर यीशु की नकल करते हैं। हमारा जीवन तब हमारे आसपास के लोगों को हमारी देखभाल के माध्यम से हमारे पिता के प्यार को दर्शाता है।

आदर्श बेटा

परमेश्वर की हमारी अवधारणाएँ हमारे विश्वास को बहुत प्रभावित करती हैं। कुछ लोग परमेश्वर को सुस्त और दूर का मानते हैं। वे उस पर भरोसा करने के लिए अनिच्छुक हैं। दूसरों का मानना है कि वह कठोर है और गलती खोजने की प्रतीक्षा कर रहा है। उन्हें उसके साथ एक करीबी रिश्ता विकसित करना मुश्किल लगता है, लेकिन यीशु ने अपने पिता के बारे में कैसे सोचा?

यीशु के पिता के साथ इस तरह के एक विशेष संबंध थे और चाहते हैं कि हमारे पास भी एक हो। उनकी आदर्श प्रार्थना में यीशु ने हमें सर्वशक्तिमान परमेश्वर को "हमारे पिता" के रूप में संबोधित करने का निर्देश दिया है। परमेश्वर एक आदर्श पिता है जो अपने बच्चों के लिए प्यार, देखभाल, मार्गदर्शन और सुधार प्रदान करता है। जैसे-जैसे हम इन सच्चाइयों को सीखते हैं, हम उन पर बेहतर भरोसा कर सकते हैं।

इसलिए जिस तरह यीशु अपने पिता पर भरोसा करने, उनकी आज्ञा मानने और उनका पालन करने के लिए आदर्श पुत्र है, उसी तरह हम भी यीशु की तरह रह सकते हैं और परमेश्वर और अन्य विश्वासियों के साथ भी घनिष्ठ संबंध साझा कर सकते हैं। "मैं आगे को जगत में न रहूंगा, परन्तु ये जगत में रहेंगे, और मैं तेरे पास आता हूं; हे पवित्र पिता, अपने उस नाम से जो तू ने मुझे दिया है, उन की रक्षा कर, कि वे हमारी नाईं एक हों।" (यूहन्ना 17:11)।

ईश्वर हमारा पिता है

परमेश्वर यीशु के पिता हैं

1) पिता पुत्र से प्रेम करता है।

परमेश्वर ने अपने सेवा की शुरुआत में यीशु का वर्णन किया, "और देखो, यह आकाशवाणी हुई, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं" (मत्ती 3:17)। उद्धरण में उन शब्दों के नीचे चक्र, जो पिता यीशु का वर्णन करने के लिए उपयोग करते हैं।

क्योंकि पिता तो आप ही तुम से प्रीति रखता है, इसलिये कि तुम ने मुझ से प्रीति रखी है, और यह भी प्रतीति की है, कि मैं पिता कि ओर से निकल आया। (जॉन 16:27)

यीशु की तरह, हमें भी परमेश्वर के पुत्र कहे जाने और पिता के प्रेम में साझा होने का अपार सौभाग्य प्राप्त है। यीशु ने अपने चेलों से कहा। परमेश्वर तुम्हे प्यार करते है! वह अब आपको पापी के रूप में नहीं देख रहा है, लेकिन उसके बेटों में से एक के रूप में!

2) पिता पुत्र का ध्यान रखता है।

एक बार मसीह के एक शिष्य ने यीशु की रक्षा करने की कोशिश की। यीशु ने कहा, "*तब यीशु ने उस से कहा; अपनी तलवार काठी में रख ले क्योंकि जो तलवार चलाते हैं, वे सब तलवार से नाश किए जाएंगे।क्या तू नहीं समझता, कि मैं अपने पिता से बिनती कर सकता हूं, और वह स्वर्गदूतों की बारह पलटन से अधिक मेरे पास अभी उपस्थित कर देगा?*" (मत्ती 26: 52-53 एनएलटी)

परमेश्वर पिता हमेशा अपने बच्चों की जरूरतों को देखता है।

निर्माता के रूप में वह हमारे सामने आने वाले किसी भी दुश्मन से अधिक शक्तिशाली है।

मत्ती 6: 7-8 नीचे पढ़िए। यीशु ने यह कैसे सिखाया कि पिता कैसे उनकी परवाह करता है?

प्रार्थना करते समय अन्यजातियों की नाईं बक बक न करो; क्योंकि वे समझते हैं कि उनके बहुत बोलने से उन की सुनी जाएगी।सो तुम उन की नाईं न बनो; क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने से पहिले ही जानता है; कि तुम्हारी क्या क्या आवश्यक्ता है।

उपरोक्त छंदों से, यीशु आपके पिता से बात करने के बारे में क्या कहता है?

1. _____ का उपयोग न करें।

2. हमारे पिता _____ जानते हैं।

हमें अपने पिता के बारे में चिंता करने के बजाय हर समस्या को तुरंत सीखने की जरूरत है। एक छोटे बच्चे के रूप में मैंने अपने भोजन या कपड़ों के बारे में कभी चिंता नहीं की। मेरे पिता ने सुनिश्चित किया कि मुझे जो चाहिए था। उसने मेरी देखभाल की।

3) पिता पुत्र का निर्देशन और प्रशिक्षण करता है।

यीशु ने प्रार्थना में अपने पिता से बात करने में बहुत समय बिताया। यीशु ने अपने स्वर्गीय पिता के साथ समय बिताना पसंद किया और वह करना चाहता था जो वह चाहता था। एक बार उन्होंने यह कहा था, "क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, वरन अपने भेजने वाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूं।" (यूहन्ना 6:38)।

हमारे पिता हमें अपने जैसा बनाना चाहते हैं। वह हमें बाइबल, माता-पिता और शिक्षकों के माध्यम से दिखाता है जो उससे प्यार करते हैं। कभी-कभी कठिन परिस्थितियों में प्रशिक्षण भी आता है! हमें चौकस और आज्ञाकारी होने की जरूरत है।

आवेदन

आज के दिन के बारे में अपने स्वर्गीय पिता को बताएं। एक ज़रूरत को पहचानें जो आपके पास है और भरोसे के साथ उसकी देखभाल करने के लिए कहें।

हमारे पिता का जवाब

यीशु उनका प्रथम पुत्र है

हम यीशु के स्वयं के उदाहरण से एक बेटे की उचित मानसिकता में अनमोल अंतर्दृष्टि प्राप्त करते हैं। यीशु मसीह ने एक बेटे के रूप में उनकी भूमिका को बहुत गंभीरता से लिया।

1) पुत्र अपने पिता का सम्मान करता है।

बार-बार जब यीशु ने किसी को चंगा किया तो उस व्यक्ति ने परमेश्वर को महिमा दी। एक बार यीशु ने प्रार्थना की, "*हे पिता अपने नाम की महिमा कर:।"* (यूहन्ना 12:28)
यीशु ने हमेशा अपने पिता के लिए ध्यान, सम्मान और महिमा लाने की कोशिश की। ध्यान दें कि यीशु ने पर्वत पर उपदेश में क्या कहा था,
उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं, बड़ाई करें। (मत्ती 5:16)

- ऊपर 'महिमा' शब्द को सर्कल करें।
- वाक्य समाप्त करें "स्वर्ग में _____ गौरव करें।"

हमें किसको सम्मान दिया जाता है? हमारे? नहीं! स्वर्ग में हमारे पिताजी! हमें जानबूझकर उसे महिमा लाने की आवश्यकता है क्योंकि वह एक महान कार्य कर रहा है।

2) पुत्र अपने पिता पर विश्वास करता है और उसका पालन करता है।

परमेश्वर हमें एक महान वचन देता है, "*और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात उन्हीं के लिये जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।...*" (रोमियों 8:28)।

वे चीजें हमेशा सुखद या आसान नहीं हो सकती हैं, लेकिन कुछ भी कभी भी भगवान के नियंत्रण से बाहर नहीं होता है। यहां तक कि वह दर्दनाक और भ्रामक स्थितियों का भी उपयोग कर सकता है जो हमारे और अन्य लोगों के लिए एक बड़ा कारण हो सकता है अन्यथा नहीं।

एक भाई की गवाही:

"एक बार, मैं एक नौकरी की तलाश कर रहा था और एक दिलचस्प लेकिन कम भुगतान वाला पाया गया। यह विशेष नौकरी आगामी स्कूल वर्ष के लिए मेरी वित्तीय जरूरतों को पूरा नहीं करेगी। मेरे पिता ने मुझे इसे बंद करने के लिए कहा, वादा करते हुए उन्होंने मुझे पैसे उधार दिए जबकि मैंने खोज जारी रखी। मैं उस पक्की नौकरी पर ठहरा सकता था जो मैंने अपने स्वर्गीय पिता पर भरोसा करने का फैसला किया था, क्योंकि मैंने अपने पितृपक्ष का पालन करते हुए मुझे एक बेहतर नौकरी प्रदान की। परमेश्वर ने मुझे यह सुनिश्चित करने के बारे में एक विशेष शांति दी कि एक निश्चित नौकरी और आखिरकार मुझे सबसे अच्छी इंटर्नशिप प्रदान की जो मैंने कभी की थी! "

3) पुत्र अपने पिता पर निर्भर करता है।

यीशु अपने पिता के प्रावधान पर बहुत निर्भर था। इसलिए हम हैं, लेकिन हम हमेशा हमारी देखभाल के लिए परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं। जीजस कहते हैं, "*सो जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को अच्छी वस्तुएं क्यों न देगा?*है" (मत्ती 7:11)

हमारे पिता हमें आशीर्वाद देना चाहते हैं (हालाँकि हमेशा नहीं कि हम कैसे उम्मीद करें)। वह हमारी सलामती की परवाह करता है। हमें उनके आशीर्वाद के लिए अक्सर सीखने की जरूरत है! हमारे पिता को हमारी प्रार्थनाओं के जवाब में काम करना पसंद है।

आवेदन

अपने जीवन के ऐसे क्षेत्र को पहचानें जो आपके पिता के सम्मान में नहीं आया है। अपने दृष्टिकोण और तरीकों को बदलने की तलाश करें। उसकी मदद के लिए प्रार्थना करें।

हमारे पिता जैसा दिखने वाला

हम परमेश्वर के बेटे हैं

आपने कहावत सुनी होगी, "पिता की तरह, बेटे की तरह।" आप किसी के पिता के बारे में उनके बेटे के काम करने के तरीके के बारे में बता सकते हैं। यीशु अपने पिता के चरित्र का एक आदर्श प्रमाण था। एक बार यीशु के शिष्यों ने उसे पिता को हमें दिखाने लिए कहा। यीशु का जवाब था,

फिलेप्पुस ने उस से कहा, हे प्रभु, पिता को हमें दिखा देयही हमारे लिये बहुत है। : यीशु ने उस से कहा; हे फिलेप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूं, और क्या तू मुझे नहीं जानता? जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा (यहुन्ना 14: 8-9)

जैसे-जैसे हम अपने पिता को और गहराई से जानेंगे, हम उनके जैसा बनना चाहेंगे। पारिवारिक समानता इतनी मजबूत होनी चाहिए कि दूसरे हममें पिता को देखें। हमारे जीवन में दूसरों को हमारे स्वर्गीय पिता को देखना चाहिए:

1) उसके काम करना

हम पहले मत्ती 5:16 में पढ़ते हैं कि हमें अच्छा _____ करना चाहिए ताकि पिता को महिमा मिले। हम दूसरों की सेवा करने के लिए अवसरों की तलाश करते हैं।

2) शांति बनाना

मत्ती 5: 9 में यीशु ने कहा, "धन्य हैं शांतिदूत, क्योंकि उन्हें _____ कहा जाएगा।" हमें न केवल दूसरों के साथ गुस्से में बहस करने से इंकार करना चाहिए, बल्कि विनम्रता से परमेश्वर की शांति और अपने रिश्तों में प्यार का परिचय देना चाहिए।

3) दुश्मनों से प्यार करना

मत्ती 5:44-45 को देखो और लापता शब्दों में भरें, "लेकिन मैं तुमसे कहता हूं, अपने दुश्मनों से प्यार करो और जो तुम्हें सताते हैं उनके लिए प्रार्थना करो, ताकि तुम _____ हो जो स्वर्ग में है; क्योंकि वह भलों और बुरों दोनो पर अपना सूर्य उदय करता है, और धमिर्यों और अधमिर्यों दोनों पर मेंह बरसाता है।"

परमेश्वर के बच्चों के रूप में, हम अपने स्वर्गीय पिता की तरह ही दयालु होने वाले हैं। यह मुश्किल है! हमें उनके प्यार की जरूरत है। परमेश्वर हमें यह प्यार देंगे क्योंकि हम उसके लिए चाहते हैं।

4) एक दूसरे से प्यार करना

हमारे पिता के साथ हमारे रिश्ते को सीधे परमेश्वर के परिवार में दूसरों के लिए प्यार और देखभाल में बदलना चाहिए। किसी भाई बहिन को विरोध की अनुमति नहीं है! "इतने में एक सामरी स्त्री जल भरने को आईयीशु ने उस से कहा :, मुझे पानी पिला। क्योंकि उसके चेले तो नगर में भोजन मोल लेने को गए थे। "(1 यूहन्ना 4: 7-8)।

5) परमेश्वर के परिवार का विस्तार करना

परमेश्वर एक बड़ा परिवार चाहते हैं! यीशु ने उद्देश्य पूरा किया जो उसके पिता ने उसके लिए रखा था। लेकिन अभी और काम बाकी है! अब वह हमें काम खत्म करने के लिए भेजता है। " जैसे तू ने जगत में मुझे भेजा, वैसे ही मैं ने भी उन्हें जगत में भेजा।" (यूहन्ना 17:18)।

आवेदन

(१) जिस व्यक्ति के साथ आप शत्रु रहे हैं, उसका ध्यान रखें। अपने पिता से कहें कि वह आपको इस व्यक्ति के लिए अपना अद्भुत प्यार दे। फिर उस व्यक्ति के लिए कुछ सुखद करें।

(२) प्रभु आप को सुसमाचार साझा करने के लिए किससे आग्रह कर रहे हैं ताकि पिता आपके जीवन में काम करके किसी को उसको जानने के लिए ला सके जैसा उसने यीशु के साथ किया था?

सारांश

ए) हमारे पिता हमें प्यार करते हैं, मुहैया करते हैं और मार्गदर्शन करते हैं।

ख) हमारे पिता को जानना और प्यार करना विश्वास और आज्ञाकारिता को आकर्षक और स्वाभाविक बनाता है।

ग) जैसे-जैसे हम अपने पिता की तरह बनते जाते हैं, वैसे-वैसे ही हम दूसरों के लिए अपने प्यार से मिलते जुलते दिखेंगे।

होम प्रोजेक्ट लें

1 यूहन्ना 3: 1

• मेमोरी वर्सेज

देखो कि पिता ने हमसे कितना प्यार किया है, कि हमें परमेश्वर की संतान कहा जाए; और ऐसे हम हैं। (NASB)

• प्रार्थना जर्नल

अपनी आत्मिक पत्रिका में अपनी चिंताओं और जरूरतों को लिखने के लिए समय निकालें। तारीख और समय लिख दें। विशेष रूप से परमेश्वर से उन जरूरतों को पूरा करने के लिए कहें। किस तरह से उसने तारीख और समय के साथ उन प्रार्थनाओं का जवाब दिया।

- अपने सांसारिक पिता के साथ शांति बनाए रखें

हमें अपने पिता और मां का सम्मान करना है। यदि आपने अपने पिता के प्रति आस्वीकार्य पाप किया है, तो पहले प्रार्थना करें और अपने माता-पिता से क्षमा मांगें। सुनिश्चित करें कि आप माफी माँगते हैं, "क्या आप मुझे क्षमा करेंगे?"

- साक्षात्कार

अपने जीवन में एक या दो घटनाओं के बारे में साझा करने के लिए एक परिपक्व विश्वासी से पूछें जहां परमेश्वर ने विशेष रूप से उसके पिता के रूप में उसकी देखभाल की। ध्यान दें कि संघर्ष क्या था और परमेश्वर ने उसे कैसे प्रावधान, ज्ञान या प्रोत्साहन दिया।

- दूसरों को प्यार करना

किसी अन्य विश्वासी को खोजें और उस व्यक्ति के लिए कुछ विशेष करने के लिए प्रोत्साहित करके परमेश्वर के प्रेम को प्रदर्शित करें।

क्रूस प्रशिक्षण

संबंधपरक शिष्यत्व

#2 चरवाहा ⇔ मेमना

प्यार में बढ़ रहा है

परमेश्वर और दूसरों के लिए!

चरवाहा और मेमना

हमारे जीवन में ईश्वर के प्रेम को दर्शाते हुए

चरवाहा और मेमना की छवि शक्तिशाली रूप से उनके लोगों के लिए परमेश्वर की अच्छी देखभाल का संचार करती है। वह हमारा चरवाहा है जो वास्तव में हमारी परवाह करता है। उसने मसीह को हमारे लिए मरने के लिए भेजा। यह एकमात्र तरीका था कि वह हमें अपना बना सके, और जब से हम उसके हैं, वह हमारे ऊपर अपना प्यार लुटाता है। देखभाल करने की यह शक्तिशाली भावना हमारे जीवन को बदल देती है जिससे हमें उम्मीद है कि हम दूसरों की देखभाल करेंगे।

हमारे घर का रास्ता खोजना

उन गहरी अभिन्न मित्रता के लिए हम सभी लंबे समय तक। क्या आपने कभी परमेश्वर के करीब होने के बारे में सोचा है? परमेश्वर के पास है। वह आपकी परवाह करता है! ध्यान दें कि वह अपने शिष्यों के साथ अपने संबंधों के बारे में कैसे बोलता है।

> *अब से मैं तुम्हें दास न कहूंगा, क्योंकि दास नहीं जानता, कि उसका स्वामी क्या करता है : परन्तु मैं ने तुम्हें मित्र कहाहै, क्योंकि मैं ने जो बातें अपने पिता से सुनीं, वे सब तुम्हें बता दीं। (* यूहन्ना *15:15).*

मसीह ने एक अच्छे चरवाहे का एक बढ़िया उदाहरण पेश किया। उसने उन सभी चीजों को किया जो भेड़ (हमें- परमेश्वर *के लोग) को भेड़शाला में लाने के लिए, उनकी रक्षा करने और प्रदान करने के लिए आवश्यक थीं।*

क्योंकि परमेश्वर यहोवा यों कहता है, देखो, मैं आप ही अपनी भेड़बकरियों की सुधि लूंगा-, और उन्हें ढूंढ़ूंगा। जैसे चरवाहा अपनी भेड़बकरियों में से भटकी हुई को फिर से अपने झुण्ड में - बटोरता है, वैसे ही मैं भी अपनी भेड़ बकरियों को-बटोरूंगा; मैं उन्हे उन सब स्थानों से निकाल ले आऊंगा, जहां जहां वे बादल और घोर अन्धकार के दिन तितरबितर हो गई हों।- (यहेजकेल 34:11,12).

यीशु मसीह ने 'परमेश्वर के मेमने' के रूप में हमारे लिए एक अद्भुत आदर्श का प्रदर्शन किया। एक भेड़ के रूप में उन्होंने सुना और पूरी तरह से अपने चरवाहा पर भरोसा किया। वह स्वेच्छा से क्रूस पर चढ़ गया और हमारे पापों के लिए एक दर्दनाक मौत हो गई। परमेश्वर के मेमने के रूप वह हमें परमेश्वर की आज्ञाओं के पालन के प्रति उचित रवैया सिखाता है। सबसे उल्लेखनीय रूप से उन्होंने हमें दिखाया

उसे हमारे जीवन में और उसके माध्यम से अपना अच्छा प्रदर्शन करने की अनुमति कैसे दें। अच्छा चरवाहा हमें परमेश्वर के अच्छे तरीकों की ओर ले जाता है। हमें केवल अनुसरण करने की आवश्यकता है। हम क्यों नहीं करेंगे?

अच्छा चरवाहा मैं हूं; जिस तरह पिता मुझे जानता है, और मैं पिता को जानता हूं। इसी तरह मैं अपनी भेड़ों को जानता हूं, और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं, और मैं भेड़ों के लिये अपना प्राण देता हूं। (यूहन्ना *10:14-15).*

भगवान एक चरवाहा प्रदान करता है

एक अच्छे चरवाहे में आनन्द

ऐसी कई बातें हो सकती हैं जो हम इस दुनिया में नहीं समझते हैं लेकिन इन सबके पीछे हमारा दृढ़ विश्वास होना चाहिए कि ईश्वर अच्छा है। भगवान वास्तव में स्वच्छंद आदमी की परवाह करता है। हम इसे कई तरीकों से देखते हैं।

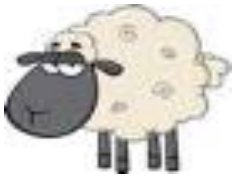

1) हम ईश्वर से भटक गए

हम सब भेड़ की तरह हैं जो चरवाहे से भटक गए हैं और हमला करने के लिए कमजोर थे। "और वे एक चरवाहे की कमी के कारण बिखरे हुए थे, और वे मैदान के हर जानवर के लिए भोजन बन गए थे और बिखरे हुए थे" (यहेजकेल 34: 5)। यह एडम के मूल पाप के बारे में बोलता है, लेकिन यह भी बताता है कि हम सभी अलग-अलग जीवन जीने के लिए कैसे चुनते हैं

क्या आपको लगता है कि अपने जीवन में गलत करने के लिए तुला है?

2) मदद करने वाला कोई नहीं था

यह काफी असहाय है, लेकिन कोई मदद नहीं कर सका। *"मेरी भेड़बितर हुई हैं-बकरियां तितर-; वे सारे पहाड़ों और ऊंचे ऊंचे टीलों पर भटकती थीं; मेरी भेड़ बकरियां सारी पृथ्वी के ऊपर-तितर-बितर हुईं; और न तो कोई उनकी सुधि लेता था, न कोई उन को ढूंढ़ता था। "*(यहेजकेल 34: 6)। वास्तव में किसी ने परवाह नहीं की। क्या आज जिस तरह से बहुत से लोग महसूस नहीं करते हैं? हर कोई अपने लिए बाहर है।

3) धार्मिक नेताओं ने मदद नहीं की

यहां तक कि धार्मिक आगुवा भी हमें निराश कर सकते हैं। परमेश्वर ने उनकी देखभाल के लिए अपने लोगों पर आगुवा को नियुक्त किया था, लेकिन यहां तक कि कई मामलों में इन आगुवा ने अपने स्वयं के अच्छे की मांग की। वे आलसी और भोगवादी थे।। " *परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, मेरी भेड़बकरियां जो लूट गई-, और मेरी भेड़बकरियां जो चरवाहे - के न होने के कारण सब वनपशुओं का आहार हो गईं; और इसलिये कि मेरे चरवाहों ने मेरी भेड़-बकरियोंकी सुधि नहीं ली, और मेरी भेड़बकरियों का पेट नहीं -, अपना ही अपना पेट भरा;*" (यहेजकेल 34: 8)। कुछ लोग अपने दिल को परमेश्वर से दूर कर देते हैं क्योंकि उनके धार्मिक आगुवा ने उन्हें विफल कर दिया। क्या आपको लगता है कि यह सही है? सही प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए? क्या किसी आगुवा ने आपको कभी निराश किया?

4) परमेश्वर स्वयं अपने लोगों की देखभाल करेगा

कितना अजीब और अद्भुत है कि परमेश्वर ने उन लोगों की देखभाल करने के लिए पहुंच गया, जिन्होंने उसे नाराज और अवहेलना किया। " *क्योंकि परमेश्वर यहोवा यों कहता है, देखो, मैं आप ही अपनी भेड़बकरियों की सुधि लूंगा-, और उन्हें ढूंढूंगा।* '(यहेजकेल 34:11)।

परमेश्वर अपने लोगों की यह सुनिश्चित करके परवाह करता है कि उनके पास सबसे अच्छी चरागाह भूमि है। " *मैं उन्हें अच्छी चराई में चराऊंगा, और इस्राएल के ऊंचे ऊंचे पहाड़ों पर उन को चराई मिलेगी; वहां वे अच्छी हरियाली में बैठा करेंगी, और इस्राएल के पहाड़ों पर उत्तम से उत्तम चराई चरेंगी।* " (यहेजकेल 34:14)। उसने यह कैसे किया? वह खुद एक वफादार चरवाहा नियुक्त करेगा।

यह अच्छा चरवाहा उनका अपना बेटा होगा जिसे वह स्वर्ग से पुरुषों के बीच रहने और अपने लोगों के लिए मरने के लिए भेजेगा। *"और मैं उन पर ऐसा एक चरवाहा ठहराऊंगा जो उनकी*

चरवाही करेगा, वह मेरा दास दाऊद होगा, वही उन को चराएगा, और वही उनका चरवाहा होगा। यीशु मसीह दाऊद के वंश में आया था ।

आवेदन

हमें खोज निकालने के लिए हमें अपने परमेश्वर के प्रति कितना आभारी होना चाहिए! हम अपनी पसंदीदा चीजों की खोज कर सकते हैं, लेकिन क्या हम अपने रास्ते से हटकर उस चीज़ की तलाश करेंगे, जो टूटी-फूटी और गंदी थी? यीशु को क्रूस पर मरने के लिए भगवान का धन्यवाद करें ताकि हमें उसके झुंड में जोड़ा जा सके।

मसीह हमारा चरवाहा है

भेड़ के रूप में विश्वास करें कि उनके चरवाहे पर भरोसा है

भेड़ें चतुर होने के लिए नहीं जानी जाती हैं। उनका जीवन इस बात पर निर्भर करता है कि चरवाहा उनकी कितनी अच्छी देखभाल करता है और किस सीमा तक चरवाहे का पालन करता है। यीशु हमारा अद्भुत चरवाहा है जो हमारी परवाह करता है।

1) एक चरवाहा जानता है

एक अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों को जानता है। यीशु ने कहा, "अच्छा चरवाहा मैं हूं; जिस तरह पिता मुझे जानता है, और मैं पिता को जानता हूं। "(यूहन्ना 10:14)। किसी व्यक्ति का ज्ञान प्राप्त करना किसी व्यक्ति की वास्तविक आवश्यकताओं को जानने का पहला चरण है। यीशु अपनी भेड़ों को जानता है।

2) एक चरवाहा प्रदान करता है

यहोवा मेरा चरवाहा है; मुझे कुछ घटी न होगी। वह मुझे हरी हरी चराइयों में बैठाता है; वह मुझे सुखदाई जल के झरने के पास ले चलता है; (भजन 23: 1-2)।

सर्कल के ऊपर कविता में, जो हमारा चरवाहा है। दो चीजों को रेखांकित करें जो चरवाहा भेड़ को करता है?

भेड़ पूरी तरह से अपने चरवाहे पर भरोसा करती हैं कि उन्हें क्या चाहिए। एक अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए चारागाह तैयार करता है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उसमें कोई हानिकारक चीजें न हों। एक भेड़ का बच्चा जब तक पूरी तरह से संतुष्ट और सुरक्षित महसूस नहीं करेगा, तब तक वह लेट नहीं जाएगा।

यीशु खुद को गुड शेफर्ड कहता है (यूहन्ना 10:11)। आपके चरवाहे के रूप में, वह वादा करता है कि आपको जरूरत नहीं पड़ेगी। वह सब कुछ प्रदान करेगा (मत्ती 6: 25-26)। हालांकि वह हमारी सभी इच्छाओं को पूरा करने का वादा नहीं करता है। यदि हम प्रदान करने के लिए पूरी

तरह से यीशु पर भरोसा करते हैं, तो हम अपनी कठिन परिस्थितियों के बारे में चिंता नहीं करते।

एक चरवाहा रक्षा करता है

चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं, तौभी हानि से न डरूंगा, क्योंकि तू मेरे साथ रहता है; तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है॥ (भजन 23: 4)।

कुछ आशंकाओं के नाम बताइए। अपने उत्तरों के साथ नीचे के रिक्त स्थान भरें।

"भले ही _____, मै किसी शैतन से नहीं डरूँगा *क्योंकि तू मेरे साथ रहता है;* ।"

"भले ही _____,मै किसी शैतन से नहीं डरूँगा *क्योंकि तू मेरे साथ रहता है;*।"

"भले ही _____,मै किसी शैतन से नहीं डरूँगा *क्योंकि तू मेरे साथ रहता है;*।"

यीशु हमेशा अपनी भेड़ों की रक्षा करने के लिए वहाँ रहता है। जैसे एक अच्छा चरवाहा भेड़ियों और अन्य शिकारियों से उनकी रक्षा करने के लिए लड़ेगा, वैसे ही वह हम पर नजर रखेगा। जब हम जीवन, एक नौकरी, हमारे स्वास्थ्य या अन्य जरूरतों के बारे में चिंता करते हैं, तो हम दिखाते हैं कि हम परमेश्वर के बजाय अपनी परिस्थितियों में अपना विश्वास रख रहे हैं।

यहोवा मेरा चरवाहा है

आवेदन

हमें इस बात पर ध्यान देने की आवश्यकता है कि परमेश्वर ने हमारे लिए कैसे मुहैया करता है। दो या तीन तरीके साझा करें, अंतिम सप्ताह में प्रभु ने आपका विशेष ध्यान रखा। एक प्रार्थना करें और उसे अपने मेमने के रूप में देखभाल करने के लिए धन्यवाद।

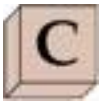

परमेश्वर का प्यार बढ़ाओ

बिना शर्त दूसरों से प्यार करना

जिस तरह मसीह हमारे चरवाहे ने हमारे लिए अपना जीवन लगा दिया, हमें अपने जीवन में उन परमेश्वर की आवश्यकताओं की देखभाल के लिए जो भी आवश्यक है, वह करना चाहिए। यह एक रिश्तेदार, दोस्त, भाई, सहकर्मी, अजनबी या पड़ोसी के लिए सच है।

1) परमेश्वर का आदेश हमें दूसरों से प्यार करने के लिए

दूसरों को प्यार करना परमेश्वर की ओर से एक आज्ञा है। परमेश्वर के बच्चों के रूप में, हम दूसरों से प्यार करने के लिए सक्षम हैं क्योंकि परमेश्वर का प्यार हमारे लिए भरता है
दिल।

> *और आशा से लज्ज़ा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।* (रोमियों 5: 5)।
>
>
>
> प्यारे दोस्तों, हम एक दूसरे से प्यार करते हैं, क्योंकि प्यार *परमेश्वर* से आता है (1 यूहन्ना 4: 7)।
>
> ध्यान दें कि कैसे परमेश्वर हमें दूसरों से प्रेम करने की आज्ञा देता है क्योंकि हम स्वयं को प्रेम करते हैं। " *क्योंकि सारी व्यवस्था इस एक ही बात में पूरी हो जाती है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।* '(गलातियों 5:14)।

प्रेम आत्म-केंद्रित जीवन के विपरीत है। हमें खुद से ऊपर दूसरों की जरूरतों पर विचार करने और उन जरूरतों के प्रति चौकस रहने के लिए खुद को पीछे करने की जरूरत है।

2) अन्य भेड़ की तलाश

*और मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं; मुझे उन का भी लाना अवश्य है, वे मेरा शब्द सुनेंगी; तब एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा होगा।"(*यूहन्ना 10:16)। जीजस यहां ज्यादातर गैर-यहूदियों से बात कर रहे थे।

यीशु उन भेड़ों को भेड़शाला में कैसे लाता है? ऐसा करने वाले किसी व्यक्ति के एक या दो उदाहरण दें।

3) सच्चाई और कार्रवाई में दूसरों से प्यार करने की आवश्यकता

यदि किसी के पास भौतिक अधिकार है और वह अपने भाई को आवश्यकता में देखता है, लेकिन उस पर कोई दया नहीं करता है, तो परमेश्वर का प्रेम कैसे हो सकता है?

प्रिय बच्चों, हमें शब्दों या जीभ से नहीं बल्कि कार्यों और सच्चाई से प्यार करना चाहिए। *"(*यूहन्ना 10:16)।

हमारे लिए किसी से यह कहना बहुत आसान है कि हम उससे प्यार करते हैं और उसकी परवाह करते हैं, लेकिन कितनी बार हम वास्तव में उनके लिए अपने प्यार को कार्रवाई में डालते हैं?? यीशु ने हमें अनन्त मृत्यु से बचाने के लिए क्रूस पर मर कर हमारे प्रति अपने प्रेम का प्रदर्शन किया। आज हम दूसरों से कैसे प्यार कर सकते हैं? हम उनके साथ समय बिता सकते हैं, प्रार्थना कर सकते हैं और ज़रूरत पड़ने पर उनकी मदद कर सकते हैं।

परमेश्वर के बच्चों के रूप में, हमें कार्रवाई और सच्चाई में दूसरों से प्यार करना चाहिए, ताकि परमेश्वर को हमारी गवाही के माध्यम से महिमा मंडित किया जा सके।

आवेदन

1) किसी भी 'भेड़' को पहचानें जो आप परमेश्वर के प्यार को दिखाने के लिए जिम्मेदार हैं। इसमें बच्चे, विधवा, पति या कोई दोस्त शामिल हो सकते हैं।

2) क्या आप दूसरों को आत्मिक देखभाल प्रदान करने के लिए अपनी जिम्मेदारी समझते हैं? निश्चित रूप से एक पास्टर को परमेश्वर के लोग होना चाहिए, लेकिन परमेश्वर ने भी अपने सभी शिष्यों को जिम्मेदारी दी है कि वे दूसरों के लिए आत्मिक देखभाल करें (मत्ती 28:18)। उन एक या दो तरीकों के नाम दें जिन्हें आप आत्मिक रूप से दूसरों की देखभाल करते हैं

सारांश

a) परमेश्वर को बेहतर तरीके से जानना और उसकी सेवा करना।

b) आप के लिए परमेश्वर की देखभाल में अधिक भरोसा करें।

c) दूसरों से प्यार करो क्योंकि परमेश्वर तुमसे प्यार करता है।

होम प्रोजेक्ट लें

- **स्मृति छंद: यूहन्ना 10: 14-15**

अच्छा चरवाहा मैं हूं; जिस तरह पिता मुझे जानता है, और मैं पिता को जानता हूं।इसी तरह मैं अपनी भेड़ों को जानता हूं, और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं, और मैं भेड़ों के लिये अपना प्राण देता हूं।

परमेश्वर ध्यान का विकास करना

परमेश्वर में गहरा विश्वास विकसित करना सीखें कि वह आपकी देखभाल कैसे करता है। एक व्यक्ति ने हाल ही में मेरे साथ साझा किया कि दूसरे दिन उसकी पत्नी को कैसा महसूस हो रहा था। उसने प्रार्थना में परमेश्वर की इस आवश्यकता को लिया। प्रभु ने एक शाम की बैठक को रद्द कर दिया, जिससे वह घर पर रह सके और अपनी पत्नी की मदद कर सके। परमेश्वर इस तरह की बहुत सी विशेष चीजें करते हैं। दुर्भाग्य से, हम प्रार्थना नहीं करते हैं और फलस्वरूप यह नहीं देखते हैं कि परमेश्वर ऐसी स्थितियों से कैसे निपटते हैं।

जो जरूरत आप जानते हैं एक पत्रिका में लिखें और प्रार्थना करें (सुनिश्चित करें कि आप दूसरों की आवश्यकता को शामिल करते हैं)। निरीक्षण करें कि परमेश्वर प्रत्येक मामले की परवाह कैसे करते हैं। तिथि के साथ अनुरोध के आगे प्रार्थना का उत्तर लिखें। चौकस रहें: कुछ उत्तर अप्रत्याशित तरीके और समय में आते हैं।

तारीख की जरूरत	तारीख का जवाब
*	
*	

इस सप्ताह कम से कम एक दोस्त और एक रिश्तेदार को बुलाओ। देखें कि वे हाल ही में कैसे हैं और उनके लिए या उनके साथ प्रार्थना करना शुरू करते हैं। साथ ही उनके साथ समय बिताने की योजना बनाएं और जब उन्हें मदद की जरूरत हो तो उनकी मदद करें।

* दोस्त

* परिवार

क्रूस प्रशिक्षण

संबंधपरक शिष्यत्व

#3 शिक्षक ⟷ शिष्य

प्यार में बढ़ रहा है

परमेश्वर और दूसरों के लिए!

शिक्षक और शिष्य

मसीह की तरह सीखना

यीशु ने हमें न केवल अपने शिक्षण के साथ, बल्कि दृढ़ संकल्प के साथ अपने पिता के सीखने के लिए प्रोत्साहित किया। यदि हम दोनों के बीच संबंध देख सकते हैं, तो हम स्वयं को परिवर्तन के मार्ग पर भी स्थापित कर सकते हैं। हम स्वर्ग की सुनहरी सच्चाइयों के ज़रिए अपने दिलों से दुनिया की धूल झाड़ सकते हैं। यह सोचना कितना कीमती है कि हम इन उदात्त सच्चाइयों को ले सकते हैं और उन्हें दूसरों को दे सकते हैं!

सही तरीका सीखना

बहुत से लोग बहुत पैसा देते हैं और सर्वश्रेष्ठ स्कूलों में भाग लेने के लिए बहुत बड़ा त्याग करते हैं ताकि वे सर्वोत्तम शिक्षा प्राप्त कर सकें, लेकिन वास्तव में, परमेश्वर से बेहतर कोई शिक्षक नहीं है। "*देख, ईश्वर अपने सामर्थ्य से बड़े बड़े काम करता है, उसके समान शिक्षक कौन है?* "(अय्यूब 36:22)

आखिरकार, हमारा प्रभु मानव जाति की समस्याओं के दायरे और समाधान को पूरी तरह से समझता है। वह सभी ज्ञान का स्रोत है। उसे न केवल भौतिक दुनिया का ज्ञान है, बल्कि आध्यात्मिक दुनिया का भी ज्ञान है। वह समझता है कि कैसे सब कुछ परस्पर जुड़ा हुआ है क्योंकि उसने उन्हें बनाया और बनाए रखा है। अंत में परमेश्वर सभी सत्य को प्रकट करता है।

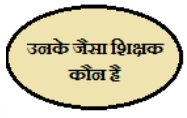

यीशु कैसे सीखते हैं, इसके लिए हमारे लिए आदर्श निर्धारित करता है। यह वही है जिसने उसे सबसे महान शिक्षक बनाया है। "*और लोग उसके उपदेश से चकित हुए; क्योंकि वह उन्हें शास्त्रियों की नाईं नहीं, परन्तु अधिकारी की नाईं उपदेश देता था।*"(मरकुस 1:22)। एक महान शिक्षक को सबसे पहले एक सीखने वाला होना चाहिए। एक महान शिक्षार्थी को अपने जीवन को आकार देने के लिए परमेश्वर की सच्चाई को अनुमति देने के लिए तैयार होना चाहिए।

परमेश्वर की इच्छा है कि हम उसकी सच्चाई जानें। यही कारण है कि उन्होंने अपने सिद्धांतों को प्रकृति के साथ-साथ अपने शब्द में भी प्रकट किया है। इस हद तक कि हम उनके शिक्षण को अपने जीवन में लागू करते हैं, हम उनकी बुद्धि से सहायता प्राप्त करेंगे और बुराई और उसके परिणामों से बचेंगे। जैसा कि हम उसके वचन के आकार के हैं, हम यीशु की तरह बन जाते हैं, जिसने परमेश्वर के सत्य को अपने जीवन को आकार देने की अनुमति दी और शब्द और उदाहरण दोनों के द्वारा जीवन के शब्द को दूसरों तक पहुँचाया।

मसीह की तरह सुनना

मसीह ने पिता के साथ मिलना जारी रखा

सबसे अच्छा शिक्षक सबसे अच्छा सीखने वाला होता है। यह यीशु के जीवन में निश्चित रूप से सच था। क्योंकि यीशु ने मानव रूप लेते समय खुद को दीन बना लिया था, जब वह पृथ्वी पर था तब उसकी ईश्वरीय शक्तियाँ छिपी हुई थीं। इसलिए, वह हमारे लिए सीखने के लिए एक उत्कृष्ट नमूना है। निम्नलिखित पद में उनकी सीखने की भावना पर ध्यान दें।

प्रभु यहोवा ने मुझे सीखने वालों की जीभ दी है कि मैं थके हुए को अपने वचन के द्वारा संभालना जानूं। भोर को वह नित मुझे जगाता और मेरा कान खोलता है कि मैं शिष्य के समान सुनूं। (यशायाह 50.4)

1) शिष्य की जीभ

'शिष्य' का आधुनिक शब्द सीखने वाला है। यीशु सीखने के लिए खुद पर लागू करने से एक महान शिक्षक बन गए। यीशु सही सवाल पूछने में माहिर थे । बारह वर्षीय यीशु ने अपनी बुद्धि से कानून के शिक्षकों को भ्रमित किया।

2) शिष्य का उद्देश्य

यीशु का सीखने का उद्देश्य जरूरतमंदों की मदद करना था। बहुत से लोग गलत कारणों से सीखते हैं: प्रतिष्ठा, पैसा, स्थिति या मज़ा। सीखने के लिए मसीह का कारण दूसरों की सेवा करना था। उसने अच्छी तरह से सीखा ताकि वह दूसरों की अच्छी सेवा कर सके।

3) शिष्य का अनुशासन

वफादार शिष्य बहाने नहीं बनाते। प्रत्येक दिन वह प्रभु के साथ समय बिताता है। प्रत्येक सुबह वह उत्सुकता से चाहता है कि उसका पिता परमेश्वर उसे क्या सिखाएगा। प्रभु से सीखने की कोई छुट्टी नहीं है।

4) शिष्य का कान

यीशु ने अनुमान लगाया कि परमेश्वर के शब्द कैसे दिन रात उसकी मदद करेंगे। उसने वह सब कुछ सीखा जो उसे पिता से चाहिए था। एक कान जिसे दोहराए गए सीखने के माध्यम से प्रशिक्षित किया गया है, वह आसानी से समझ सकता है कि क्या संचार किया जा रहा है।

मसीह के प्रत्येक शिष्य को अपने गुरु की तरह होने के लक्ष्य के साथ यहां शुरू करना चाहिए। कोई सवाल नहीं है कि हमारे गुरु हमसे सच्चाई जानना चाहते हैं, लेकिन क्या हमें सच्चाई से पूरी तरह से प्रभावित होने और बदलने की एक भावुक इच्छा है

यीशु के माता-पिता ने उन्हें मंदिर में, शिक्षकों के बीच में, दोनों को सुनते हुए, और उनसे प्रश्न पूछते हुए पाया। और उसे सुनने वाले सभी उसकी समझ और उसके उत्तरों पर चकित थे। (ल्यूक 2: 46-47)

यीशु सच्चाई जानना चाहता था। वह इसे सीखना चाहता था ताकि वह दूसरों की जरूरतों को पूरा करने के अपने पिता के काम को अंजाम दे सके। उसने अपनी गतिविधियों को व्यवस्थित किया ताकि वह अपने पिता से सुन सके। उसे वह सब सुनने की उम्मीद थी जो उसे जानने की जरूरत थी।

• अपने पिता से सीखें। उससे सुनने के लिए खुद को प्रशिक्षित करें। हर सुबह उसके साथ मिलने के लिए खुद को प्रतिबद्ध करें। एक संरक्षित शांत समय में, अनुमान लगाएं कि वह दिन भर आपकी आवश्यकताओं के लिए प्रदान करेगा।

• उनके प्रावधान की आशा! प्रार्थना में वह प्रतिबद्धता बनाओ। “प्रिय पिता, मेरी देखभाल करने के लिए बहुत बहुत धन्यवाद। मुझे इतनी सख्त जरूरत है कि तुम मुझे सिखाओ। मैं आपके लिए हर दिन मेरे साथ जल्दी से मिलने के लिए तरसता हूँ, ताकि आप मुझे अपने जीवन में ला सको जैसे कि आपने यीशु के साथ किया था। मसीह के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूं, आमीन। "

मसीह के बाद चलना

ईसाई मसीह के शिष्य हैं

1) शिष्य का अर्थ

एक शिष्य का शाब्दिक अर्थ है learn सीखने वाला। 'ईसाई के रूप में हम यीशु मसीह से सीखते हैं। जिन्हें हमने अपने जीवन पर सबसे बड़ा प्रभाव छोड़ने से सीखा है। निम्नलिखित कविता में तीन प्रकार के शिष्यों पर ध्यान दें। उन्हें रेखांकित करे।

यूहन्ना के चेले, और फरीसी उपवास करते थे; सो उन्होंने आकर उस से यह कहा; कि यूहन्ना के चेले और फरीसियों के चेले क्यों उपवास रखते हैं? परन्तु तेरे चेले उपवास नहीं रखते।" (मरकुस 2:18)

परिभाषा के अनुसार एक ईसाई को केवल मसीह से सीखना चाहिए। प्रभु ने हमें और अधिक सीखने में मदद करने के लिए पास्टर और शिक्षक नियुक्त किए हैं। लेकिन सावधान रहें, हर कोई जो पास्टर या ईसाई शिक्षक होने का दावा नहीं करता है वास्तव में प्रभु से प्यार करता है।

मसीह के पृथ्वी छोड़ने के तुरंत बाद, शिष्य शब्द आम उपयोग से फीका हो गया। शब्द 'क्रिश्चियन' और 'भाई' जैसे अन्य शब्दों ने इसकी जगह ले ली। अधिनियम 11:26 कहता है, "शिष्यों को पहले एंटिओक में ईसाई कहा जाता था।" ईसाई शब्द का अर्थ मसीह यीशु का अनुयायी या अनुयायी है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'छोटा मसीह।'

2) मसीह के चेले की सफलता

यीशु ने कहा, "*मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं;*" (यूहन्ना 14: 6)। आपके ईसाई जीवन की वृद्धि इस बात पर निर्भर करती है कि आप अपने आप को पुराने विचारों को कैसे साफ़ करते हैं जो कि मसीह के शिक्षण के लिए काउंटर चलाते हैं और जो कहते हैं उसे अपनाते हैं। क्या हमें वह सब कुछ सुनना है जो यीशु कहता है? यदि वह वास्तव में ईश्वर से है (और वह है), तो उसके आदेशों के अतिरिक्त कुछ भी करना मूर्खता होगी। निम्नलिखित छंदों में देखें कि यीशु कैसे हमारी पूर्ण निष्ठा की माँग करता है।

> *इस पर उसके चेलों में से बहुतेरे उल्टे फिर गए और उसके बाद उसके साथ न चले। तब यीशु ने उन बारहों से कहा, क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?शमौन पतरस ने उस को उत्तर दिया, कि हे प्रभु हम किस के पास जाएं? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं।और हम ने विश्वास किया, और जान गए हैं, कि परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है।*(यूहन्ना 6:66-69)

आवेदन

अन्य उपदेशों और प्रभावशाली शिक्षकों को अस्वीकार करने और मसीह के प्रति आपकी निष्ठा की पुष्टि करने के द्वारा यीशु मसीह के प्रति आपकी निष्ठा की पुष्टि करें। अपने पुराने प्रशंसित शिक्षकों, शिक्षाओं, धर्मों, दर्शन, पुस्तकों, गीतों, सितारों, ऐतिहासिक या वर्तमान महत्वपूर्ण आंकड़ों में से कम से कम एक का उल्लेख करें।

अपने जीवन को प्रभावित करने वाली दो पुरानी चीजों को लिखें। एक प्रतीकात्मक इशारे के रूप में उन्हें पार करें जिसे आप अब अनुमति नहीं देंगे:

(1) _____

(2) _____

मैं मसीह यीशु और उसके प्रेम और धार्मिकता के सिद्धांतों को सभी से ऊपर चुनता हूं।

हस्ताक्षर और दिनांक

मसीह के चेले बनाना

ईसाई जीवित पत्थर हैं

मसीह के शिष्यों ने मसीह के अन्य शिष्य बनाए

1) मसीह की पसंद

मसीह ने बारह शिष्यों को चुना जो बाद में प्रेरित बन गए। बाद में उन्होंने सत्तर शिष्यों को बाहर भेजा। हालाँकि, हमारे लिए सबसे अधिक प्रासंगिक है, वह है जो उसने अपने सभी चेलों को प्रत्येक सुसमाचार में दिया था: दूसरों के लिए उनके सुसमाचार (अच्छी खबर) की घोषणा की। शिष्यत्व वह प्रक्रिया है जो परमेश्वर के लोग मसीह के उपदेशों को अधिक से अधिक सीखते हैं और उनकी समानता के अनुरूप हो जाते हैं। हमारे लिए मसीह का लक्ष्य पढ़ें।

एक शिष्य (शिष्य) अपने शिक्षक से ऊपर नहीं है; लेकिन हर कोई, वह पूरी तरह से प्रशिक्षित होने के बाद, अपने शिक्षक की तरह होगा। (लूका 6:40)

2) हमारे लिए मसीह के लक्ष्य

हमारे लिए मसीह के लक्ष्य स्पष्ट हैं। हम अपने शिक्षक - मसीह से अधिक नहीं होंगे, लेकिन हमें प्रशिक्षित होने की आवश्यकता होगी। हमें चरित्र में और साथ ही मिशन में हमारे शिक्षक मसीह की तरह अधिक होने की आवश्यकता है। हम अभी तक वहां नहीं हैं, लेकिन हम बढ़ रहे हैं। हमें लोगों को मसीह तक ले जाने के लिए सदैव विनम्रता की आवश्यकता होगी। नीचे दी गई सूचना कि कैसे प्रेरित पौलुस ने तीमुथियुस को निर्देश दिया था। हमें इस पैटर्न का पालन करना चाहिए।

और जिन बातों (सुसमाचार) को आपने कई गवाहों की उपस्थिति में मुझसे सुना है, ये विश्वासयोग्य पुरुषों को सौंपते हैं, जो दूसरों को भी सिखाने में सक्षम होंगे। (२ तीमुथियुस २: २)

- चीजें 'सुसमाचार या यीशु की शिक्षा की मुख्य सामग्री को संदर्भित करती हैं।
- इस आयत में पौलुस ने बताया कि कैसे उसने दूसरों को तीमुथियुस की तरह सिखाया है।
- तीमुथियुस को वफादार पुरुषों को प्रशिक्षित करना है। '
- ये वफादार आदमी दूसरों को सिखाते हैं।

इस तरह से सुसमाचार हमारे जीवन को छू गया है। यह उसी तरह है जैसे परमेश्वर का सत्य सभी राष्ट्रों के लिए जाएगा। हम शिष्य बनाते हैं।
माता-पिता को अपने बच्चों को पढ़ाना है। अधिक परिपक्व ईसाइयों को छोटे को पढ़ाने की उम्मीद है।

और यीशु ने आकर उनसे कहा, "*यीशु ने उन के पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रआत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओऔर देखो :, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं॥* "(मत्ती २-20: १ I-२०)।

प्रतिबिंब

शिष्यत्व कई परिस्थिति में होता है। कल रात मेरे तीन साल के बच्चे ने हमारी शाम की पारिवारिक उपासना में एक साथ दस गाने गाकर हमारा उत्साह बढ़ाया। हमने व्यवस्था विवरण के एक मार्ग को पढ़ा और चर्चा की और फिर प्रार्थना की। सबसे छोटे लोगों ने भारत में अनाथों के लिए प्रार्थना करने और मिशनरी परिवार के लिए, परिवार की अन्य जरूरतों के अलावा प्रार्थना की। उन्होंने पहले से ही क्या सीखा है?

अनुप्रयोग

- यदि आप मसीह के सच्चे विश्वासी हैं, तो सुनिश्चित करें कि आप बपतिस्मा ले चुके हैं।
- अपने शिष्य प्रशिक्षक या संरक्षक से पूछें कि आप दूसरे शिष्य की मदद करें।

सारांश

a) जब मैं जानबूझकर ईश्वर की तरह सुनता हूँ जैसा कि मसीह ने किया है, ईश्वर मुझसे बात करता है और मुझे दूसरों की देखभाल करने में मदद करता है।

b) मैं ईश्वर के सत्य का पालन करने के साथ मुझ पर दुनिया के प्रभाव को प्रतिस्थापित करके मसीह का पालन करता हूं।

c) जैसा कि लोग मुझे जानते हैं, मैं दूसरों को प्रशिक्षित करने के लिए हूं।

होम प्रोजेक्ट लें

स्मृति खंड यशायाह 50:4

> *प्रभु यहोवा ने मुझे सीखने वालों की जीभ दी है कि मैं थके हुए को अपने वचन के द्वारा संभालना जानूं। भोर को वह नित मुझे जगाता और मेरा कान खोलता है कि मैं शिष्य के समान सुनूं।* (यशायाह ५०: ४)

• केवल मसीह पर ध्यान केंद्रित करना

हममें से कुछ लोकप्रिय सिद्धांतों, संगीत और दुनिया की राय से बहुत प्रभावित हुए हैं। हम जिस स्पष्टता की पहचान करते हैं, जिसने हमारे जीवन को प्रभावित किया है, यह देखना उतना ही आसान है कि यीशु उस शिक्षा के बारे में क्या कहता है और यदि आवश्यक हो तो उसे अस्वीकार कर देता है। अपनी पत्रिका में, उन लोगों और विचारों को लिखें, जिन्होंने आपको बहुत आकार दिया है। अपने गुरु, बुजुर्ग या पास्टर से पूछें कि यीशु ऐसे लोगों, आंदोलनों या विचारों के बारे में क्या कह सकते हैं। जीजस से सीखो।

• सुबह से सुबह

प्रभु के साथ हमारी निकटता उस आवृत्ति पर निर्भर करती है जो हम पवित्र आत्मा के माध्यम से मसीह में परमेश्वर के साथ निकटता से मिलते हैं। स्वस्थ विकास के लिए उसके साथ दैनिक सुबह का समय स्थापित करना आवश्यक है। कम से कम 15 मिनट प्रभु के साथ उनके वचन पढ़ने, प्रार्थना करने और सुनने में खर्च करने की योजना बनाएं।

क्या उसने कुछ कहा? प्रत्येक दिन एक साथ अपने समय से एक विशेष अंतर्दृष्टि प्राप्त किए बिना उसकी उपस्थिति को छोड़ने की कोशिश करें। प्रासंगिक विचारों को नीचे लिखें और इसे पूरे दिन याद रखें। उस वस्तु के बारे में प्रार्थना करें।

क्रूस प्रशिक्षण

संबंधपरक शिष्यत्व

#4 राजा ⟷ राज्य

प्यार में बढ़ रहा है

परमेश्वर और दूसरों के लिए!

राजा और साम्राज्य

परमेश्वर की महिमा का विस्तार

हमें परमेश्वर के राज्य का वफादार सदस्य कहा जाता है जहाँ मसीह राजा है, और हम उसके लोग हैं। हम उनके प्रेम और उनके आदेशों का पालन करते हुए उनका राज्य स्थापित करते हैं। हमारी अपनी प्राथमिकताएँ हमारे गौरवशाली राजा यीशु की इच्छाओं के लिए हैं, जिनकी हम ख़ुशी से पूजा करते हैं।

हमारा नया घर

क्या आपने कभी ऐसी जगह की कामना की है जहाँ पर दया और प्रेम की जगह घृणा और स्वार्थ को लाया गया हो? यह राज्य है परमेश्वर का। मनुष्य द्वारा संचालित सरकारें और समाज हमें हमेशा विफल बनाएंगे, लेकिन हम जो चाहते हैं वह परमेश्वर का राज्य है।

आप पूछ सकते हैं, "मसीह का राज्य कहां है?" हम आमतौर पर एक राज्य को एक सम्राट के शासन की सीमा के रूप में सोचते हैं - जहां भी वह शक्ति रखता है।

उदाहरण के लिए सम्राट चिन ने अपने शासन द्वारा चीन का एकीकरण किया। मसीह का राज्य उन लोगों के माध्यम से दुनिया भर में फैली हुई है जो उन्हें मानते हैं। उसके बाद, उसका राज्य दुनिया के देशों से अलग ढंग से संचालित होता है।

यीशु ने उत्तर दिया, कि मेरा राज्य इस जगत का नहीं, यदि मेरा राज्य इस जगत का होता, तो मेरे सेवक लड़ते, कि मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाता परन्तुराज्य यहां का नहीं। अब मेरा "
(यहुन्ना 18:36)

उपरोक्त कविता से दो वाक्यों को पूरा करें:

"मेरा राज्य _____ है।"

"मेरा राज्य _____ है।"

परमेश्वर के लोग उसका राज्य हैं। उसके लोग वही हैं जिनके माध्यम से मसीह अपने प्रेम की आज्ञा के द्वारा शासन करता है। "उसने हमें एक राज्य बनाने के लिए बनाया है।" (प्रकाशितवाक्य 1: 6)

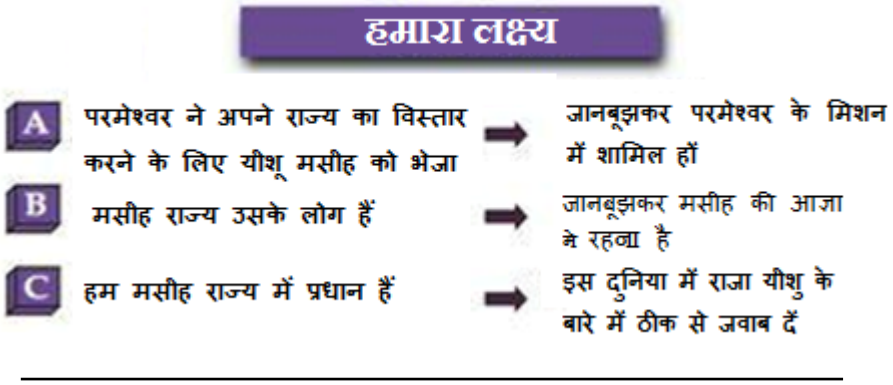

मसीह के मिशन में भाग लें

परमेश्वर ने मसीह को अपना राज्य बढ़ाने के लिए भेजा

परमेश्वर अपने राज्य की सीमाओं का विस्तार करना चाहता था। उसने अपने एकमात्र पुत्र यीशु मसीह को पृथ्वी पर एक मिशन पर भेजकर ऐसा किया। पिता ने यीशु के ज़रिए इस मिशन को कैसे पूरा किया? यीशु ने क्रूस पर मरे हुए आदमी को अपने राज्य में प्रवेश करने के लिए सक्षम किया।

1) परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना

हम अच्छे होने या दूसरों की मदद करने के अपने प्रयासों के माध्यम से परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते। इसके बजाय हमें अपने विद्रोही दिलों और कार्यों को देखने की जरूरत है। यह तब है जब हम यीशु के माध्यम से परमेश्वर से क्षमा माँगते हैं।

इस सुसमाचार संदेश को दुनिया भर में घोषित किया जाना चाहिए। हम यह देखते हैं कि यीशु और उनके शिष्यों ने क्या किया।

इनको उन्होंने (यीशु ने) अपने बाद, अपने को जीवित भी प्रस्तुत किया
पीड़ित, कई पुख्ता सबूतों के द्वारा, चालीस दिनों की अवधि में उनके सामने आना, और परमेश्वर के राज्य के विषय में बातें करना। (प्रेरितों 1: 3)

आप सभी विश्वासियों के लिए एक उदाहरण बन गए हैं ... क्योंकि प्रभु के शब्द ने आप से आवाज़ उठाई है ... ताकि हमें कुछ कहने की आवश्यकता न हो। (1 थिस्सलुनीकियों 1: 7-8)
'परमेश्वर के राज्य का चक्कर लगाएं। 'राजा और ईश्वर के राज्य के बारे में दूसरों को बताकर, लोग जान सकते हैं कि उनके लोगों का हिस्सा कैसे होना चाहिए।

2) मसीह के आदेशों को पूरा करना

परमेश्वर के राज्य की शिक्षा सीखने से कहीं आगे निकल जाता है कि उसके राज्य में कैसे आना है। पवित्रशास्त्र (बाइबिल) भी परमेश्वर की व्यापक योजना की व्याख्या करता है कि हम इसमें कैसे फिट हो सकते हैं।

हालाँकि मसीह इस मिशन को पूरा करने में बहुत अच्छा काम कर सकता था, लेकिन पिता ने अपने बच्चों को शामिल करके इसे पूरा करने का फैसला किया। प्रत्येक मसीही पूरी दुनिया में अपने प्रेम के राज्य का विस्तार करने के लिए परमेश्वर की योजना का सक्रिय समर्थन करने के लिए जिम्मेदार है। यह हमारे पड़ोस, शहर, देश और अन्य समाजों के लिए सही है।

ध्यान दीजिए कि यीशु हमें मत्ती 6:10 में प्रार्थना करने के लिए कैसे कहता है, "तेरा राज्य आए; तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।" हमें उसके राज्य के विस्तार के लिए सक्रिय कदम उठाने चाहिए। सुसमाचार दूसरों को बताना एक महत्वपूर्ण तरीका है।

आवेदन

1) इस सप्ताह प्रत्येक दिन मत्ती 6:10 प्रार्थना करें। बाद में रोकें। प्रभु से पूछें कि क्या कोई रास्ता है जो आप इसे उसी दिन कर सकते हैं। यह देखने के लिए कि क्या प्रभु आपको कोई अवसर प्रदान करता है।

परमेश्वर से किसी को लाने के लिए कहें जिसे आप सुसमाचार के साथ साझा कर सकते हैं। उन लोगों के प्रति सावधान रहें, जिन्हें प्रभु आपके मार्ग में लाता है। अवसर निकालो!

मसीह के कमांड ले

मसीह का राज्य उसके लोग हैं

दिल की वफादारी

मसीह हमारा शासक हमारी पूर्ण निष्ठा की माँग करता है। उनके राज्य में भूमि या भौतिक चीजें नहीं हैं, बल्कि उनके लोगों के दिल हैं। जब हम उसके राज्य के नागरिक बन जाते हैं, तो हमने दुश्मन के अंधेरे के क्षेत्र को छोड़ दिया है। अब हम अपने प्रेम के राजा से संबंधित हैं, जिसे हम सेवा करना चाहते हैं। 'नीचे' शब्द को सर्कल करें।

> उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया। (कुलुस्सियों 1:13)

1) जीवन की वफादारी

ध्यान दें कि ईसाई के रूप में अब हम मसीह के राज्य के मुख्य सदस्य हैं। हम उनके कानूनों को पूरा करने के लिए जिम्मेदार हैं। प्रेरित कहता है, "*कि तुम्हारा चाल चलन परमेश्वर के योग्य हो, जो तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है।*" (1 थिस्सलुनीकियों 2:12)।

एक ईसाई को कैसे चलना चाहिए? _____

_____

कुछ लोग अपने आप को दोष देते हैं। वे कहते हैं कि वे परमेश्वर के अंग हैं

राज्य लेकिन वे अभी भी अंधेरे की शक्तियों द्वारा शासित हैं। कोई अपने कार्यों से अपने दिलों का पालन कर सकता है।

इसके लिए आप निश्चितता के साथ जानते हैं कि कोई भी अनैतिक या अशुद्ध व्यक्ति या लोभी आदमी, जो एक मूर्तिपूजक है, को मसीह और परमेश्वर के राज्य में विरासत नहीं मिली है। (इफिसियों 5:5)

2) वफादारी हमेशा के लिए

हमें प्रभु का पालन करने के लिए सावधान रहने की आवश्यकता है। इस तरह हम साबित करेंगे कि हम सचमुच उसके राज्य में प्रवेश कर चुके हैं। जैसा कि हम ईमानदारी से उसका पालन करते हैं, वह हमें सुरक्षित रूप से अपने स्वर्गीय राज्य में लाएगा।

यहोवा मुझे हर बुरे काम से छुड़ाएगा, और मुझे उसके स्वर्गीय राज्य में सुरक्षित लाएगा; उसी की जय हो। तथास्तु। (2 तीमुथियुस 4:1 4:)

उसके राज्य की पूर्णता तब तक प्रकट नहीं होगी जब तक कि मसीह उसके दूसरे आगमन पर उसकी पूर्ण महिमा में प्रकट नहीं हो जाता। तब उसके सभी लोग एक शानदार पुनरुत्थान प्राप्त करेंगे और हमेशा के लिए हमारे प्रभु के साथ रहेंगे। उनकी बागडोर और उनकी जांघ पर उनका एक नाम लिखा है,

"राजाओं का राजा, और यहोवा का प्रभु" (प्रकाशितवाक्य 19:16)।

आवेदन
एक प्रार्थना कहो जो अपने आप को अपने जीवन भर का पालन करने के लिए प्रतिबद्ध है। आप चाहें तो नीचे दी गई प्रार्थना का उपयोग कर सकते हैं।

“प्रिय पिता, मुझे बुराई से मुक्ति दिलाने और मुझे आपके अनंन्त राज्य में लाने के लिए धन्यवाद। मैं और के लिये नहीं, बल्कि आप के लिए जीना चाहता हूं। मुझे इस तरह से चलने में मदद करें कि मैं जहां कहीं भी हूं, आपका अद्भुत नाम गौरवशाली हो। मैं अब हमेशा के लिए आपका पालन करने के लिए खुद को प्रतिबद्ध करता हूं। मुझे अपने पास रखें। मेरी रक्षा करो। मैं आपकी महिमा में आपसे मिलने के लिए उत्सुक हूं। मसीह के गौरवशाली नाम में मैं प्रार्थना करता हूँ, आमीन।

राजा यीशु का जवाब
हम मसीह के राज्य में प्रधान हैं

1) हमारा शाही रिश्ता

हमारे राजा के साथ हमारे संबंधों की सबसे अच्छी तस्वीर 1 पतरस 2: 9 से है,

> लेकिन आप एक अराजक दौड़, एक शाही पूर्वजन्म, एक पवित्र राष्ट्र, परमेश्वर की शांति के लिए एक व्यक्ति, कि आप उन महानुभावों की घोषणा कर सकते हैं, जिन्होंने आपको अंधेरे से बाहर उनकी अद्भुत रोशनी में बुलाया है।

रॉयल 'शब्द को सर्किल करें। रॉयल का मतलब राजकीये पंक्ति या उन चीजों से है जो राजा से संबंधित हैं। हम बंदूकों और क्षेत्रीय आक्रमण के माध्यम से उनके राज्य का विस्तार नहीं कर रहे हैं। हम उसके पुजारी हैं और इसलिए परमेश्वर के वचन को प्रार्थना करने, रहने और प्रचार करने के द्वारा अपने राज्य का विस्तार करते हैं। हर बार जब कोई व्यक्ति अपने राज्य में प्रवेश करता है, तो परमेश्वर का राज्य बढ़ता है। जैसे-जैसे हम उसके तरीकों को आगे बढ़ाते हैं, यह बढ़ता जाता है।

2) हमारी रॉयल जिम्मेदारियां

मसीह के राज्य के चरित्र के कारण, हम आम तौर पर पृथ्वी पर राजाओं और राज्यपालों के साथ सद्भाव में रह सकते हैं।

... मैं आग्रह करता हूं कि इस क्रम में प्रार्थनाएं की जाए राजाओं के लिए और जो अधिकार में हैं, हो सकती हैं

> *अब मैं सब से पहिले यह उपदेश देता हूं, कि बिनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद, सब मनुष्यों के लिये किए जाएं।राजाओं और सब ऊंचे पद वालों के निमित्त इसलिये कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएं।*
> (1 तीमुथियुस 2: 1-2)

हमें एक-दूसरे के साथ भी रहना है। यदि हम सभी राजा यीशु की इच्छा पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हमें यह हमारे 'या वह मेरे' के बारे में लड़ने की आवश्यकता नहीं होगी। " *तौभी यदि तुम पवित्र शास्त्र के इस वचन के अनुसार, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख, सचमुच उस राज व्यवस्था को पूरी करते हो, तो अच्छा ही करते हो।* " (याकूब 2: 8)

इसके बजाय हम एक-दूसरे को एक-दूसरे के प्रति वफादार और वफादार होने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। "*और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना ने छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों त्यों और भी अधिक यह किया करो॥* "(इब्रानियों 10:25)।

हमारी सभाओं में, हम अपने राजा में प्रसन्नता व्यक्त करते हैं जिन्होंने हमें अत्याचार से बचाया और हमें उनकी सेवा में लाया। हम एक शुक्रगुज़ार लोग हैं जो लगातार हमारे महान राजा की तारीफ करते हैं।

आप आज्ञा को बिना दाग के रखें *कि तू हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने तक इस आज्ञा को निष्कलंक और निर्दोष रख।जिसे वह ठीक समयों में दिखाएगा, जो परमधन्य और अद्वैत अधिपति और राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु है।और अमरता केवल उसी की है, और वह अगम्य ज्योति में रहता है, और न उसे किसी मनुष्य ने देखा, और न कभी देख सकता हैउस की प्रतिष्ठा और राज्य युगानुयुग रहेगा। आमीन॥ :* (1 तीमुथियुस 6: 14-16)

हम प्रत्येक सप्ताह दूसरों के साथ परमेश्वर की आराधना करते हैं। भजन 100:2 कहता है, " *आनन्द से यहोवा की आराधना करो।जयजयकार के साथ उसके सम्मुख आओ !*"

आवेदन

- दुनिया की सरकार के प्रति आपका दृष्टिकोण क्या है? क्या आप करों का भुगतान करने और उसके कानूनों का पालन करने के नियमों को प्रस्तुत करते हैं?
- यहोवा को तीन तरीके बताइए जिनकी आप वास्तव में उसके सभी अन्य विशेष रूप से चुने हुए लोगों के साथ उसके राज्य का हिस्सा हैं।

सारांश

a) मसीह के मिशन में उत्सुकता से भाग लें।

b) मसीह की आज्ञाओं को जानें और आगे बढ़ाएं।

c) इस दुनिया में राजा जीसस को उचित जवाब दें

होम प्रोजेक्ट लें

- **मेमोरी वर्सेज प्रकाशितवाक्य 17:14**

  ये मेम्ने के खिलाफ युद्ध छेड़ेंगे, और मेम्ने उन पर विजय प्राप्त करेंगे, क्योंकि वह प्रभु के राजा हैं और राजाओं के राजा हैं, और जो उनके साथ हैं वे चुने हुए और वफादार हैं।

- **उनका राज्य में प्रवेश करना**

  हमारी गवाही का वर्णन करना चाहिए कि कैसे प्रभु ने हमें अपने राज्य में बुलाया। लंबी और छोटी रूप में अपनी गवाही लिखें। जब तक आप इसे दूसरों के साथ साझा नहीं कर सकते, तब तक इस पर जाएं। इसे एक व्यक्ति के साथ साझा करें।

- **प्रभु की स्तुति करना**

  इस सप्ताह प्रत्येक दिन अपने राजा के बारे में कम से कम एक प्रशंसा गीत गाएं। उनके महान प्रेम और शक्ति के लिए उनकी प्रशंसा करना सीखें। अपनी नोटबुक में गीत का नाम रिकॉर्ड करें।

- **एक अच्छा चर्च ढूँढना**

  यदि आपको अभी तक एक अच्छा चर्च नहीं मिला है, तो आपको जल्द ही एक खोज करने की आवश्यकता है।

एक अच्छा चर्च:

- अपने लोगों में आज्ञाकारिता को प्रोत्साहित करके प्रभु का सम्मान करें।

- परमेश्वर की प्रशंसा करने के लिए गाती है। ।

- केवल मसीह में मोक्ष विश्वास से प्राप्त करते है। शास्त्र महत्वपूर्ण है।

- परमेश्वर के लोगों को जानने और उनकी सेवा करने के लिए छोटे समूह के अवसर प्रदान करता है।

यह एक आदर्श दुनिया नहीं है और न ही आदर्श चर्च हैं, लेकिन इन मानकों का उपयोग करके आपको एक चर्च खोजने में मदद करें जहां आप अपने महान राजा की सेवा कर सकते हैं।

परियोजनाओं पर प्रगति आत्मिक पत्रिका में दर्ज की जानी चाहिए।

क्रूस प्रशिक्षण

संबंधपरक शिष्यत्व

#5 दूल्हा ⇔ दुल्हन

प्यार में बढ़ रहा है

परमेश्वर और दूसरों के लिए!

दूल्हा और दुल्हन

प्यार और निरंतर सेवा

शादी सबसे प्रेरणादायक प्रतिबद्धता का प्रतीक है जो जीवन में बना सकता है। मसीह हिब्रू शादी की छवि का उपयोग करता है न केवल ईसाई को याद दिलाने के लिए उसे शुद्ध रूप से समर्पित रखने के लिए, बल्कि उसकी वापसी के लिए अपने धैर्य को मजबूत करने के लिए भी। जो कुछ भी उसके प्रति अपने समर्पण से समझौता करेगा, उसे मसीह की दूसरी वापसी पर विचार करना छोड़ देना चाहिए जहां वादे पूरी तरह से महसूस किए जाते हैं।

प्यार की आशा

हम सभी को प्यार की जरूरत है। एक प्यार जो कभी खत्म नहीं होता। यही कारण है कि शादियों का एक ऐसा महत्वपूर्ण और खुशी का अवसर होता है। एक रोमांटिक उम्मीद है कि दो लोगों के बीच एक आदर्श प्यार को सील और जीवन के लिए संरक्षित किया जाएगा। उस समय तक, केवल आशा और अपेक्षा है। शादी उस प्रतिबद्धता को सुरक्षित करती है। सगाई की अंगूठी इस आशा की बात करती है लेकिन शादी की अंगूठी उन उम्मीदों को वास्तविकता में स्थानांतरित कर देती है।।

शादी समारोह का एक हिस्सा तब होता है जब दुल्हन का हाथ दूल्हे के हाथ में रखा जाता है। भविष्य के लिए उसकी आशा श्रेष्ठ करती है नए और अज्ञात का उसका डर। वह अपने पति के भविष्य के प्यार और देखभाल के लिए उस पर भरोसा कर रही है। इसी तरह से मसीह की दुल्हन के रूप में चर्च शादी के दिन के लिए तरस रहा है जब सभी आशाएं और वादे वास्तविक हो जाते हैं। उसे अपने लिए सुरक्षित करने के लिए, मसीह ने दहेज का भुगतान किया। यह उसकी ज़िंदगी का खर्च था, लेकिन उसने खुद को सूली पर चढ़ा दिया ताकि वह हमेशा के लिए उसकी हो सके। अब वह उसके लिए एक जगह तैयार कर रहा है। जीजस कहते हैं,

मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं।और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो। यूहन्ना 14: 2-3)।

दूल्हे के लिए भक्ति

मसीह के लिए समर्पित रहे

पिता ने मसीह पुत्र के लिए एक दुल्हन की व्यवस्था की। मसीह ने आकर बलिदान दिया और उस दुल्हन को उसके लिए अपना जीवन दान कर दिया। चर्च को स्वाभाविक रूप से यीशु मसीह के लिए पूरी तरह से समर्पित कहा जाता है जिसने उसके लिए अपना जीवन दिया।

मसीह के लिए स्नेह

वैवाहिक प्रतिबद्धता दो तरह से है। दूल्हे की इच्छा, दुल्हन और उसकी पत्नी के लिए आजीवन प्रतिबद्धता है। वह भी अपने ध्यान और प्यार से जीता है। दुल्हन अपने पति को यह कहकर जवाब देती है, "मैं अपनी प्रेमिका हूं और मेरी प्यारी मेरी है" (सोलोमन 6: 3 का गीत)।

जिस तरह एक दुल्हन अपने पति को अपने दूल्हे को दी जाती है, उसी तरह एक मसीही ने खुद को मसीही बनने पर खुद को दिया है। परमेश्वर और मसीह के लिए यह प्यार हमारा पहला प्यार कहलाता है। '' इसे किसी भी रोमांस की तरह ही पहना जा सकता है। इफिसुस के चर्च के खिलाफ प्रभु बोले, "तुमने अपना पहला प्यार छोड़ दिया है" (प्रकाशितवाक्य 2: 4)।

हमें मसीह और उसके वचन के प्रति अपनी निष्ठा बनाए रखते हुए मसीह के निरंतर प्रेम का जवाब देना चाहिए।

मसीह और उसके काम के लिए ध्यान

एक पत्नी की भक्ति को हमेशा स्वयं को दूसरे की जरूरतों के अनुरूप होने की क्षमता, इच्छा और क्षमता में अनुवाद करना चाहिए।

> *हे राजकुमारी सुन, और कान लगाकर ध्यान दे; अपने लोगों और अपने पिता के घर को भूल जा; और राजा तेरे रूप की चाह करेगा। क्योंकि वह तो तेरा प्रभु है, तू उसे दण्डवत कर। (भजन 45: 10-11)।*

उपरोक्त कविता में, दुल्हन को उसकी शादी को अधिकतम करने के लिए चार सुझाव दिए गए हैं। पहले तीन सलाह लेने के लिए उसे बुला रहे थे! इन तीन आदेशों को रेखांकित करें। वास्तविक सलाह (चौथी वस्तु) ने उसे अपने पिता के घर को भूल जाने के लिए कहा। वह अच्छे पुराने दिनों 'के लिए अकेला या लंबा हो सकता है, लेकिन तब वह अपने पति की बजाय अपनी जरूरतों पर ध्यान दे रही होगी। उसकी जिम्मेदारी अब अपने नए पति की जरूरतों को पूरा करना है। नीचे, परिणाम लिखें कि क्या होता है जब दुल्हन सही तरीके से केंद्रित होती है।

परिणाम> _____

प्रतिबिंब

दूसरे देश का एक अच्छा मसीही दोस्त एक बार अपने मसीही छात्र समूह के साथ एक बारबेक्यू के दौरान हमसे मिलने आया। वह सलाहकारों में से एक थे। उसने मुझसे पूछा, "ऐसा क्यों है कि इतने कम लोग आसपास आते हैं और मदद करने के लिए स्वयंसेवक हैं?" कोई आसान जवाब नहीं था। कई 'स्पष्ट' जरूरतें थीं, लेकिन किसी ने भी नहीं पूछा कि क्या वे मदद कर सकते हैं। वे दूसरों की जरूरतों पर ध्यान केंद्रित नहीं कर रहे थे। वह इसके ठीक विपरीत था। वह चर्च की जरूरतों के प्रति बहुत चौकस था। जहाँ कहीं भी आवश्यकता होती, वह मदद करता था यहां तक नींद और समय का महान त्याग भी।

आवेदन

जब आप पहली बार विश्वास करते हैं तो क्या आप प्रभु के प्रति अपने उत्साह को याद कर सकते हैं? क्या आपको याद है कि आप दूसरों से मसीह के बारे में बात करते हैं? क्या आपने उनका वचन में अतिरिक्त समय दिया? क्या आप खुशी से दूसरों की मदद करने के लिए अपने रास्ते से बाहर नहीं गए हैं?

अभी का क्या? प्रार्थना करें कि प्रभु आपको एक ऐसा प्यार दे जो आपको अतीत में प्यार करता था।

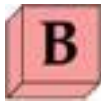

मसीह की जल्द वापसी

मसीह की वापसी पर ध्यान दें

हिब्रू शादी

हिब्रू सगाई और शादी आज हमारी शादियों के विपरीत थी। एक बार जब आदमी की सगाई हो जाती, तो वह चला जाता और उनके रहने के लिए जगह की व्यवस्था शुरू कर देता। वह उसे तब तक नहीं देखती, जब तक वह उसे अपने नए घर में लाने के लिए नहीं आता। यह शादी का दिन होगा। वह कभी नहीं जानती थी कि वह कब आएगा। उसे और अन्य लोगों को निलंबित कर दिया गया। उसे हमेशा उसके लिए तैयार रहना पड़ता था। जब वह अपने सभी दोस्तों के साथ आता, तो वे दावत देते और उसे अपने नए घर में ले जाते। यीशु का दृष्टांत पढ़ें (मत्ती 25: 1-13)

तब स्वर्ग का राज्य उन दस कुंवारियों के समान होगा जो अपनी मशालें लेकर दूल्हे से भेंट करने को निकलीं।उन में पांच मूर्ख और पांच समझदार थीं। मूर्खों ने अपनी मशालें तो लीं, परन्तु अपने साथ तेल नहीं लिया।परन्तु समझदारों ने अपनी मशालों के साथ अपनी कुप्पियों में तेल भी भर लिया।जब दुल्हे के आने में देर हुई, तो वे सब ऊंघने लगीं, और सो गईं।आधी रात को धूम मची, कि देखो, दूल्हा आ रहा है, उस से भेंट करने के लिये चलो।तब वे सब कुंवारियां उठकर अपनी मशालें ठीक करने लगीं।और मूर्खों ने समझदारों से कहा, अपने तेल में से कुछ हमें भी दो, क्योंकि हमारी मशालें बुझी जाती हैं।परन्तु समझदारों ने उत्तर दिया कि कदाचित हमारे और तुम्हारे लिये पूरा न हो; भला तो यह है, कि तुम बेचने वालों के पास जाकर अपने लिये मोल ले लो।जब वे मोल लेने को जा रही थीं, तो दूल्हा आ पहुंचा, और जो तैयार थीं, वे उसके साथ ब्याह के घर में चलीं गईं और द्वार बन्द किया गया।इसके बाद वे दूसरी कुंवारियां भी आकर कहने लगीं, हे स्वामी, हे स्वामी, हमारे लिये द्वार खोल दे। उस ने उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच कहता हूं, मैं तुम्हें नहीं जानता। इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, न उस घड़ी को॥

चेतावनी और दृढ़ता

उपर्युक्त दृष्टान्त की बात स्पष्ट है। दूल्हा मसीह के लिए खड़ा है और उसकी चर्च, दुल्हन, उसके साथ घर लेने के लिए उसकी अंतिम वापसी। कुंवारी लोग परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनमें से कुछ ब्राइडग्रूम के लिए तैयार थे; अन्य नहीं थे। परिणाम गंभीर थे। भले ही कुंवारी कन्याएं दूल्हे के इंतजार की शुरुआत में तैयार और उत्सुक रही हों, लेकिन जब वे वापस लौटते हैं तो उन्हें उसके लिए तैयार रहने की आवश्यकता होती है।

हम नहीं जानते कि मसीह कब वापस आएगा। जब वह करता है, तो वह चीजों का अंत होगा जैसा कि हम उन्हें जानते हैं। क्योंकि हम नहीं जानते कि वह कब आ रहा है, तो इस जीवन के अन्य कम महत्वपूर्ण मामलों से विचलित होना आसान है। जैसा कि हिब्रू शादी में, दुल्हन को व्यस्त रहना पड़ता था, उसके आने के लिए हर दिन तैयार रहना चाहिए क्योंकि उसे नहीं पता था कि उसका आदमी कब उसके साथ आ रहा था।

आवेदन

उन दो चीजों को सूचीबद्ध करें जो आप नहीं कर रहे हैं (लेकिन हैं) यदि मसीह आज आया और दो चीजें जो आप करेंगे (लेकिन नहीं हैं)।

अगर आज मसीह लौटा,

• मैं नहीं करूंगा:

• मैं कर रहा हूँ:

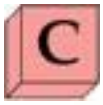

शुद्ध रखना

एक महान शादी करने के लिए आवश्यक शर्तें

शादी के दौरान पवित्रता काफी हद तक शादी से पहले शुद्धता से निर्धारित होती है। यदि शादी से पहले समझौता होता है, केवल महान के साथ शादी के दौरान पवित्रता काफी हद तक शादी से पहले शुद्धता से निर्धारित होती है। अगर शादी से पहले समझौता होता है, तो शादी के बाद केवल बड़े प्रयास के साथ उन्हें रोका जाएगा। यौन और नैतिक रूप से शुद्ध रखने के लिए हर संभव

प्रयास किया जाना चाहिए ताकि वासना द्वारा शासित एक के बजाय एक प्यार भरे रिश्ते के लिए एक स्थिर नींव रखी जा सके। सच्चा प्यार पवित्रता की मांग करता है।

1) शादी से पहले

सिंगल्स को शादी से पहले यौन और भावनात्मक दोनों तरह से शुद्ध रहना चाहिए। विवाह के बाद, उनकी यौन अभिव्यक्ति कठोरता से विवाह की सीमा के भीतर रहेगी। इन मानकों का कोई भी समझौता गहरी वैवाहिक समस्याओं को जन्म देता है। एक दुल्हन को अपने दूल्हे के लिए खुद को रखना चाहिए। एक आदमी को केवल अपनी पत्नी पर अपना स्नेह स्थापित करना चाहिए।

और जैसा पवित्र लोगों के योग्य है, वैसा तुम में व्यभिचार, और किसी प्रकार अशुद्ध काम, या लोभ की चर्चा तक न हो। (इफिसियों 5: 3)।

2) साहस और डेटिंग

शुद्ध मापदंड को बनाए रखने के लिए, उन पर चर्चा करना महत्वपूर्ण है। डेटिंग संदर्भ में ऐसा करना कठिन है। विपरीत लिंग के लोगों के साथ डेटिंग एक असुरक्षित 'मज़ेदार' मानसिकता की ओर ले जाता है। यह एक अमीर और मोबाइल समाज में विशेष रूप से सच है। "*जवानी की अभिलाषाओं से भाग; और जो शुद्ध मन से प्रभु का नाम लेते हैं, उन के साथ धर्म, और विश्वास, और प्रेम, और मेलमिलाप का पीछा कर*।" (2 तीमु। 2:22)।

कोर्टशिप, हालांकि, एक दीर्घकालिक संबंध है जो देखने में शादी है। माता-पिता, जोड़े के साथ, रिश्ते को स्पष्ट रूप से स्थापित मापदंड के तहत विकसित करने की अनुमति देते हैं। पिता द्वारा एक जवाबदेही प्रणाली शुरू की जाती है।

कोर्टशिप जोड़े को सार्वजनिक स्थितियों जैसे पार्क, मॉल और रेस्तरां में एक साथ रहने की अनुमति देता है। उन्हें निजी तौर पर एक साथ अकेले रहने की अनुमति नहीं है। इस परीक्षण समय के बाद, माता-पिता के आशीर्वाद के साथ जोड़े, विवाहित होने के लिए सगाई कर सकते हैं।

3) मानक स्थापित करना

शादी से पहले एक जोड़े को क्या मापदंड होने चाहिए? हमारा सुझाव है कि आवक पर ध्यान केंद्रित करना (एक व्यक्ति क्या सोचता है और कल्पना करता है) और बाहर के मापदंडो (जो कोई अपने शरीर या शब्दों के साथ करता है)।

कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम क्या करते हैं, हमें कामुक मनोरंजन, विचारशील चित्रों और अंतरंग संपर्क से दूर रहना चाहिए। विभिन्न संस्कृतियों में अलग-अलग मापदंड हो सकते हैं लेकिन कम से कम हम शारीरिक संपर्क पर संयम का सुझाव देते हैं जैसे चुंबन या एक दूसरे को छूना। शादी को अंतरंगता की अनुमति का संकेत दें।

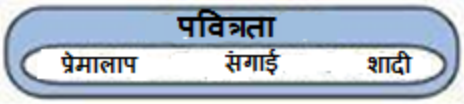

संबंध की आवश्यकता द्वारा महिला को देखते हुए पुरुष दृढ़ता से नियंत्रित होते हैं। स्पष्ट मापदंड हर एक को उसकी कमजोरी में मदद करते हैं ताकि वे एक दूसरे को जवाबदेह रख सकें।

आवेदन

नैतिक शुद्धता के लिए प्रयास करें। मजबूत नियम वास्तविक रिश्ते के विकास पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करते हैं। यदि आपने इस क्षेत्र में समझौता किया है, तो अपने पाप को स्वीकार करें, स्पष्ट सीमाएं स्थापित करें और पवित्रता को अपने जीवन का एक लक्ष्य बनाएं। एक ईसाई, उदाहरण के लिए, एक गैर-ईसाई के साथ इस तरह के संबंध को कभी विकसित नहीं करना चाहिए।

"अविश्वासियों के साथ असमान जूए में न जुतो, क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल जोल? या ज्योति और अन्धकार की क्या संगति? और मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव? या विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्या नाता? "(2 कुरिन्थियों 6: 14-15)।

सारांश

a) प्रभु मेरी पूर्ण सेवा के योग्य हैं।

b) मैं प्रभु की जल्द वापसी में नियमित रूप से खुद को खुश और प्रसन्न करूंगा।

c) मैं यौन रूप से शुद्ध होऊंगा, दोनों विवाह और विचार में और शादी से बाहर।

होम प्रोजेक्ट लें

• स्मृति छंद **प्रकाशितवाक्य 19: 7-8**

आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उस की स्तुति करें; क्योंकि मेम्ने का ब्याह आ पहुंचा और उस की पत्नी ने अपने :आप को तैयार कर लिया है। और उस को शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहिनने का अधिकार दिया गया, क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम हैं।

• तत्परता का परीक्षण

केवल कुछ कुंवारे लोग ही मसीह की वापसी के लिए तैयार थे। आपको किन चीजों पर काम करने की आवश्यकता है ताकि आप उसकी वापसी के लिए तैयार 'हों? अपनी आत्मिक पत्रिका में जीवन के प्रत्येक मुख्य क्षेत्र में एक या दो बातें लिखें, जो आपको उसके आने के लिए अपनी तत्परता की पुष्टि करने में मदद करने के लिए आवश्यकता है। यहां कुछ श्रेणियां दी गई हैं, जिन पर आप विचार कर सकते हैं।

काम	घर	पढ़ाई	संबंध	सेवा	परमेश्वर के साथ

• योजना पवित्रता

शुद्ध होने के कई अलग-अलग पहलू हैं। शुद्ध होने के लिए, निर्धारित मापदंड होने चाहिए। उन मापदंडों को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जाना चाहिए। उन्हें इतनी पवित्रता होनी चाहिए कि कोई भी उन्हें दूसरों के साथ साझा करने में सक्षम हो। चाहे आप शादीशुदा हों या न हों, अपनी आत्मिक पत्रिका में उन आंतरिक और बाहरी मापदंडों को लिखें जो परमेश्वर आपके लिए चाहते हैं। उदाहरण के लिए एक आदमी को घर में एक महिला के साथ अकेला नहीं होना चाहिए। कम से कम दो दोस्त खोजें और चर्चा करें कि वे किस मापदंड को बनाए रखते हैं और क्यों।

इन मापदंडों पर खुले तौर पर अपने साथी और उसके माता-पिता के साथ चर्चा की जानी चाहिए। आदमी को खुद को माता-पिता के प्रति जवाबदेह बनाना चाहिए।

अंत में, अगर विचार या कार्य में कोई समझौता हुआ है, तो इन पापों को स्वीकार करें, मसीह के रक्त के माध्यम से सफाई और उन मापदंडों के लिए एक नई प्रतिबद्धता खोजें। "*दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे, वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा*। "(यशायाह 55.7)।

क्रूस प्रशिक्षण

संबंधपरक शिष्यत्व

#6 न्यायाधीश ⟷ पापी

प्यार में बढ़ रहा है

परमेश्वर और दूसरों के लिए!

न्यायाधीश और पापी

सिर्फ एक दुनिया में रहना

परमेश्वर दुनिया के न्यायाधीश हैं। वह उन सभी पर निर्णय करता है जो उसके कानूनों का पूरी तरह से पालन नहीं करते हैं। लेकिन कौन सही है? कोई नहीं। यह ठीक इस बिंदु पर है कि परमेश्वर का महान और शक्तिशाली प्रेम पाप में गिरे हुए मनुष्य तक पहुँचता है, परमेश्वर की महान दया में उन्होंने अपने एकमात्र इकलौता पुत्र को हमारे लिए सूली पर मरने के लिए भेजा। जो मसीह में विश्वास करते हैं वे स्वतंत्र रूप से क्षमा हुये हैं। हम उनके लोगों के रूप में स्वतंत्र रूप से दूसरों पर इस दया को पार करने के लिए हैं।

नियमों के संबंध में

हाल ही में, मैं ट्रैफिक कोर्ट में था। मैंने एक न्यायाधीश के सामने खड़े होने की अत्यधिक असुविधा का अनुभव किया। मैंने कानून का उल्लंघन किया था। हालाँकि मैंने कानून को जानबूझकर नहीं तोड़ा है, लेकिन इससे मुझे कोई निर्दोष नहीं बनाया गया है। जिन लोगों ने अदालत कक्ष को भरा था, वे अपने कार्यों के लिए रक्षा देने के लिए अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे। उन्हें खुद ही पता नहीं था कि न्यायाधीश का अंतिम फैसला क्या होगा।

परमेश्वर एक न्यायाधीश है। परमेश्वर के बारे में न्यायाधीश के रूप में बोलना लोकप्रिय नहीं हो सकता है, वह इसे सटीक न्याय के लिए अपना महत्वपूर्ण कर्तव्य मानते हैं।

एक न्यायी परमेश्वर के रूप में, वह किसी के पापों की अनदेखी नहीं कर सकता है। प्रत्येक अंतिम पाप, बड़े और छोटे, सार्वजनिक या निजी, विचार या कर्म, सभी को हमारे साथ मसीह के महान निर्णय के सिंग्गासन तक पहुँचना है। *सो जब तक प्रभु न आए, समय से पहिले किसी बात का न्याय न करोवही तो अन्धकार की छिपी बातें ज्योति में दिखाएगा :, और मनों की मतियों को प्रगट करेगा, तब परमेश्वर की ओर से हर एक की प्रशंसा होगी॥ (1 कुरिन्थियों 4:5 ।*

हम केवल क्रूस पर मसीह यीशु के समाप्त किए गए कार्य में "दोषी" फैसले से बच सकते हैं। "*और तुम जानते हो, कि वह इसलिये प्रगट हुआ, कि पापों को हर ले जाए; और उसके स्वभाव में पाप नहीं। "*(1यूहन्ना 3:5)। केवल यीशु में ही हमें दया मिल सकती है।

ईश्वर धर्मी

भगवान की धार्मिकता की सराहना करना

1) न्याय को समझना

हमारे अपराध के कारण, हम मापदंडों को कम करके या जुर्माना कम करके न्याय को विकृत करते हैं। उदाहरण के लिए, हम सोचते हैं कि परमेश्वर 'इतने बुरे नहीं हैं' पापों के लिए अपवाद बनाता है। यद्यपि हम सोच सकते हैं कि परमेश्वर कुछ चीजों का न्याय नहीं करेंगे या केवल कुछ पापों को नजरअंदाज करेंगे, वह निर्णय दिवस पर अपने मानकों के अनुसार निर्णय करेंगे। वास्तव में, परमेश्वर एक पूर्ण न्याय के लिए जिम्मेदार है। हर पाप का न्याय होना चाहिए।

2) अच्छा काम करता है

यह ईश्वर की परिपूर्ण पवित्रता है जो पूर्ण न्याय की मांग करती है। " परमेश्वर प्रकाश है और उसमें कोई अंधकार नहीं है" (1यूहन्ना 1: ५)। यदि परमेश्वर थोड़ा धुंधला होता, तो हम परमेश्वर के पवित्र भाव से बचने के लिए पर्याप्त अच्छे कार्यों को करने में सक्षम हो सकते हैं, लेकिन परमेश्वर प्रकाश है। इसका मतलब यह है कि जब तक हम उनके आदर्श मापदंड तक नहीं पहुँचते, हम निंदा करते हैं। नीचे दिए गए पद में उल्लिखित मानक को रेखांकित करें और तीन विकल्पों में से सही कथन को सर्कल करें:

कोई दोषी नहीं है | कुछ दोषी हैं | हर कोई दोषी है

गरीबों की मदद करने और लोगों की मदद करने की तरह, ई अच्छा करने का अभ्यास उत्कृष्ट है, लेकिन यह हमारे पाप के लिए हमारे अपराध को दूर नहीं करता है। इसके अलावा, हम कई अच्छे काम करने में विफल रहे हैं। यही कारण है कि जो लोग स्वर्ग पाने के लिए धर्म, नैतिकता या दान पर भरोसा करते हैं, वे गंभीर रूप से गलत हैं।

३) हमारा अधर्म

यदि हम परमेश्वर को जानने जा रहे हैं, तो यह अनिवार्य है कि हम उसकी धार्मिकता को उसके प्रेम के समान समझें। ईश्वर ने मनुष्य को ईश्वर के विचारों और तरीकों से परिपूर्ण सामंजस्य बनाने के लिए बनाया। जब मनुष्य ने परमेश्वर के तरीकों को अस्वीकार करने के लिए चुना, तो वह अपने तरीके से चला गया। इसे संक्रमण या पाप कहते हैं। मानव जाति दो तरह से अधर्मी है:

(१) वह वही करता है जो उसे नहीं करना चाहिए।

(२) वह वह नहीं करता जो उसे करना चाहिए।

हम तो सब के सब अशुद्ध मनुष्य के से हैं, और हमारे धर्म के काम सब के सब मैले चिथड़ों के समान हैं। हम सब के सब पत्ते की नाईं मुर्झा जाते हैं, और हमारे अधर्म के कामों ने हमें वायु की नाईं उड़ा दिया है।" (यशायाह 64: 6)।

4) एक विद्रोही दिल

हमारे अधर्म के दिल में हमारे जिद्दी और विद्रोही दिल हैं। जब कोई व्यक्ति ईश्वर को अप्रसन्न करने वाली चीजें करता है, तो यह पता चलता है कि उसका हृदय अपवित्र है। "*कोई भी तुझ से प्रार्थना नहीं करता, न कोई तुझ से सहायता लेने के लिये चौकसी करता है कि तुझ से लिपटा रहे; क्योंकि हमारे अधर्म के कामों के कारण तू ने हम से अपना मुंह छिपा लिया है, और हमें हमारी बुराइयों के वश में छोड़ दिया है*॥" (यशायाह 64: 7)। यही कारण है कि सच्चा उद्धार पश्चाताप के द्वार के माध्यम से आता है। जब तक हमारे पास एक नया दिल नहीं होगा, हमें परमेश्वर की बातों के लिए सच्चा प्यार नहीं होगा।

परमेश्वर के सामने खुद को नमन करें और अपने अपराध को स्वीकार करें। तुम उससे दूर हो गए हो। आप कुछ 'अच्छे कार्यों' पर गर्व कर सकते हैं, लेकिन आपके जीवन से पता चलता है कि आप कितने अधर्मी हैं। आप परमेश्वर के धर्मी सिंहासन से पहले निर्णय लेने के लायक हैं। अपनी अच्छाई प्राप्त करने के लिए अपनी अयोग्यता कबूल करें।

क्रोध जारी
ठीक परमेश्वर के प्रति प्रतिक्रिया

1) परमेश्वर के क्रोध के बारे में प्रश्न

परमेश्वर का क्रोध उनके व्यक्ति और तरीकों के खिलाफ विद्रोह के सभी रूपों के खिलाफ तीव्र क्रोध है। इस शब्द में परमेश्वर के आक्रामक तरीके से न्याय करने के तरीके को दर्शाया गया है। वह सजा को हल्का नहीं करेगा।

हमारा मन परमेश्वर के फैसले के बारे में सवालों से घिर गया है कि हम कभी-कभी सोचते हैं कि क्या परमेश्वर वास्तव में ऐसा है। शास्त्र हमें यह पता लगाने में सक्षम करते हैं कि वास्तव में परमेश्वर क्या है। " *परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं।* " (रोमियों 1:18)। एक मायने में, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हमें वह पसंद है या नहीं। परमेश्वर दुष्टों पर अपना प्रकोप डालता है; हमें उसके बारे में इस विशेषता को स्वीकार करना सीखना चाहिए। उन्होंने दुनिया पर अपने फैसले के बारे में खुलकर बात की है।

• क्या पुराने नियम का परमेश्वर नए नियम के परमेश्वर के समान है?

कुछ लोग आश्चर्य करते हैं कि क्या परमेश्वर वास्तव में पुराने नियम के अनुसार क्रोधी है। नया नियम को पढ़ने से समस्या आसानी से हल हो जाती है। वहाँ हमें पता चलता है कि परमेश्वर के क्रोध और निर्णय को पुराने नियम (147 बार) की तरह ही नए नियम (37 बार) में वर्णित किया गया है। *"जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है॥"*(यूहन्ना 3:36)।

ईश्वर का प्रकोप पहले से ही सभी पापियों पर है। मसीह को अस्वीकार करने का मौका दिए बिना भी, मौत का अभिशाप स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि निर्णय पहले से ही मानव जाति पर है।

• क्या एक प्यार करने वाला परमेश्वर पापियों का न्याय कर सकता है?

बहुत से लोग *परमेश्वर* के प्यार के बारे में निश्चित हैं, लेकिन वे सवाल करते हैं कि क्या प्यार न्याय के साथ संगत है। वे कहते हैं, "यदि *परमेश्वर* प्रेम कर रहा है, तो वह किसी का न्याय नहीं करेगा," या "जब से *परमेश्वर* प्रेम कर रहे हैं, वह सभी को बचाएगा।"

हालांकि, पापियों के खिलाफ *परमेश्वर* का क्रोध उनके प्यार के साथ संगत है। "तब *परमेश्वर* की दया और गंभीरता को निहारना; जो लोग गिर गए, गंभीरता, लेकिन आपके लिए, *परमेश्वर* की दया "(रोमियों 11:22)। इस कविता में दिखाए गए *परमेश्वर* की दो विशेषताओं को रेखांकित करें।

2) *परमेश्वर* की दया और गंभीरता

दुनिया भर में होने वाली भयानक घटनाएं मानव जाति के लिए वास्तविक चेतावनी हैं। *परमेश्वर* मानव जाति को पश्चाताप करने और अपने जल्द ही तीव्र प्रकोप से बचने के लिए कहते हैं। *परमेश्वर* ने हमें भूकंप, सुनामी और *एड्स* जैसे रोगों के माध्यम से अपने फैसले के बारे में चेतावनी दी है। पृथ्वी पर पीड़ित अस्थायी है, लेकिन उसके फैसले के शाश्वत परिणाम हैं।

और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उन से पलटा लेगा।वे प्रभु के साम्हने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे।... (2 थिस्सलुनीकियों 1: 8-9)।

परमेश्वर की दया उनके बेटे ईसा मसीह के महान बलिदान में भी पाई जाती है। दोषियों के लिए निर्दोष मर गया कि दोषी अपने फैसले से मुक्त हो जाएगा। "*और उसके पुत्र के स्वर्ग पर से आने की बाट जोहते रहो जिसे उस ने मरे हुओं में से जिलाया, अर्थात यीशु की, जो हमें आने वाले प्रकोप से बचाता है॥*" (1 थिस्सलुनीकियों 1:10)।

आवेदन

क्या आपने अपने पाप से पश्चाताप किया है? यदि आप इस बारे में स्पष्ट नहीं हैं, तो अब अपने पाप से दूर हो जाएँ और यीशु के माध्यम से क्षमा की याचना करें। परमेश्वर आपको क्षमा करेगा और आपको नया जीवन प्रदान करेगा ताकि आप उसके तरीकों को जीने की इच्छा रखें।

दया अबोध

ईश्वर की दया से रहना

1) परमेश्वर की दया को समझना

अगर हम परमेश्वर के क्रोध की सराहना नहीं करते हैं, जो पवित्रता से उपजा है, तो हम दया के महत्वपूर्ण विचार को समझ नहीं पाएंगे। यह वह समस्या है जिसे यीशु ने , दी अनमेर्सीफुल सर्वेंट। के दृष्टांत में पहचाना। 'पीटर ने पूछा, "किसी व्यक्ति को दूसरे को कितनी बार माफ़ करना चाहिए?" यीशु ने यह कहते हुए जवाब दिया,। सत्तर का गुना सात। आइए (मत्ती 18: 21 -35) में इस चित्रण कथा को संक्षेप में प्रस्तुत करें।

यीशु ने उदाहरण दिया कि यह उस व्यक्ति के लिए कितना असंभव है जो परमेश्वर से दया प्राप्त करता है, दूसरे के साथ दया का व्यवहार नहीं करता है। इस एक सेवक के पास एक राजा का बहुत बड़ा कर्ज था, दस लाख अमेरिकी डॉलर जैसा कुछ। भूमि के स्वामी ने दया की और उसे क्षमा कर दिया। लेकिन वही व्यक्ति बाहर चला गया और एक साथी नौकर से हर आखिरी पैसा हासिल करना शुरू कर दिया, जिस पर उसका कुछ महीने का वेतन बकाया था। उन्होंने उससे चुटकी लेते हुए कहा, "जो तुम्हारा बकाया है उसका भुगतान करो!" वह गरीब आदमी की दया की याचिका सुनने के लिए तैयार नहीं था और कर्ज वापस न करने के लिए उसे जेल भेज दिया। जब क्रोधित राजा को पता चला, तो उन्होंने कहा,

तब उसके स्वामी ने उस को बुलाकर उस से कहा, हे दुष्ट दास, तू ने जो मुझ से बिनती की, तो मैं ने तो तेरा वह पूरा कर्ज क्षमा किया।सो जैसा मैं ने तुझ पर दया की, वैसे ही क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया करना नहीं चाहिए था?और उसके स्वामी ने क्रोध में आकर उसे दण्ड देने वालों के हाथ में सौंप दिया, कि जब तक वह सब कर्जा भर न दे, तब तक उन के हाथ में रहे।इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा॥ (मत्ती 18: 32-35)।

अगर हम अपने दिलों से दूसरों को माफ नहीं करते हैं तो परमेश्वर हमें क्यों करेगा। दया को रोककर हम दया को अपने जीवन में बहने से रोकते हैं।

2) दया जीवन का एक तरीका है

दया उसकी कमजोरी को देखते हुए उस व्यक्ति का उपचार करने की इच्छा है। दयालु व्यक्ति दया से काम लेता है। वह कोई शिकायत नहीं करता । वह अप्रसन्नता से काम नहीं करता। वह जानता है कि परमेश्वर के लिए यह कितना खास था कि वह उसे क्षमा कर दे और इसलिए वह दूसरों पर दया करने का निश्चय करता है।

प्रतिबिंब

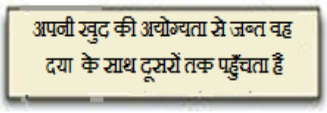

हमारा दृष्टिकोण हमारे स्वभाव को बहुत आकार देता है। जब परमेश्वर ने मुझे परिवर्तित किया, तो उसने मेरे पाप को मेरे सामने प्रकट किया। इससे पहले, मैं इससे बेखबर था। मुझे पता था कि मैं सही नहीं था, लेकिन मुझे यकीन था कि मैं बहुत बुरा नहीं था। मेरी तुलना का बिंदु मेरा भाई था, "मैं उतना बुरा नहीं था ...." मैंने बस परमेश्वर के मापदंडों के अनुसार खुद का मूल्यांकन नहीं किया। जब उसने मेरे पाप का खुलासा किया, तो मैं कुछ ही सेकंड में पूरी तरह हताश हो गया। मैंने परमेश्वर से यीशु के माध्यम से मुझे बचाने की विनती की और उन्होंने मुझे बचाया। अपने पाप के बारे में सही मायने में जागरूक होने के बाद, मैं तब दूसरों पर दया करना सीख सका। मेरा अभिमान नष्ट हो गया, और मैं अपनी परिस्थितियों में दूसरों को देख सकता था।

आवेदन

पिछली बार जब आपने दया से काम लिया था? दया से काम शुरू करने का दृढ़ संकल्प। अपने निकटतम लोगों के साथ शुरू करें।

सारांश

a) क्योंकि परमेश्वर पूर्ण धार्मिक है, हमारी अधार्मिकता बहुत स्पष्ट है।

b) परमेश्वर की धार्मिकता यह माँग करती है कि उसका क्रोध उन सभी पापों के विरुद्ध हो जो उन लोगों के लिए अनन्त न्याय हैं जो मसीह में नहीं हैं।

c) हमें दयालु होना चाहिए क्योंकि हमारे स्वर्गीय पिता दयालु हैं।

होम प्रोजेक्ट लें

- **स्मृति छंद लूका 6: 35-36**

लेकिन अपने दुश्मनों से प्यार करो, और अच्छा करो, और उधार दो, बदले में कुछ भी नहीं की उम्मीद करो; और तुम्हारा प्रतिफल महान होगा, और तुम परमप्रधान के पुत्र होओगे; क्योंकि वह स्वयं कृतघ्न और दुष्ट पुरुषों की तरह है। दया करो, जैसे तुम्हारे पिता दयालु हैं।

- **परमेश्वर की धार्मिकता का सम्मान करना**

प्रकाशितवाक्य 14:17-18:4 जोर से पढ़ें। फिर अपनी आध्यात्मिक पत्रिका में उसकी प्रशंसा करते हुए प्रार्थना लिखें। उसकी धार्मिकता के लिए परमेश्वर की स्तुति करो और वह सभी पापों का न्याय करने वाला है। यदि आप ऐसा करने में कठिनाई महसूस करते हैं, तो आपको पहले अपने अंधेपन को परमेश्वर के राजसी तरीकों से स्वीकार करना होगा और क्षमा मांगनी होगी। इस सप्ताह हर दिन ऐसा करें जब तक यह प्राकृतिक न हो जाए।

- **हमारी दयालुता की निगरानी करना**

जब रिश्ते तनावपूर्ण हो जाते हैं, तो अपने दया के स्तर की जांच करें। सबसे अधिक संभावना है कि आप दया को रोक दिया है। जब कोई व्यक्ति दया को छोड़ देता है,, तो परमेश्वर अपनी कृपा को उसके जीवन से दूर कर देते हैं। जैसा कि एक व्यक्ति अतिरिक्त धैर्य और दयालुता विकसित करता है, उसके अपने रिश्ते बेहतर होते हैं। अपने रिश्तों की जांच करें कि क्या आपने दया को त्याग दिया है। याद रखें कि दया की मांग नहीं है कि दूसरे पहले कार्रवाई करें जैसे कि माफी मांगने में।

- **खोये हुये के लिए प्रार्थना करो**

अपने स्वयं के जीवन में परमेश्वर की दया के जवाब में, परमेश्वर से प्रार्थना करने के लिए अपने पापों में खोए हुए लोगों का समूह देने के लिए कहें। यह एक घर, सड़क, शहर या राष्ट्र हो सकता है। सामान्य इन लोगों के समूह के लिए प्रार्थना करने के लिए आपको तैयार होना है। प्रार्थना में दृढ़ रहें। यह एक ऐसा तरीका है जिससे आप इस दुनिया में और अधिक दया ला सकते हैं जो न्याय के हकदार हैं।

क्रूस प्रशिक्षण

संबंधपरक शिष्यत्व

#7 पास्टर ⟷ लोग

प्यार में बढ़ रहा है

परमेश्वर और दूसरों के लिए!

पास्टर और लोग

द्यालू प्रार्थना सीखना

पास्टर हर समाज में पाया जाने वाला एक प्राचीन और महत्वपूर्ण विचार है। पास्टर की भूमिका परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ बनने की है। हम इस बात से ज़्यादा हैरान नहीं हैं कि यीशु मसीह खुद याजकों में सबसे महान और सबसे दयालु है। लेकिन शायद हमें यह जानकर हैरानी होती है कि प्रत्येक मसीही विश्वासियों के पास्टर का हिस्सा है।

बिना मदद के नहीं

क्या आपने कभी किसी की मदद करने के लिए असुरक्षित और अकेले महसूस किया है? यदि हां, तो आपको एक पास्टर की आवश्यकता है। एक पास्टर हमारे लिए खड़े होकर हमारी मदद करता है। वह वही करता है जो हम अपने लिए नहीं कर सकते हैं ताकि हम अपनी कठिनाई से गुजर सकें।

मसीही के रूप में, यीशु मसीह हमारे अद्भुत पास्टर हैं। पास्टर के रूप में वह परमेश्वर और उसके लोगों के बीच मध्यस्थ के रूप में खड़ा है। इससे पहले कि हम मसीही थे, पाप परमेश्वर और हमारे के बीच खड़ा था ।

हम जीने के लिए परमेश्वर के नियमों के खिलाफ विद्रोह में रहते थे। यह एक या दो चीजों के बजाय हमारा राज्य था। यह वह तरीका था जो हम थे और न ही हम अपने दम पर बदल सकते थे।

हमें निश्चित रूप से परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते को बहाल करने का मौका नहीं मिला, लेकिन परमेश्वर ने अपने महान धैर्यवान और दयालुता में यीशु मसीह, उनका इकलौता पुत्र, हम पापियों के लिए मरने के लिए भेजा। " *क्योंकि परमेश्वर एक ही हैऔर परमेश्वर और मनुष्यों : के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है।* " (1 तीमुथियुस 2: 5)।

अपनी जरूरत के हिसाब से हमारे पास पहुंचना जानने के लिये परमेश्वर के मार्ग से हमने बहुत कुछ सीखा है। हम न केवल इस बारे में जानेंगे कि कैसे यीशु ने हमें पाप से छुटकारा पाने में मदद की बल्कि यह भी बताया कि कैसे वह हमारे जीवन का उपयोग अन्य जरूरतमंद लोगों तक पहुँचाने के लिए करना चाहता है। ऊपर दिए गए प्रत्येक आरेख को खींचने का प्रयास करें।

दयालु होना

मसीह ने परमेश्वर के सामने याजक के रूप में सेवा की

हमें हमारी मदद के लिए एक याजक की जरूरत थी। परमेश्वर को हमारी मदद करने की जरूरत नहीं थी । हम अपने विद्रोही तरीकों के लिए न्याय के लायक थे। वह हमें हमारे पापों में मरने दे सकता था, लेकिन उसने दया करके अपने पुत्र यीशु मसीह को हमारी ओर से याजक बनने के लिए भेजा।

1) एक पुरोहित की आवश्यकता

"... उसने (मसीह) बहुतों के पाप का बोझ उठ लिया, और, अपराधियों के लिये बिनती करता है॥" (यशायाह 53:12)

यीशु मसीह ने उपरोक्त आयत में कौन सी दो बातें की हैं?

1. वह स्वयं _____

2. (वह) _____ के लिए _____।

जब वह क्रूस पर मरा तो यीशु मसीह ने उसके सभी लोगों के पापों को दूर किया। ध्यान दें कि वह किस तरह के लोगों के लिए मध्यस्थता करता है या प्रार्थना करता है। यह पापियों के लिए था।

परमेश्वर ने उन पापियों पर दया की, जो इसके लायक नहीं थे। जब हमें खुद दया दिखाई गई थी? तो हम दूसरों पर दया क्यों नहीं दिखाएंगे? जब भी हम इस दया की कमी देखते हैं, हमें अपने आप को और दूसरों के लिए परमेश्वर की महान दया को याद दिलाना होगा। हमें करुणा से भरा होना चाहिए। परमेश्वर का पूरा गुस्सा पाप के फैसले के दिन आएगा। अभी हम दूसरों की मदद करने के लिए यीशु मसीह के माध्यम से परमेश्वर कैसे अपने लोगों के पापों से उद्धार कर सकते हैं की घोषणा करके अपने आने वाले गुस्से से बचने में व्यस्त हैं।

2) आज्ञाकारिता पुजारी

" और पुत्र होने पर भी, उस ने दुख उठा उठा कर आज्ञा माननी सीखी। और सिद्ध बन कर, अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिये सदा काल के उद्धार का कारण हो गया।"

(इब्रानियों 5: 8-9)।

मसीह के उदाहरण को देखें। हम मिटने के योग्य थे, लेकिन यीशु ने हमारे लिए दुख उठाया। क्या भयानक दर्द उसने सहन किया! वह करुणा है। मसीह ने उन काँटों, क़ब्रों और यहाँ तक कि मृत्यु को भी सहन किया ताकि हम पापियों को अनंत जीवन मिल सके।

कभी-कभी जो लोग गैर-मसीहीयो के साथ सुसमाचार को साझा करते हैं या उन लोगों की मदद करते हैं जो उत्पीड़ित हो रहे हैं। एक प्रार्थना में प्रभु से कहें कि आप मसीह की तरह दूसरों को अपना प्यार दिखाने में मदद करने के लिए साहस और शक्ति चाहते हैं।

3) हमारी प्रतिक्रिया

" क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।यहुन्ना 3 :16)
उपर्युक्त आयत से, हमने पढ़ा कि कैसे ईसा मसीह को उपहार के रूप में हमें दिया गया था। लेकिन हर एक समान रूप से लाभान्वित नहीं होता है। उस महत्वपूर्ण शब्द को रेखांकित करें जो इस बात पर जोर देता है कि हमारे पापों के लिए मसीह के बलिदान को लागू करता है

वह आपके जैसे पापी से कैसे प्यार करेगा और यह सोचकर कि अब उसे अपने प्यार के लिए धन्यवाद देने के लिए समय निकाले , इस बारे में अधिक सोचकर आपके लिए परमेश्वर के प्यार के लिए गहरी प्रशंसा विकसित करें।

मसीह पर भरोसा करना

मसीह हमारे पुजारी के रूप में कार्य करता है

क्योंकि मसीह हमारे लिए परवाह करता है, हम उस पर और अधिक विश्वास करना सीख सकते हैं। आइए देखें कि वह हमारी देखभाल कैसे करता है और हमारी सहायता के लिए आता है।

1) मसीह का हस्तक्षेप और मध्यस्थता

हम कभी-कभी खुद को कठिन परिस्थितियों में पाते हैं, लेकिन कई मामलों में हम एक रास्ता निकाल सकते हैं। हालांकि अन्य समय में, हम वास्तव में असंभव परिस्थितियों में आते हैं! आइए देखते हैं कि इस समूह के लोगों के साथ क्या होता है।

तब लोग मूसा के पास जा कर कहने लगे, हम ने पाप किया है, कि हम ने यहोवा के और तेरे विरुद्ध बातें की हैं; यहोवा से प्रार्थना कर, कि वह सांपों को हम से दूर करे। तब मूसा ने उनके लिये प्रार्थना की। (संख्या 21,7)।

समस्या को अनुभव से ऊपर के समूह को रेखांकित करें। जब उन्होंने खुद को असली बड़ी मुसीबत में पाया, तो इस्राएलियों ने क्या किया? तब यहोवा ने मूसा से कहा, "एक नाग नागिन बनाओ, और इसे एक मानक पर सेट करो; और वह आयेगा, जो सबको काटता है, जब वह दिखता है।

यहोवा ने मूसा से कहा एक तेज विष वाले सांप की प्रतिमा बनवाकर खम्भे पर लटका; तब जो सांप से डसा हुआ उसको देख ले वह जीवित बचेगा। सो मूसा ने पीतल को एक सांप बनवाकर खम्भे पर लटकाया; तब सांप के डसे हुओं में से जिस जिसने उस पीतल के सांप को देखा वह जीवित बच गया। था "(संख्या 21: 8-9)।

सर्प उन्हें काट रहे थे, और वे मर रहे थे। उन्हें भयावह समस्या से बचने के लिए क्या करने की आवश्यकता थी। भगवान का उपाय लिखो।

यूहन्ना 3:14-16 हमें बताता है कि यह एक स्पष्ट तस्वीर है कि कैसे मसीह हमें मृत्यु के शापित दंड से बचा सकता है। हमें केवल यीशु मसीह पर विश्वास रखने की आवश्यकता है। अगर हम अपने पाप से हमें मुक्ति दिलाने के लिए यीशु पर विश्वास कर सकते हैं, तो हमें दूसरे विषयों में भी हमारी मदद करने के लिए उस पर विश्वास करना चाहिए। उन्होंने खुद को एक बहुत ही वफादार याजक के रूप में साबित किया है।

2) मसीह की शक्ति और देखभाल

फिर कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा? मसीह वह है जो मर गया वरन मुर्दों में से जी भी उठा, और परमेश्वर की दाहिनी ओर है, और हमारे लिये निवेदन भी करता है। (रोमियों 8:34)।

हम कभी-कभी यह सोच सकते हैं कि क्योंकि यीशु मर गया कि उसके पास अब हमारी मदद करने की शक्ति नहीं है। ये गलत है। तथ्य यह है कि मसीह जो मर चुका था अब जीवित है! वह मृतकों में से जी उठा है । पता लगाएँ कि मसीह कहाँ है और वह निम्नलिखित दो प्रश्नों के उत्तर को रेखांकित करके क्या कर रहा है।

- अब मसीह यीशु कहाँ है?
- मसीह नियमित रूप से हमारे लिए क्या कर रहा है जो विश्वास करते है?

आवेदन

- अपने जीवन में इन शिक्षाओं की समीक्षा करें।
- क्या आप कभी अपने पापों के बारे में गहराई से जानते हैं? सर्कल: हाँ नहीं
- क्या आपने अपनी पाप समस्या के लिए परमेश्वर के समाधान को देखा? दायरा: हाँ नहीं
- क्या आपने परमेश्वर की सलाह ली है? हां, तो कब और कहां हैं?

दूसरों की देखभाल करना

हम दूसरों के लिए याजक के रूप में सेवा करते हैं

हम समझते हैं कि मसीह हमारा याजक है, लेकिन यह भूल जाते हैं कि परमेश्वर ने याजकों के रूप में हमारी सेवा के बारे में क्या कहा है। हमें यह पहचानना चाहिए कि यह रोमन कैथोलिक याजकों के समान नहीं है। इसके बजाय हर मसीही जीवित परमेश्वर के लिए एक याजक के रूप में कार्य करता है। परमेश्वर ने हमें उसके पवित्र याजकत्व का हिस्सा बनने के लिए नियुक्त किया है।

1) मसीही के रूप में हमारी पुकार

तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर बनते जाते हो, जिस से याजकों का पवित्र समाज बन कर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हों। (1 पतरस 2: 5)

ऊपर से परमेश्वर के लोगों के तीन वर्णों का वर्णन करें। यह मसीही अगुवो के साथ-साथ आप सहित सभी मसीहीयों का वर्णन करता है। परमेश्वर ने अपने लोगों को दुनिया से खुद को बुलाया और हमें एक आत्मिक घर में बनाया। हम परमेश्वर के पवित्र याजक हैं। 1 पतरस 2: 5 कहता है कि हमारी ज़िम्मेदारी उसके याजकों की है?

"एक पवित्र याजक के लिए, _____ के लिए।"

तीन प्रकार के आत्मिक बलिदान जो हम मसीहीयों को दे सकते हैं

परमेश्वर हैं:

1. गैर-विश्वासियों के साथ सुसमाचार को साझा करें
2. दूसरों को परमेश्वर के वचन के बारे में सिखाएँ, और
3. दूसरों के लिए प्रार्थना करें।
4. क्या आप चौथा जोड़ सकते हैं?

2) कार्रवाई की आवश्यकता

उसने देखा कि कोई भी पुरूष नहीं, और इस से अचम्भा किया कि कोई बिनती करने वाला नहीं; तब उसने अपने ही भुजबल से उद्धार किया, और अपने धर्मी होने के कारण वह सम्भल गया। (यशायाह 59:16)

बहुत कम लोग वास्तव में दूसरों की देखभाल करते हैं। यहाँ तक की एक बहुत छोटी संख्या देखभाल और इसके बारे में कुछ करती! हालाँकि, हमें मसीह के नक्शेकदम पर चलना है। हमें न केवल लोगों के प्रति दया भाव रखना है बल्कि उनके लिए मध्यस्थता करना भी है। दूसरों की ओर से प्रार्थना करने को कहने के लिए मध्यस्थता एक काल्पनिक तरीका है।

हम परमेश्वर के लोगों को दूसरों की देखभाल करने की आवश्यकता है क्योंकि परमेश्वर ने हमारी देखभाल की है। जैसा कि वह हमारे लिए प्रार्थना करता है, हम अन्य मसीहीयों और उन लोगों के उद्धार के लिए प्रार्थना करते हैं जो उन्हें नहीं जानते हैं। एक हिमायती होने के लिए, हमें इसकी आवश्यकता है:

(1) साफ रहो: शरण लेना, कोई पाप स्वीकार नहीं किया है और सीधे रहते हैं।

(२) आश्वस्त रहें: यकीन मानिए ईश्वर आपकी प्रार्थनाओं का उपयोग करना चाहता है।

(३) दयावान बनें: अपने आसपास के लोगों की देखभाल करें। उनकी जरूरतों के प्रति चौकस रहें।

प्रतिबिंब

एक सेल समूह के अगुवे ने एक बार मुझे बताया था कि वह बहुत निराश था। समूह में चीजें ठीक नहीं चल रही थीं। एक बिंदु पर वह बहुत उत्सुक था और उसने व्यक्तियों के लिए बहुत प्रार्थना की, लेकिन जैसे-जैसे स्थिति बिगड़ती गई, उसने प्रार्थना की कम और कम। उसका विश्वास दूर हो गया। तब एक अगुवे ने उनसे प्रार्थना करने के लिए जल्दी उठने की प्रार्थना की जैसे कि पहले तो परमेश्वर से मिलने के लिए ऐसा किया हो। इसलिए अगली सुबह, वह जल्दी उठा और वर्ड में एक अच्छा समय था। परमेश्वर ने उसे जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। दिलचस्प बात यह है कि उस रात का सेल समूह बहुत अच्छी तरह से चला गया। वह फिर से समूह के लिए प्रार्थना कर रहा है। हमें कठिन परिस्थितियों में भी विश्वास में प्रार्थना करनी चाहिए।

आवेदन

दो विशेष व्यक्तियों या समूहों का उल्लेख करें जिन्हें विशेष प्रार्थना की आवश्यकता होती है। उनके लिए एक साथ प्रार्थना करें।

सारांश

a) परमेश्वर ने हमारे लिए क्रूस पर मरने के लिए मसीह को भेजकर करुणा दिखाई।
b) हम जितना अधिक मसीह पर विश्वास करते हैं, हम उतने ही सुरक्षित होते जाते हैं।

c) ग।भ चाहते हैं कि हम पृथ्वी पर उनका प्रतिनिधित्व करें और जरूरतमंदों पर दया करके उनके लिए प्रार्थना करें।

होम प्रोजेक्ट लें

• स्मृति छंद 1 पतरस 2: 9-10

पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राजपदधारी याजकों का समाज-, और पवित्र लोग, और निज प्रजा हो (परमेश्वर की), इसलिये कि जिस ने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो। तुम पहिले तो कुछ भी नहीं थे, पर अब परमेश्वर ही प्रजा होतुम पर दया नहीं हुई थी पर अब तुम पर दया हुई है॥ :

• एक प्रार्थनात्मक मनोवृत्ति विकसित करना

इस सप्ताह प्रत्येक दिन परमेश्वर को अपने आसपास के लोगों की जरूरतों को प्रकट करने के लिए कहें। परमेश्वर हमारे लिए चीजों को प्रकट करने के लिए सभी प्रकार के साधनों का उपयोग करता है जैसे कि हालात, फोन कॉल, समाचार, बाइबल रीडिंग, आदि। उन्हें रिकॉर्ड करें और हर हफ्ते सूची लाएं। इनमें से प्रत्येक ज़रूरत के लिए एक प्रार्थना कहें और किसी भी ठोस तरीके से परमेश्वर की अगुवाई करें।

• एक इंजीलवाद जीवन शैली विकसित करना

करुणा सीखना और लोगों की मदद करना ठीक है, लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि यीशु के सुसमाचार को सुने बिना लोग अभी भी नाश होंगे।

(1) अपनी गवाही की समीक्षा करें कि परमेश्वर ने आपको कैसे बचाया।

(२) पहले (या किसी अन्य) चार्ट का उपयोग करके सुसमाचार पर जाएँ।

(३) परमेश्वर से एक व्यक्ति के साथ सुसमाचार साझा करने के अवसर के लिए कहें।

(४) यदि संभव हो तो इस सप्ताह एक व्यक्ति को सुसमाचार सुनाएँ।

(५) अपना अनुभव किसी से साझा करें।

प्रचारक जीवन शैली के द्वारा, आपको हमेशा संवेदनशील होना चाहिए, जिसके साथ प्रभु आपको अपनी सुसमाचार साझा करने के लिए संकेत देगा।

क्रूस प्रशिक्षण

संबंधपरक शिष्यत्व

#8 प्रभु ⇔ सेवक

प्यार में बढ़ रहा है

परमेश्वर और दूसरों के लिए!

प्रभु और सेवक

भक्तिपूर्वक परमेश्वर और दूसरों की सेवा

आदम और हव्वा ने शुरू से ही परमेश्वर के सही स्वामित्व का विरोध किया। हम पाते हैं कि हमारे पास अभी भी यही समस्या है - हम कोई प्रभु नहीं चाहते हैं। सौभाग्य से, हमारे बहुत धैर्यवान परमेश्वर ने यीशु को यह दिखाने के लिए भेजा कि परमेश्वर का सेवक होना बिल्कुल भी बुरा नहीं है। हर कोई किसी का गुलाम होता है। कुंजी, यीशु ने समझाया, एक अच्छे गुरु की सेवा करना और उनकी इच्छा पर विश्वास करना आपके लिए सबसे अच्छी बात है। यह जोखिम भरा लगता है, लेकिन यह आपके प्रभु के बारे में विचार करने वाला भी नहीं है जिसने आपको बनाया और बहुत प्यार करता है।

अगुवे का पालन करें

बहुत से लोग सफलता प्राप्त करते हैं कि कितने लोग 'उनके अधीन' हैं, यानी कितने लोग उनके लिए काम करते हैं। दुनिया इन व्यापारिक नेताओं को देखती है। यीशु ने दुनिया की मान्यताओं को यह बताकर हिला दिया कि जीवन में पूर्ती दूसरों की सेवा के माध्यम से आती है। परमेश्वर के प्रेम की भावना में, मसीह, सेवक अगुवे, उत्कृष्ट सेवा के लिए पूरी तरह से तैयार थे।

क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा। (लूका 9:24)।

यीशु ने अच्छी सेवा की। एक प्रभु या शासक आदेश देता है, कार्यसूची स्थिर करता है और अपने कार्यकर्ताओं को बताता है कि उसके नेतृत्व में कैसे पूरा किया जाए। यीशु मसीह ने अपने पिता की इच्छा को पहचान कर, अपनी व्यक्तिगत प्राथमिकताओं से इनकार कर दिया और उसे वही करने के लिए प्रेरित किया जो उससे पूछा गया था। यीशु एक अच्छे सेवक के रूप में अपने कठोर श्रम के लिए पुरस्कृत किया गया था।

इस कारण परमेश्वर ने उस को अति महान भी किया, और उस को वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है।कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें।और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है॥ (फिलिप्पियों 2: 9-11)

एक सेवक अपने प्रभु को खुश करना चाहता है। अपने प्रभु की जरूरतों और इच्छाओं को ठीक से पूरा करने के लिए, दास को अपने सभी अधिकारों और उद्देश्यों को छोड़ देना चाहिए।

परमेश्वर की सेवा के लिए उपलब्ध है

खुद को पूरी तरह से सेवा के लिए उपलब्ध बनाना

जब हम अपने व्यक्तिगत अधिकारों का दावा करते हैं, तो हम अन्य लोगों के साथ संघर्ष करते हैं। इस तरह के संघर्ष का हल यीशु की विनम्र सेवा के अपने उदाहरण के बाद आता है। उसने जानबूझकर अपने अधिकारों को छोड़ दिया ताकि वह सेवा कर सके।

1) मसीह की सेवा का उदाहरण

शायद कोई भी मार्ग इतना स्पष्ट रूप से मसीह की इच्छा की पहचान नहीं करता है जो खुद को पूरी तरह से भगवान और दूसरों की तुलना में उपलब्ध कराता है। फिलिप्पियों 2:5-8

जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा।वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया।और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।

उपरोक्त छंदों में मसीहीयों को जिस तरह के स्वभाव की आज्ञा दी गई है, उसे रेखांकित करें। यीशु द्वारा अनुभव किए जाने वाले विनम्रता के तीन अलग-अलग चरणों को देखें ताकि वह प्रभावी रूप से परमेश्वर के कार्य को प्राप्त कर सके। यीशु, जिसने सेवा करना चुना, वह हमारी मिसाल है।

2) परमेश्वर की सेवा की पसंद

यीशु ने वह नहीं किया जो वह स्वयं करना चाहता था लेकिन अपने पिता की इच्छा के अनुसार करना चाहता था। हम अक्सर कठिन परिस्थितियों से बाहर निकलने की कोशिश करते हैं। हमें लगता है कि हम बेहतर के लायक हैं।

क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, वरन अपने भेजने वाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूं। यूहन्ना 6:38)।

3) परमेश्वर के अपने सेवकों के प्रशिक्षण के साधन

अपनी जीवनशैली में महत्वपूर्ण बदलाव लाने के लिए, हमें सबसे पहले मौलिक दृष्टिकोण में बदलाव करना होगा। एक बार जब हम किसी की सेवा करने की इच्छा करते हैं, तो हम उसकी मदद करने के लिए हमारे रास्ते से हटने का मन नहीं करते। उपर्युक्त छंद में प्रेरित हमें जीवन के लिए वही दृष्टिकोण रखने की आज्ञा देता है जो यीशु ने किया था।

4) परमेश्वर ने अपने सेवकों का परीक्षण किया

इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमारे कुछ सबसे बड़े प्रलोभनों को छोड़ना होगा जब जा रहा कठिन हो जाएगा। यीशु ने गेथसमनी में अत्यधिक प्रलोभन का सामना किया। ध्यान दें कि यीशु ने कितना संघर्ष किया। और फिर भी, वह सही कर रहा है!

कि हे पिता यदि तू चाहे तो इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले, तौभी मेरी नहीं परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो। (लूका 22: 42)।

प्रतिबिंब

सिम्फनी के लिए हमारे मुफ्त टिकटों पर हम उत्साहित थे। हमें बाद में पता चला कि उस रात के लिए एक विशेष चर्च सेवा निर्धारित थी। मुझे पता है कि अगर हम नहीं गए तो मेरी पत्नी निराश हो जाएगी, लेकिन मुझे पता था कि परमेश्वर चाहता मुझे उपस्थित होना चाहिए । मैंने टिकट वापस किए और परमेश्वर पर विश्वास किया उनकी विशेष शांति के लिए । हम एक साथ दूसरों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं और अपनी आवश्यकताओं की देखभाल के लिए परमेश्वर पर विश्वास कर सकते हैं।

आवेदन

अंतिम बार जब आपका परीक्षण किया गया था तो बताएं। आपने कैसे जवाब दिया? हमेशा भगवान की आज्ञा का पालन करने के लिए अपनी इच्छा बताते हुए एक छोटी प्रार्थना करें।

मर्जी से मसीह का पालन करें

मसीह हमारे प्रभु के हम सेवक हैं

यीशु ने न केवल अपने बारह शिष्यों को उनका अनुसरण करने के लिए कहा, बल्कि हर कोई जिसने उनके संदेश को सुना। यीशु हमारे स्वामी हैं; हम उसकी इच्छा के अनुसार करेंगे। हमारा विश्वास इस बात से तय होगा कि हम उसकी बातों को पूरी तरह से कैसे मानते हैं।

यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले; और जहां मैं हूं वहां मेरा सेवक भी होगा; यदि कोई मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा। (यूहन्ना 12:26)।

एक नौकर का विवरण

यीशु के दिन में, एक सेवक और एक दास एक ही बात थी । वे स्वामी के स्वामित्व में थे। दास अपने स्वामी की वसीयत करने के लिए मौजूद था। प्रभु यीशु की इच्छा को करने में शिष्यों ने कभी संकोच नहीं किया। उन्होंने उससे सवाल पूछे, लेकिन उन्होंने उसे आंशिक रूप से समझ से बाहर कर दिया और आंशिक रूप से भरोसे से बाहर हो गए। उन्हें विश्वास था कि यीशु उनका सही तरीके से नेतृत्व करेंगे और उन्होंने हमेशा किया।

2) अपने गुरु को त्यागना

हमें अपने स्वयं के जीवन की जांच करने की आवश्यकता है। क्या वास्तव में मसीह हमारा स्वामी है? क्या हम वास्तव में उसे प्रस्तुत करते हैं? यीशु ने हमें बताया कि हम जिसे प्रस्तुत करते हैं वह हमारा स्वामी है।

यीशु ने उन को उत्तर दिया; मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है। "

(यूहन्ना 8:34)।

... वे उन्हें स्वतंत्र होने की प्रतिज्ञा तो देते हैं, पर आप ही सड़ाहट के दास हैं, क्योंकि जो व्यक्ति जिस से हार गया है, वह उसका दास बन जाता है।

(2 पतरस 2:19)।

3) एक मास्टर पर निर्णय लेना

हममें से कई लोग किसी के साथ हमारे स्वामी होने के लिए संघर्ष करते हैं। इतने सारे हमारी सेवा या वफादारी चाहते हैं! एक सेवक, हालांकि, दो या अधिक स्वामी की सेवा नहीं कर सकते। वह एक के प्रति निष्ठावान होना चाहिए। स्पष्ट रूप से किसी भी संघर्ष की पहचान करें और अपनी प्रतिबद्धता को स्पष्ट करें।

कोई दास दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकताक्योंकि वह तो एक से बैर और दूसरे से : प्रेम रखेगा; या एक से मिल रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगातुम परमेश्वर और धन दोनों की : सेवा नहीं कर सकते॥ (लूका 16:13)।

4) मसीह की सेवा करने के लिए उद्धार!

मसीह ने हमें अपनी स्वार्थी इच्छाओं का पालन करने से मुक्त कर दिया है। उन इच्छाओं को उत्पन्न करने वाले पापी स्वभाव को 'शरीर' या 'पुराना आदमी' कहा जाता है। मसीह में विश्वास के माध्यम से, हम परमेश्वर की सेवा करने के लिए स्वयं से मुक्त हो जाते हैं। "*ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो।*" (रोमियों 6:11)। इच्छाएँ हो सकती हैं, लेकिन हमें उनका पालन नहीं करना चाहिए।

मसीह हमारा नया गुरु है। हम अब शरीर की इच्छाओं का पालन करने के लिए बाध्य नहीं हैं। आपको यौन वासनाओं को, झूठ बोलने, चुराने या पालन करने के लिए लुभाया जा सकता है। ये इच्छाएँ आपकी आज्ञाकारिता का दावा करने की कोशिश कर रही हैं। इसके बजाय मसीह का पालन करने के अपने दायित्व पर ध्यान दें। उन इच्छाओं को भावनाओं और विचारों को अस्वीकार करें। पवित्र आत्मा के माध्यम से मसीह पर अपना मन स्थिर करें और उसकी सेवा करने का आपका वादा किया हुआ दायित्व।

शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है। (रोमियों 8: 6)।

आवेदन

क्या आप अपनी पुरानी इच्छाओं से उत्पन्न तनाव से परिचित हैं जो आपको उनकी सेवा करने की कोशिश कर रहे हैं? आपके द्वारा किए गए अंतिम प्रलोभन का आपने क्या जवाब दिया?

व्यावहारिक रूप से दूसरों की सेवा करना

मसीह की सेवा के रूप में दूसरों की सेवा करना

मसीह के पास एक दूसरे की सेवा करने के बारे में बहुत कुछ था।

1) मसीह की सेवा करने की आज्ञा

उसके शिष्यों के लिए सेवा कोई विकल्प नहीं है। मसीह के शिष्यों के रूप में, हम एक दूसरे से प्यार करते हैं। हमें वास्तव में अपने भाइयों और बहनों से प्यार करने की आज्ञा है। "*इन बातें की आज्ञा मैं तुम्हें इसलिये देता हूं, कि तुम एक दूसरे से प्रेम रखो।*" (यूहन्ना 15:17)।

2) मसीह की विनम्र सेवा का उदाहरण है

यीशु ने हमें एक उदाहरण दिया कि वह कैसे चाहता है कि हम दूसरों की सेवा करें।

तुम मुझे गुरू, और प्रभु, कहते हो, और भला कहते हो, क्योंकि मैं वही हूं।यदि मैं ने प्रभु और गुरू होकर तुम्हारे पांव धोए; तो तुम्हें भी एक दुसरे के पांव धोना चाहिए।क्योंकि मैं ने तुम्हें नमूना दिखा दिया है, कि जैसा मैं ने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो।मैं तुम से सच सच कहता हूं, दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं; और न भेजा हुआ अपने भेजने वाले से। (यूहन्ना 13 :13 -16)।

ऊपर के छंदों में प्रभु और सेवक शब्द को रेखांकित करें। यीशु अपने शिष्यों को यहाँ क्या करने की आज्ञा दे रहा है? अपना उत्तर दें।

3) नेतृत्व सेवा की विशेषता है

सेवा उन लोगों की एक विशेष विशेषता है जो मसीही नेतृत्व के किसी भी रूप में हैं। नोट यीशु के चौंकाने वाले शब्द।

उन में यह वादविवाद भी हुआ-; कि हम में से कौन बड़ा समझा जाता हैउस ने उन से कहा, अन्यजातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं; और जो उन पर अधिकार रखते हैं, वे उपकारक कहलाते हैं। परन्तु तुम ऐसे न होना; वरन जो तुम में बड़ा है, वह छोटे की नाईं और जो प्रधान है, वह सेवक की नाईं बने।क्योंकि बड़ा कौन है; वह जो भोजन पर बैठा या वह जो सेवा करता है? क्या वह नहीं जो भोजन पर बैठा है? पर मैं तुम्हारे बीच में सेवक की नाईं हूं। (लूका 22: 24-27)।

• यीशु के चेले किस बारे में बहस कर रहे थे? _____

• ऊपर दिए गए मार्ग में नेतृत्व के दो विरोधी रूपों को रेखांकित करें।

4) विश्वासयोग्य सेवा महान पुरस्कार लाती है

प्रतिभाओं के दृष्टांत में यीशु ने उन लोगों को पुरस्कृत करने में परमेश्वर की प्रसन्नता को प्रकट किया, जो उनकी ईमानदारी से सेवा करते हैं। एक 'प्रतिभा' धन का एक बड़ा योग है (उदाहरण के लिए, 100 पाउंड का सिलवर)।

और जिस को दो तोड़े मिले थे, उस ने भी आकर कहा; हे स्वामी तू ने मुझे दो तोड़े सौंपें थे, देख, मैं ने दो तोड़े और कमाएं। उसके स्वामी ने उस से कहा, धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा, मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो। (मत्ती 24:22 -23)

• सेवक ने कैसे ईमानदारी से अपने मालिक की सेवा की? अपना उत्तर ऊपर दें।

आवेदन

दूसरों की सेवा करने के प्रति अपने दृष्टिकोण पर एक पल को प्रतिबिंबित करें। आप खुशी-खुशी दूसरों की सेवा कैसे करते हैं जो परमेश्वर ने आपको दिया है चाहे वह धन हो, घर हो, ताकत हो, ज्ञान हो या प्राकृतिक प्रतिभा हो?

सारांश

a) हम आत्म निष्ठा से पिता की सेवा करते हैं जैसा कि मसीह ने स्वयं को वह करने के लिए उपलब्ध कराया जो वह चाहता है।

b) हम नियमित रूप से और आसानी से यीशु का पालन करते हैं।

c) हम खुशी-खुशी और विश्वासपूर्वक दूसरों की सेवा करते हैं।

होम प्रोजेक्ट लें

- **स्मृति छंद: फिलिप्पियों 2: 5-7**

अपने आप में यह रवैया रखें जो मसीह यीशु में भी था, जो यद्यपि वह परमेश्वर के रूप में अस्तित्व में था, उसने परमेश्वर के साथ समानता का अर्थ नहीं समझा कि उसे समझा जाए, लेकिन खुद को खाली कर दिया, एक अनुबंध -सेवक के रूप में, और होने के नाते पुरुष की समानता में बनाया गया।

- **खोजें और परोसें**

क्या आप दूसरों की जरूरतों पर ध्यान देते हैं और पूछते हैं कि क्या आप उनकी मदद कर सकते हैं? यह प्रत्येक मसीही का कार्य है। तीन विशेष जरूरतों को पूरा करें जिन्हें आप पूरा कर सकते हैं। परमेश्वर उन जरूरतों को पूरा करने में मदद करने के लिए कहें और एक नौकर मानसिकता के साथ जो आवश्यक है वह करें।

- **परमेश्वर की महिमा के लिए अपने धन का उपयोग करना**

हम अपने ज्ञान, प्रतिभा और धन सहित हमें जो कुछ दिया है, उसके हम निष्ठावान हैं। क्या आप प्रत्येक सप्ताह परमेश्वर के काम (चर्च) को देते हैं? मसीहीयों को अपनी वास्तविक आय का कम से कम दस प्रतिशत (दशमांश) देना चाहिए। यह आज्ञाकारिता है। विचार करना शुरू करें कि आप अपने राज्य को आगे बढ़ाने के लिए अपने संसाधनों को रणनीतिक रूप से कैसे निवेश कर सकते हैं? उदाहरण के लिए, शायद इस साल आप मिशनों को 5% देने की योजना बना सकते हैं। प्रत्येक वर्ष थोड़ा जोड़ें!

- **मसीही के कार्य को लेना**

हम सभी को लगता है कि कोई ऐसा व्यक्ति है जो हमें काम को करने के लिए कहता है। यह आपका बॉस, माता-पिता या सरकारी अधिकारी हो सकता है। हममें से कुछ लोग गर्व से सोचते हैं कि हमारा रास्ता 'उससे बेहतर है जो हमें करने के लिए कहा जा रहा है। जब हम इसे अपने तरीके से करते हैं, तो हम अक्सर महसूस करते हैं कि हमें झूठ बोलने की ज़रूरत है। इसे पाप मानो। जिस तरह से आपको निर्देशित किया जाता है, वैसे ही सभी काम करें। इस अनुमति को मैं वास्तव में परमेश्वर का आशीर्वाद बनना चाहता हूं _____ व्यवहार बातों पर ध्यान दें । परिणामों के साथ-साथ अपनी आत्मिक पत्रिका में आपको जिन चीजों को बदलने की आवश्यकता है उन पर ध्यान दें।

क्रूस प्रशिक्षण

संबंधपरक शिष्यत्व

#9 उद्धारक ⟷ चुना हुआ

प्यार में बढ़ रहा है

परमेश्वर और दूसरों के लिए!

उद्धारक और चुना

मेरे लिए भगवान का डिज़ाइन

यद्यपि यह व्यवसायिक शब्द 'मुक्त करने वाला' (खरीदने वाला) अवैयक्तिक लगता है, यह परमेश्वर के प्रति हमारी व्यक्तिगत भक्ति को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक बार जब हम समझ जाते हैं कि हम क्या कर रहे हैं (कुछ भी नहीं; निर्णय के योग्य) और समझें कि परमेश्वर ने हमारे लिए क्या भुगतान किया है (मसीह का जीवन), हमारा दिल उनके प्यार से चलायमान हो गया हैं। उनके प्यार से विनम्र, हम उनके शानदार नाम के लिए दूसरों की सेवा करके खुशी से जवाब देते हैं।

अवांछित की इच्छा करना

बहुत से लोग अवांछित होने के साथ संघर्ष करते हैं। जैसे-जैसे परिवार का ढांचा बिगड़ता है, आत्म-घृणा बढ़ती है। व्यस्त माता-पिता से अस्वीकृति का अनुभव करके, वे सवाल करते हैं कि क्या उनका कोई वास्तविक मूल्य है। प्रेम के बिना वे प्रेम करना नहीं जानते। वे रास्ते में महसूस करते हैं। '

कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम दूसरों को कितना अस्वीकार करते हैं, परमेश्वर का परिवार बहुत अलग है। परमेश्वर वास्तव में हमारी परवाह करता है। उनके प्यार की घोषणा, साबित और जानबूझकर की जाती है। "*जैसा उस ने हमें जगत की उत्पति से पहिले उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों*\" (इफिसियों 1: 4)।

परमेश्वर पूरे शास्त्रों में हमें उसकी विशेष पसंद का उल्लेख करते हैं। हमारे लिए उनकी पसंद उनके विशेष ध्यान और पक्ष को प्रकट करती है। "फिर भी तुम्हारे पिता ने यहोवा से प्रेम करने के लिए अपना स्नेह निर्धारित किया, और उसने चुना

तौभी यहोवा ने तेरे पूर्वजों से स्नेह और प्रेम रखा, और उनके बाद तुम लोगों को जो उनकी सन्तान हो सर्व देशों के लोगों के मध्य में से चुन लिया, जैसा कि आज के दिन प्रगट है\"(व्यवस्थाविवरण 10:15)।

हम जानते हैं कि जिस तरह उसने यीशु मसीह, उसके एक और एकमात्र पुत्र को भेजा था, उसे मरने और हमारे अपराध का भुगतान करने के लिए परमेश्वर हमसे प्यार करता है।

धर्मी मर गया हम अधर्मी लिए। जैसा कि हम इस सच्चाई को अपने दिलों को छूने की अनुमति देते हैं, हम बहुत विनम्र और अभिभूत हैं कि परमेश्वर हमें हमेशा के लिए अपना क्यों चुनेगा।

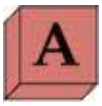

परमेश्वर ने हमें चुना

अपने अयोग्य एहसान का सम्मान करते हुए

1) ईश्वर की कृपा की आवश्यकता

हम हर समय खरीदारी करते हैं। हम कुछ सब्जियाँ या एक किताब खरीद सकते हैं। एक वस्तु खरीदने से पहले, हालांकि, चयन का एक बिंदु है। हमें निर्णय लेना चाहिए कि हम क्या खरीदेंगे। उत्पाद की तलाश करते समय, हम गुणवत्ता, उपयोगिता और लागतों पर विचार करते हैं। कुछ मामलों में हम आइटम खरीदते हैं।

उद्धार इस तरह है, लेकिन इसके मतभेद हैं। हमारा अपना कोई निहित मूल्य नहीं था। भले ही मानव जाति के परमेश्वर की छवि में बने थे, हमने उसके खिलाफ पाप किया था। केवल एक बात जिसके हम वास्तव में हकदार थे, वह था न्याय। " *हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया॥*" (यशायाह 53: 6)। वह बाद में कहता है, " *किंतु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उस का मुँह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता।*" (यशायाह 59: 2)।

कुछ अच्छे काम या यहाँ तक कि वे हमारे पापों को खत्म करने वाले नहीं हैं। कोई भी इसका अपवाद नहीं है। हम सभी को ईश्वर की कृपा चाहिए।

2) अनुग्रह को रोकना

प्रभु सभी को एक सामान्य प्रेम दिखाता है। वह भोजन और बारिश प्रदान करता है। सरकारों और संस्कृतियों के माध्यम से वह पाप करने की हमारी प्रवृत्ति को रोकता है। ध्यान दें कि प्रभु हमें और भी अधिक पाप करने से कैसे रोकते हैं। " *जैसा यशायाह ने पहिले भी कहा था, कि यदि सेनाओं का प्रभु हमारे लिये कुछ वंश न छोड़ता, तो हम सदोम की नाईं हो जाते, और अमोरा के सरीखे ठहरते॥*" (रोमियों 9:29)। परमेश्वर की कृपा से हम उतने बुरे नहीं हैं जितना कि हम अन्यथा होंगे।

3) विशेष अनुग्रह

उनकी अद्भुत दयालुता में प्रभु ने अपने पापों से लोगों के एक महान मेजबान को बचाने का फैसला किया। वह उनके साथ अपने रिश्ते को बहाल करेगा। उसे ऐसा करने की जरूरत नहीं थी। उसने ऐसा करने के लिए चुना। यही कारण है कि यह सोचना एक बेईमानी है कि कोई बचाए जाने का हकदार है। एक बार जब यह योग्य है, तो यह अब अनुग्रह नहीं है, लेकिन काम करता है, कुछ के लिए काम किया और कमाया।

" *क्योंकि वह मूसा से कहता है, मैं जिस किसी पर दया करना चाहूं, उस पर दया करूंगा, और जिस किसी पर कृपा करना चाहूं उसी पर कृपा करूंगा।"* (रोमियों 9:16)।

" *तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है और तुम्हें ठहराया ताकि तुम जाकर फल लाओ; और तुम्हारा फल बना रहे, कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो, वह तुम्हें दे।"* (यूहन्ना 15:16)।

हम इस सच्चाई से दीन हैं। उसने हमें मसीह में चुना (हमें चुना) इसलिए नहीं कि हम बेहतर थे या अधिक थे, बल्कि केवल इसलिए कि वह अपने पक्ष को हमारे जीवन में लाना चाहता था। हम चुने गए। अनंत काल से उसने मसीह में हमें अपना होने के लिए चुना। " *और दया के बरतनों पर जिन्हें उस ने महिमा के लिये पहिले से तैयार किया, अपने महिमा के धन को प्रगट करने की इच्छा की*" (रोमियों 9:23)।

प्रतिबिंब

एक साल से अधिक के लिए मेरे बेटे सड़कों पर और कारों के नीचे और किसी भी खाली जगह के पीछे पेड़ों के नीचे भागते दिखाई देंगे, जो दूसरों ने फेंक दिए। ने क़ीमती चीज़ों को खारिज कर दिया जो दूसरों ने अस्वीकार कर दिया था। एक वृद्ध व्यक्ति अपने ट्रक के साथ आएगा और सभी एकत्रित किए गए डिब्बे एकत्र करेगा। अवांछित डिब्बे से आय चिकित्सा अनुसंधान को बाहर करने में मदद करेगी। इसी तरह परमेश्वर अस्वीकार को चुनता है।

हम परमेश्वर द्वारा उनके विशेष कार्य के लिए चुने जाने के लायक नहीं हैं, लेकिन हम उनके लोगों के रूप में हैं। अपने दिल को शांत करें और आपको हमेशा और हमेशा के लिए उनका विशेष बच्चा चुनने के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें।

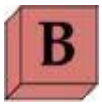

परमेश्वर ने हमें खरीदा
प्रेम की ऊंची कीमत

1) प्रतिबद्धता

निर्णयों के लिए प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है। हम कह सकते हैं, "मुझे वह पसंद है!" जब किसी स्टोर में कपड़ों के कुछ टुकड़े के बारे में बात की जाती है, लेकिन इसे खरीदने के समान नहीं है। कुछ लोग पीपुल्स विंडो शॉप। 'वे केवल यह देखते हैं कि कुछ खरीदने के बजाय बिक्री के लिए क्या है। परमेश्वर एक उदार मूड में कह सकते हैं कि वह हमें बचाना चाहते थे। हालांकि, वास्तव में हमें बचाने के समान नहीं है। प्रभु ने हमें बचाने के लिए खुद को करने के लिए बचाने की अपनी इच्छा का पालन किया जो हमें बचाने के लिए आवश्यक था।

2) छुटकारे का अर्थ

शब्द रिडीम 'और रिडेम्पशन' का अर्थ 'खरीदने से है।' हमारे मामले में हमें भगवान के क्रोध के लिए सौंप दिया गया था और शैतान के नियंत्रण में थे। परमेश्वर ने हमें मसीह के रक्त से भुनाया (खरीदा) है, धन या अन्य चीजों के साथ नहीं। (1 पतरस 1: 18-19) के रूप ।

उपरोक्त शब्द। रिडीम्ड 'का उपयोग तब किया जाता था जब एक दास दूसरे व्यक्ति से खरीदा जाता था। स्वामित्व एक सहमत लागत पर स्थानांतरित किया गया था। " ***उ****सी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया।जिस में हमें छुटकारा अर्थात पापों की क्षमा प्राप्त होती है*।" (कुलुस्सियों 1: 13-14)।

3) खरीद मूल्य

कुछ लोगों को इस बात का एहसास नहीं है कि यीशु को किस कारण से नुकसान उठाना पड़ा। आप कहते हैं कि वे यीशु के प्यार को पसंद करते हैं, लेकिन रक्त और क्रॉस के गोरे की तरह नहीं। हालांकि, वे एक साथ चलते हैं, और अलग नहीं किए जा सकते। अपने स्वयं के क्रोध से वास्तव में हमें बचाने के लिए भगवान की प्रतिबद्धता को पूरा करने के लिए, उन्होंने हमारे लिए मसीह पुत्र को पीड़ित करने और मरने के लिए भेजा। क्रॉस हमें अपने लोगों को बचाने के लिए भगवान की वास्तविक प्रतिबद्धता की याद दिलाता है।

रन्तु वह हमारे ही अपराधो के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाएं। हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया॥ (यशायाह 53: 5-6)।

उपरोक्त कविता में तीन बार रेखांकित करें जहां मसीह से हमारे द्वारा दंड का हस्तांतरण लिया गया था। अधर्म और उसका निर्णय हमारा था। परमेश्वर पाप को नजरअंदाज नहीं कर सकते, लेकिन उनका न्याय एक विकल्प भुगतान स्वीकार करता है। अर्थात्, मसीह ने हमारे लिए हमारे ऋण का भुगतान किया। वह हमारे लिए मर गया।

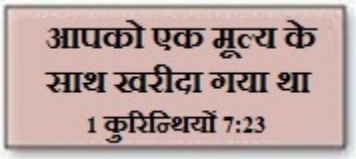

पाप के कारण, कभी-कभी दुख को अधिक अच्छा करने के लिए आवश्यक होता है। यह वही है जो ईश्वर ने ईसा मसीह के माध्यम से किया था। अब उनके पुनरुत्थान के साथ हम अपनी क्षमा के बारे में अधिक से अधिक अच्छा देखते हैं।

आवेदन

परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने में सक्षम होना एक आरामदायक या आसान जीवन की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है। परमेश्वर भी हमें बुला सकते उनके नाम के लिए कष्ट और सताया जा सकता है। प्रभु को बताएं कि वह आपकी संपत्ति और यहां तक कि आपके जीवन से भी अधिक महत्वपूर्ण है।

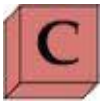

हम उससे संबंधित हैं

दूसरों के लिए परमेश्वर की दया व्यक्त करना

1) मुश्किल लोगों के साथ काम करना

हम सभी के लिए मुश्किल समय है। इन कठिन समयों में अधिकांश कठिन लोगों के साथ करना है। मिसाल के तौर पर, यीशु को अपने चारों ओर के ईर्ष्यालु नेताओं के कारण नुकसान उठाना पड़ा। परमेश्वर ने अपने दुख का इस्तेमाल एक बड़ा भला करने के लिए किया।

मसीह ने परमेश्वर पर भरोसा किया कि सब कुछ सही होगा। और यह किया। उसी तरह हमें परमेश्वर पर भरोसा करने की ज़रूरत है कि हमारी कठिन परिस्थितियाँ पूरी तरह से उसके नियंत्रण में हैं। हमारे पास सीखने के लिए बहुत कुछ है ताकि हम इन लोगों को सही तरीके से जवाब दे सकें। हमें मसीह की तरह रहने पर ध्यान देना चाहिए। नीचे दिए गए रवैये पर ध्यान दें।

इसलिये कि उसे पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुख भोगना और उत्तम लगा। (इब्रानियों 11:25)।

2) मुश्किल लोगों को सही जवाब देना

जब हम मुश्किल लोगों को सही जवाब देते हैं, तो हम परमेश्वर की बुद्धि और प्रेम दोनों का संचार करते हैं। क्रोध, कड़वाहट या ईर्ष्या द्वारा खराब प्रतिक्रियाएं चिह्नित की जाती हैं। उदारता से उन्हें परमेश्वर की दया दिखाने के बजाय, हम उनके खिलाफ उनके पाप को पकड़ते हैं। यहाँ कुछ तरीकों से दूसरों पर अनुग्रह करने का तरीका बताया गया है क्योंकि परमेश्वर ने हमारे साथ व्यवहार किया है।

 # 1 एक निर्णय लें।

हमेशा लोगों से बेहतर व्यवहार करने का फैसला करें, जिसके वे हकदार हैं।

 # 2 भगवान के प्यार को याद रखें।

आपके लिए परमेश्वर का प्यार कभी नहीं रुकता भले ही अन्य लोग आपके साथ खराब व्यवहार करते हों, आपका मूल्य आपके कार्यों से नहीं बल्कि परमेश्वर यीशु मसीह में परमेश्वर की अनंत कृपा से आता है।

 # 3 अपने दुश्मनों के लिए प्रार्थना करो।

अपने दुश्मनों के लिए प्रार्थना करें। कभी बदला न लें।

 # 4 भगवान की बुद्धि में आनन्दित

ऐसे कठिन समय में वह विशेष रूप से आपकी देखभाल कैसे करेगा, इस पर भरोसा करके परमेश्वर पर अपना भरोसा बनाए रखें। आपको मुकदमों की आवश्यकता नहीं है। आपको अपना अधिवक्ता होना चाहिए।

 # 5 प्रत्येक अवसर का अधिकतम लाभ उठाएं।

इसे परमेश्वर के प्रेम पर पारित होने के लिए अपने विशेषाधिकार पर विचार करें जो अन्यथा एक बहुत बुरी स्थिति होगी।

 # 6 नहीं बजना

अपनी प्रतिबद्धता से आगे न बढ़ें। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह आपका मित्र है जो आपको धोखा देता है या आप अपना घर या नौकरी खो देते हैं। शत्रु को प्यार करना परमेश्वर का एक बड़ा चमत्कार है, और उसने आपको कार्य के लिए चुना है। उसकी महिमा के लिए अच्छा करो।

क्योंकि यदि तुम ने अपराध करके घूंसे खाए और धीरज धरा, तो उस में क्या बड़ाई की बात है? पर यदि भला काम करके दुख उठाते हो और धीरज धरते हो, तो यह परमेश्वर को भाता है। (1 पतरस 2:20)।

आवेदन

हर किसी से बेहतर व्यवहार करने का निर्णय लें, जिसके वे हकदार हैं। समझदारी से उन लोगों के लिए सोचें और प्रार्थना करें जो आपको नाराज कर सकते हैं जैसे कि आपके: पति / पत्नी, बच्चे, माता-पिता, दोस्त, सहकर्मी या पागल ड्राइवर। आप उन लोगों के लिए मसीह के प्रति परमेश्वर के प्रेम को दोहराने जा रहे हैं जो इसके योग्य नहीं हैं।

सारांश

a) मैं हमेशा उसकी पसंद के लिए प्रभु का आभारी रहूंगा।

b) मैं ईश्वर की इच्छा पूरी करूंगा चाहे वह कितना भी कठिन क्यों न हो।

c) मैंने दूसरों के प्रति दयालु होने का निर्णय लिया है क्योंकि जब यह कठिन होते हुए भी परमेश्वर ने मुझ पर कृपा की है

होम प्रोजेक्ट लें

- **मेमोरी वर्सेज कोलोसियन 1: 13-14**

  उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया। जिस में हमें छुटकारा अर्थात पापों की क्षमा प्राप्त होती है।

- **हमारी भक्ति को गहरा करो**

  हम स्वामित्व में हैं। हमें कीमती माना जाता है। हम परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह की कीमत से बता सकते हैं कि परमेश्वर हमसे कितना प्यार करता है। हम अब उसी के हैं। हमारे दिल वफादारी, प्यार और कर्तव्य से भरे हुए हैं। उसने हमें हमेशा के लिए अपना छुटकारा दे दिया है।

  इस सत्य का ध्यान करने के लिए इस सप्ताह में 15 मिनट तीन बार सेट करें। नीचे लिखें जब आप ऐसा करेंगे। आप किसी भी ऐसे छंद का उपयोग कर सकते हैं जो आपको परमेश्वर के प्रेम पर विचार करने में मदद करता है। यह सोचें कि उसका होना कितना खास है और आप उसकी कृपा प्राप्त करने के लिए कितने अवांछनीय हैं। आपके पास अपने विचारों को लिखने का विकल्प है, लेकिन अपने विचारों को साझा करने के लिए किसी अन्य व्यक्ति को खोजें।

- **कठिनाई में दृढ़ रहना**

  - ईश्वर के प्रति वफादार रहने के लिए आपको सबसे कठिन काम करना होगा। क्या यह आपने किया? परिणाम क्या था?

  - अपनी आत्मिक पत्रिका में अपने दैनिक जीवन में आपके सामने आने वाले तीन कठिन लोगों या स्थितियों को पहचानें।

क्रूस प्रशिक्षण

संबंधपरक शिष्यत्व

#10 आधारशिला ⟷ पत्थर

प्यार में बढ़ रहा है

परमेश्वर और दूसरों के लिए!

आधारशिला और पत्थर

मेरे लिए परमेश्वर का डिज़ाइन

पवित्रशास्त्र हमें बताता है कि मसीह को परमेश्वर की शानदार आत्मिक इमारत, उनके मंदिर के लिए महत्वपूर्ण आधार या आधारशिला चुना गया था। यह जानकर हैरानी होती है कि मसीही जीवित 'पत्थर हैं, जिसमें इस आत्मिक इमारत का समावेश है। हमारी अद्‌वितीय स्थिति इस बात के बारे में शक्तिशाली रूप से बताती है कि हम मसीह और अन्य जीवित 'पत्थरों से कैसे संबंधित हैं!

पिछले करने के लिए बनाया

यीशु ने अपने और अपने अनुयायियों का वर्णन करने के लिए कई अलग-अलग प्रतीकों का इस्तेमाल किया। आधारशिला एक वास्तुशिल्प शब्द है। आधारशिला मुख्य नींव का पत्थर है जिसमें से अन्य सभी इमारत ब्लॉकों को मापा और संरेखित किया जाता है। यीशु मसीह नए आत्मिक मंदिर के लिए आधारशिला है जिसे बनाया जा रहा है।

इसलिये प्रभु यहोवा यों कहता है, देखो, मैं ने सिय्योन में नेव का पत्थर रखा है, एक परखा हुआ पत्थर, कोने का अनमोल और अति दृढ़ नेव के योग्य पत्थरऔर जो कोई : विश्वास रखे वह उतावली न करेगा। (यशायाह 28:16)

70 ईस्वी में यहूदी मंदिर को नष्ट कर दिया गया था। यह नया 'भवन' क्या है जिसमें मसीह की आधारशिला है? परमेश्वर ने मसीह को अपने नए 'मंदिर,' आधारशिला में पहला और सबसे महत्वपूर्ण पत्थर 'नियुक्त किया। परमेश्वर ने उसे एक विशेष रूप से बनाये गए भवन की आधारशिला के रूप में तैनात किया। जब हम विश्वास करते हैं और यीशु मसीह का अनुसरण करते हैं तो हमारी आशा सुनिश्चित होती है।

यह नया मंदिर कलिसिया है, परमेश्वर के सभी लोग मसीह पर निर्मित हैं। हम जो मसीह में विश्वास करते हैं, वे आलंकारिक पत्थर हैं जो इस इमारत को एक साथ मिलकर परमेश्वर के शानदार नए मंदिर का निर्माण करते हैं जहां परमेश्वर रहते हैं।

और मूरतों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बन्ध? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर का मन्दिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा है कि मैं उन में बसूंगा और उन में चला फिरा करूंगा; और मैं उन का परमेश्वर हूंगा, और वे मेरे लोग होंगे। (2 कुरिन्थियों 6 :16)

परमेश्वर के डिजाइन को गले लगाओ

मसीह ने आधारशिला के रूप में परमेश्वर की योजना को अपनाया

मसीह का उदाहरण

मसीह ने निर्विवाद रूप से अपने जीवन के लिए अपने पिता की इच्छा को अपनाया। उन्होंने विश्वास किया कि परमेश्वर की योजना सबसे अच्छी थी। उनका मानना था कि परमेश्वर की महान मोक्ष योजना को पूरा करने के लिए सभी मिलकर काम करेंगे। " उसके पास आकर, जिसे मनुष्यों ने तो निकम्मा ठहराया, परन्तु परमेश्वर के निकट चुना हुआ, और बहुमूल्य जीवता पत्थर है। " (1 पतरस 2: 4)।

उपरोक्त कविता में उस शब्द को सर्कल करें जिसमें कहा गया है कि लोगों ने यीशु के साथ कैसा व्यवहार किया। परमेश्वर ने मसीह के बारे में कैसे सोचा, यह वर्णन करते हुए शब्दों को रेखांकित करें।

2) परमेश्वर की सामान्य योजना

आधारशिला मुख्य नींव का पत्थर है जिसे हर दूसरे पत्थर के साथ जोड़ा जाता है। एक अद्भुत इमारत खड़ी करने के लिए, इसमें एक भरोसेमंद और ठोस आधारशिला होनी चाहिए। पूरी इमारत उस पर निर्भर थी। हम जानते हैं कि प्रभु ने न केवल आधारशिला को चुना बल्कि दीवारों के निर्माण के लिए प्रत्येक भवन खंड या पत्थर का चयन किया।

जिस में सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है। जिस में तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास स्थान होने के लिये एक साथ बनाए जाते हो॥ (इफिसियों 2: 21-22)।

हम परमेश्वर के लोगों के रूप में इस 'मंदिर के निर्माण का हिस्सा हैं। तीन वाक्यांशों को सर्कल करें जो वर्णन करते हैं कि क्या बनाया जा रहा है। अंदर ठीक होने के लिए, हमें यह स्वीकार करने की आवश्यकता है कि परमेश्वर ने हम में से प्रत्येक को कैसे रचा और बनाया है। याद रखें कि हमारा जीवन इस 'अंतिम' इमारत को ध्यान में रखकर बनाया गया है।

3) उनके भवन का विस्तार

प्रभु लोगों को बचाकर अपनी इमारत का विस्तार करता है। इस बचत प्रक्रिया को समझाने में मदद करने वाले 2 मार्ग लिखिए।

4) परमेश्वर की विशिष्ट डिजाइन

अपने जीवन के माध्यम से सोचो। क्या कोई ऐसी चीज़ है जो आप अपने जीवन के बारे में बदलना चाहेंगे? यहां कुछ ऐसे हैं जिन्हें लोग बदलना चाहते हैं: पृष्ठभूमि। भौतिक विशेषताएं, सामाजिक आर्थिक मानक, जाति, लिंग, राष्ट्रीयता, अन्य।

परमेश्वर आपको वैसे ही चाहते हैं जैसे आप हैं! 'अपरिवर्तनीय' को हमारे जीवन में बनाया गया है ताकि आप उनके नए मंदिर में अच्छी तरह से काम कर सकें। ऐसी चीजें हैं जो हमें अपने पापी विचारों और निर्णयों की तरह बदलनी चाहिए। हालांकि, अपरिवर्तनीय स्वीकार किया जाना चाहिए और गले लगाया जाना चाहिए।

हम अपने जीवन के लिए अपने बुद्धिमान परमेश्वर की योजना में आनन्दित हैं और उनकी सेवा करें जैसे यीशु ने किया था भले ही इसका मतलब है कि हम दूसरों द्वारा अस्वीकार कर दिए गए हैं।

आवेदन

1) उपरोक्त किसी भी पहलू को रेखांकित करें जिसे आप बदलना चाहते हैं।

2) अपने पाप को कबूल करो और मसीह से क्षमा मांगो।

3) तुम जैसे हो वैसे ही तुम्हें बनाने के लिए परमेश्वर की स्तुति करो! नीचे दी गई जगह में अपने बारे में कम से कम 10 अपरिवर्तनीय चीजों की सूची बनाएं। उनमें से प्रत्येक के लिए परमेश्वर की स्तुति करो।

यीशु पर ध्यान दें

मसीह अब हमारी आधारशिला है

1) आधार

प्रत्येक इमारत का पत्थर पूरी इमारत में आधारशिला के संरेखण द्वारा फिट है। नीचे 'कोने के पत्थर' शब्द को सर्कल करें।

इसलिये तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए।और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नेव पर जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है, बनाए गए हो। (इफिसियों 2: 19-20)

क्या नींव बनाता है? _____

परमेश्वर के कलीसिया की नींव संबंधी शिक्षाओं को पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं और नए नियम के प्रेरितों के माध्यम से स्थापित किया गया है। हमें उन लोगों की शिक्षाओं को अस्वीकार करना चाहिए जो धर्मग्रंथों से भिन्न हैं क्योंकि वे न केवल प्रेरितों के उपदेश को अस्वीकार करते हैं बल्कि मसीह के शिक्षण को भी अस्वीकार करते हैं।

2) व्याकुलता

बुराई में से एक रणनीति हमारी आँखों को यीशु की आधारशिला से प्राप्त करना है। कुछ मसीही पादरी और शिक्षक दूसरों को खुश करना चाहते हैं। वे लोग तारीफ सुनना पसंद करते हैं। कुछ अपने सुखों को संतुष्ट करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। पॉलुस हमें एक चेतावनी देता है कि हमें कैसे निर्माण करना है।

परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार, जो मुझे दिया गया, मैं ने बुद्धिमान राजमिस्री की नाईं नेव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है; परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे, कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है।

क्योंकि उस नेव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है कोई दूसरी नेव नहीं डाल सकता।और यदि कोई इस नेव पर सोना या चान्दी या बहुमोल पत्थर या काठ या घास या फूस का रद्दा रखता है। तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा; इसलिये कि आग के साथ प्रगट होगाऔर वह आग हर एक का काम परखेग ◌ी कि कैसा है। (1 कुरिन्थियों 3: 10-13)

सब कुछ इस बात से आंका जाएगा कि यह परमेश्वर की इमारत के नियम को कितना अच्छा अनुपालन करता है। निर्माण सामग्री को नींव से मेल खाना चाहिए, जो कि मसीह है। अपने खुद के जीवन के बारे में सोचो। आपको किस क्षेत्र में सबसे अधिक समस्या है? इसके आगे एक चेक मार्क लगाएं।

गर्व: एक अच्छी छवि पेश करके मेरे अहंकार को बढ़ाने की कोशिश करना।
ईर्ष्या: एक और व्यक्ति का ध्यान आकर्षित करना चाहता है।
ईर्ष्या: किसी ऐसी चीज की इच्छा करना जिसे दूसरे को कूल 'देखना है।
महत्वपूर्ण: खुद को दूसरे की तुलना में बेहतर बनाना।
जब हम यीशु के मापदंड को देखते हैं और जीते हैं, तो हम अपने विश्वास को प्रमाणित करते हैं। एक बार पतरस ने यीशु से यहुन्ना के भविष्य के बारे में पूछा। ध्यान दें कि यीशु की प्रतिक्रिया ने पतरस को कैसे ध्यान में वापस खींच लिया।

यीशु ने उससे कहा, यदि मैं चाहूं कि वह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे क्या? तू मेरे पीछे हो ले। (यूहन्ना 21:22)।

आवेदन

प्रार्थना के साथ इस खंड को बंद करें। प्रभु से आपको एक दिल देने के लिए कहें जो हमेशा मसीह यीशु पर केंद्रित हो। ऊपर दिए गए अपने चेक मार्क के अनुसार विचलित होने की अपनी प्रवृत्ति को स्वीकार करें। अपने जीवन के उस क्षेत्र को प्रभु के लिए प्रतिबद्ध करें और उसका उद्धार करें।

टीमवर्क और प्यार
मसीही जीवित पत्थर हैं

1) हमारी योजना

मसीही के पड़ोसी होने के आस-पास कभी भी नहीं पहुंच पाएंगे। 'परमेश्वर ने अपनी इमारत (मंदिर) को मसीहीयों से निर्मित होने के लिए बनाया था।

तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर बनते जाते हो, जिस से याजकों का पवित्र समाज बन कर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हों।(1 पतरस 2: 5)
हर मसीही एक _____ पत्थर है। ये पत्थर आत्मिक रूप से गतिशील हैं। वे अपना आकार बदलते हैं और आवश्यकतानुसार बढ़ते हैं!

2) हमारे रिश्ते

यह हम दैनिक जीवन में पाते हैं। ईसाइयों के रूप में, हमें लगातार अपनी अपेक्षाओं में समायोजन करने और एक दूसरे के बारे में अपनी समझ को गहरा करने की आवश्यकता है। जब एक साथी ईसाई हमसे असहमत होता है या चीजों को अलग तरह से करता है तो हमें परेशान नहीं होना चाहिए। नीचे दिए गए वाक्यांश को सर्कल करें कि यीशु दो बार उपयोग करता है।

मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि एक दूसरे से प्रेम रखो जैसा :मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दुसरे से प्रेम रखो। (यूहन्ना 13:34)।

3) हमारी प्रतिबद्धता

प्रेम वह तेल है जो मसीहीयों को एक-दूसरे की देखभाल करने के लिए रखता है। परमेश्वर का प्यार दो तरीकों से हमारे अपने जीवन को गहराई से प्रभावित करना चाहिए:

(१) विश्वास है कि अन्य मसीही महत्वपूर्ण और मूल्यवान हैं। हमें यह सच लगता है कि परमेश्वर ने उन्हें परमेश्वर के मंदिर का हिस्सा बनने के लिए विशेष रूप से फिट किया है। वे भी हमारी तरह ही 'जीवित' पत्थर हैं। एक पत्थर की दीवार जो गायब पत्थरों से टूट जाती है, बल्कि जल्दी से टूट जाती है।

(२) हम मसीह द्वारा "एक दूसरे से प्रेम करने" की प्रशंसा करते हैं। कोई फर्क नहीं पड़ता कि क्या होता है, चाहे हम गलत तरीके से नुकसान या शर्म करें, हम अभी भी एक दूसरे से प्यार करते हैं। हमारी प्रतिबद्धता हमारे लिए परमेश्वर के प्यार द्वारा आकारित है।
एक अन्य सिद्धांत महत्वपूर्ण है। क्योंकि हम परिपूर्ण नहीं हैं, हम सामंजस्य स्थापित करने के लिए हैं। हमें यह जानने की जरूरत है कि कैसे बिगड़ते रिश्ते को सीधा किया जाए।

प्रतिबिंब

मैंने एक बार एक भाई के साथ एक होटल का कमरा साझा किया था जो काफी अनुकूल था, लेकिन हम सेवकाई को कैसे आगे बढ़ाएं, इस पर मतभेद था। मैं दिखावा कर सकता था कि सब

कुछ ठीक है लेकिन वह धोखेबाज होगा। इसके बजाय मैंने उसे प्यार करना चुना। मैंने जानबूझकर परमेश्वर के शरीर के एक विशेष सदस्य के रूप में उसके बारे में सोचा। मैं उसके बिना नहीं कर सकता था। प्रार्थना के बाद इन सच्चाइयों को मेरे दिल को छूने की अनुमति देने के बाद, मैं वास्तव में उसकी जरूरतों की देखभाल करना शुरू कर सकता था। प्रभु ने मुझे अपनी कुछ चिंताओं को साझा करने के लिए अनुग्रहित किया। अन्य चिंताएँ जिन्हें मैंने परमेश्वर के हाथों में भरोसा किया।

आवेदन

एक मसीही के बारे में सोचो जिसके साथ आपको कठिनाई है। क्योंकि वह भी एक जीवित पत्थर है, उसे बहुत महत्वपूर्ण समझना शुरू करें। उसके महत्व के कारण, आप उसे प्रोत्साहित करने और उसकी मदद करने के लिए सब कुछ कर सकते हैं। यहां तक कि अतिरिक्त कदम उठाएं और उस मसीही के लिए परमेश्वर की प्रशंसा करें।

सारांश

A. मुझे जिस तरह से परमेश्वर ने मुझे बनाया है उसे पूरी तरह से स्वीकार करने की जरूरत है।

B. मेरे सभी फैसलों से प्रभु को खुश करना चाहिए।

C. मुझे "एक दूसरे से प्यार करने" के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए।

होम प्रोजेक्ट लें

स्मरणीय छंद 2 कुरिन्थियों 6:16

और मूरतों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बन्ध? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर का मन्दिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा है कि मैं उन में बसूंगा और उन में चला फिरा करूंगा; और मैं उन का परमेश्वर हूंगा, और वे मेरे लोग होंगे।

- **परियोजना सुलह**

एक साथी मसीही के बारे में सोचें जहां आपके रिश्ते में सुधार की आवश्यकता है। इन कदमों का अनुसरण करें।

1) प्रार्थना की भावना में, पता लगाएँ कि क्या आपकी कोई गलती है।

2) यदि ऐसा है, तो अपनी गलती परमेश्वर के सामने स्वीकार करें। दूसरे व्यक्ति के अपराधों की अनदेखी करें।

3) उस व्यक्ति से माफी मांगने का अवसर मांगें।

- अपने विशिष्ट पाप को स्वीकार करें।

- उसे आपसे क्षमा करने के लिए कहें।

- यदि आवश्यक हो तो बहाली करें।

कभी-कभी कोई व्यक्ति क्षमा नहीं करने का विकल्प चुनता है। आपने वही किया है जो आपकी तरफ से जरूरी है। व्यक्ति के लिए प्रार्थना करते रहें। अन्य लोग अपने पापों का उल्लेख करते हैं और क्षमा मांगते हैं। वह एक विशेष आशीर्वाद बन जाता है। धन्यवाद दो।

हमें इस प्रक्रिया से गुजरना चाहिए जब तक कि कोई गुम माफी न हो। एक बार हो जाने के बाद, ये सभी मुद्दे अतीत में चले जाते हैं। आप अपने साथी जीवित पत्थरों के निर्माण पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

• प्रोजेक्ट टीमवर्क

क्या आप जानते हैं कि 'जीवित पत्थरों' शब्द में टीम वर्क की बाइबिल की अवधारणा को दिखाया गया है? प्रत्येक पत्थर एक साथ मिलकर पूरी दीवार का निर्माण करता है। टीम वर्क बहुत प्रभावीता और काम के आनंद को जोड़ता है:

(१) कोई व्यक्ति स्पष्ट रूप से प्रभारी है,

(२) टीम के सदस्य प्रतिबद्ध हैं, और

(3) टीम के सदस्य एक-दूसरे की देखभाल करते हैं।

इस विचार के आलोक में अपने विवाह, परिवार, चर्च, सहयोगियों के बारे में सोचें। क्या कोई तरीका है जिससे आप अपनी स्थिति में बेहतर कर सकते हैं? कोई आवश्यक सुधार करें।

क्रूस प्रशिक्षण

संबंधपरक शिष्यत्व

#11 पति ⟷ पत्नी

प्यार में बढ़ रहा है

परमेश्वर और दूसरों के लिए!

पति और पत्नी

मेरी प्रतिबद्धता के प्रति वफादार

परमेश्वर ने पति और पत्नी के रिश्ते को बनाया और व्यवस्थित किया है। रिश्तों के इस सबसे अंतरंग के भीतर छिपे परमेश्वर ने हमें अपने लोगों के साथ उनके संबंधों की एक विशेष तस्वीर भी दी है। एकता बिना शर्त प्रतिबद्धता, पूर्ण पहचान, संपूर्ण स्नेह और एकजुट भक्ति की बात करती है। यह जोड़ी को भाषण, दृष्टिकोण और कार्रवाई में लगातार एक-दूसरे के निर्माण के लिए अतिरिक्त प्रेरणा प्रदान करता है।

एक बनना

सगाई की उत्सुकता में पकड़ा गया एक युगल अभी तक इस वास्तविकता में नहीं आया है कि उसे दूसरे पापी के साथ क्या करना है। वे अपनी आदर्शवादी आशाओं की रूमानियत में जीते हैं। विवाहित जीवन की वास्तविकताएं विवाह के समाप्त होने के बाद जल्दी से निपट जाती हैं। थोड़ी सी असहमति उनके विशेष प्रेम की झलकियों को जल्दी ही अपने वश में कर लेती है। असहमति का अर्थ यह नहीं है कि दंपति 'प्रेम से बाहर हो गए हैं' जैसा कि कुछ मान सकते हैं। इसके बजाय यह उन्हें सीखने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कहता है कि वास्तव में एक-दूसरे से कैसे प्यार करें।

प्रत्येक पति या पत्नी को एक अच्छी शादी के लिए नियमों द्वारा जीना सीखना चाहिए। बहुत सारे नहीं हैं, लेकिन वे है जरूरी। प्रभु ने हमें यह भी निर्देश दिया कि एक शानदार शादी कैसे करें, लेकिन एक खुशहाल शादी की अनदेखी नींव एक बुनियादी सच्चाई है। शादी एक बिना शर्त प्रतिबद्धता पर आधारित है। भगवान ने घोषणा की "दोनों एक हो जाएंगे।" वे अलग नहीं होते।

प्रतिबद्धता, वफादार बने रहने और किसी भी तरह की कोई बात नहीं होने की इच्छा है। जब तक आप दोनों जीवित रहेंगे प्रतिबद्धता के लिए शादी एक 'है। यही कारण है कि हमारे प्रभु विवाह संबंध का उपयोग करते हुए वह अपने लोगों के साथ होने वाली अंतरंगता की हमारी समझ को आगे बढ़ाते हैं।

मसीह प्रमुख है

अधिकार को समझें और उसकी सराहना करें

1) प्रमुखता और अधिकार को समझना

अधिकार एक बहुत ही गलत विषय है। आइए पहले देखें कि इस मामले के बारे में बाइबल क्या कहती है। नीचे के श्लोकों से रिक्त स्थान भरें। *क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्ता है।* (इफिसियों 5:23)।

_____ का मुखिया है _____

_____ का मुखिया है _____

उपरोक्त वाक्यों में है 'इन दोनों कथनों के तथ्य पर कोई प्रश्न नहीं छोड़ता है। क्या आप बिना किसी अपवाद के राज्य में ऐसा कर सकते हैं? क्यों या क्यों नहीं? क्या एक बुरा अनुभव इन सच्चाईयों को बदल देता है?

2) अधिकार के साथ संकट

यदि आपने पाखंडी नेताओं, ढीठ पतियों या सिर्फ मीडिया को देखा है, तो आप कई लोगों में से एक हो सकते हैं, जो किसी भी प्रकार के अधिकार का दृढ़ता से विरोध करते हैं। इसके साथ ही महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य एक दृढ़ता से नकारात्मक रवैया है कि ऐसी व्यवस्था से कुछ भी अच्छा हो सकता है। आधुनिक संदर्भ में एक महान शादी या एक अच्छा मसीही अनुभव प्राप्त करने के लिए तीन चुनौतियों का सामना करने और दूर करने के लिए यहां हैं।

(१) मनुष्य का मानना है कि उसे वह अधिकार है जो वह चुनना चाहता है। वह अपने भाग्य का प्रभारी 'है। मानवतावाद अधिकार बुराई को ईसाई धर्म या विवाह के संदर्भ में प्रमुखता के विचार सहित मानता है।

(२) आधुनिक व्यक्ति का मानना है कि वह पूर्व प्रतिबद्धताओं के बारे में अपना दिमाग बदल सकता है क्योंकि वह फिट बैठता है। एक व्यक्ति का दृष्टिकोण एक स्वर से अधिक महत्वपूर्ण है। तलाक और पुनर्विवाह विकल्प बन जाते हैं।

(३) विनम्रता या अनुपालन को एक कमजोरी माना जाता है और हमारे आधुनिक दुनिया के संदर्भ में सामान्य जीवन जीने के लिए किसी व्यक्ति को बनाए रखने में काफी असमर्थ है। इसे तिरस्कार की नजर से देखा जाता है।

3) हमारी आशा: परमेश्वर का वचन

हमारे विश्वास के लिए चुनौतियों के कारण, परमेश्वर ने हमें निर्देश दिया है कि जब हम भ्रमित हों और जो सही है उसके बारे में अनिश्चित हो। विशेष रूप से, परमेश्वर ने पत्नियों और कलिसिया दोनों के लिए एक समान निर्देश दिया है।

हे पत्नियों, अपने अपने पति के ऐसे आधीन रहो, जैसे प्रभु के।क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्ता है।पर जैसे कलीसिया मसीह के आधीन है, वैसे ही पत्नियां भी हर बात में अपने अपने पति के आधीन रहें। (इफिसियों 5: 22,24)।

कलिसिया और पत्नियों के लिए ये आदेश वैकल्पिक नहीं हैं। सभी मसीहीयों को मसीह के आदेशों को प्रस्तुत करना होगा। सभी पत्नियों को अपने पति के अधीन होना चाहिए। उपरोक्त छंदों में, वाक्यांश को "सब कुछ" में घेरें।

आवेदन

एक उचित प्रतिक्रिया की आवश्यकता एक बदलाव की मांग करती है कि हम अपने ऊपर अधिकार वाले व्यक्ति को कैसे जवाब देते हैं।

(1) परमेश्वर के सर्वश्रेष्ठ के रूप में अधीनता स्वीकार करें। योजना का हमेशा पालन करे।

(२) आप पर अधिकार रखने वाले के प्रति बुरे व्यवहार और मनोभाव को स्वीकार करें

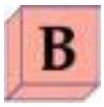

पत्नी के रूप में चर्च

उनके अटल नेतृत्व में विश्वास का विकास करना

1 प्रतिबद्धता पर सवाल उठाया

कुछ मसीही सवाल करते हैं कि क्या मसीह को एक व्यक्ति के प्रभु होने की आवश्यकता है यदि वह उनका उद्धारकर्ता है। यह उस पत्नी की तरह है जो अपने पति को नहीं सौंपने का विकल्प रखती है। विवाह हमारे ईसाई धर्म के समान है जिस तरह से यह वचनबद्ध है कि हम अपने जीवनसाथी या प्रभु के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करते हैं। निम्नलिखित छंदों में पति और पत्नी के कर्तव्यों को रेखांकित करें।

यह भेद तो बड़ा है; पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूं। पर तुम में से हर एक अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम रखे, और पत्नी भी अपने पति का भय माने॥ (इफिसियों 5: 32-33)।

2) परमेश्वर के डिजाइन की सराहना करना

जब भी हम परमेश्वर के योजना से विदा होते हैं, हम हर तरह की समस्याओं में भाग लेते हैं। हम अपनी भावनाओं या निर्णयों को प्रभु की तुलना में बेहतर मानते हैं, वे कभी नहीं होते हैं। क्या आप ऐसा सोचने के लिए लुभाए गए हैं? शायद। हम सब के पास है। हमें उन प्रलोभनों का विरोध करने की आवश्यकता है। यह समझने में मदद करता है कि परमेश्वर हमें मदद करने और हमारी रक्षा करने की आज्ञा देता है।

- वे हमें ईश्वर का मार्ग याद दिलाते हैं, यहां तक कि जब हमारे अनुभव हमें अलग तरह से बताते हैं।

- वे रिश्ते को इस तरह से व्यवस्थित करते हैं कि कोई घर्षण न हो।

- वे आनंद की गहराई को अधिकतम करते हैं।

- वे एकता को धमकी देने वाली ताकतों से बचाते हैं।

परमेश्वर की आज्ञाएँ बहुत अच्छी तरह से प्राप्त करने में सहायता करती हैं और चाहे वह विवाह में हो या हमारे मसीही जीवन में। आइए इसके कारण को देखें

3) प्यार कभी असफल नहीं होता

मसीह कलिसिया से प्यार करता है। उनका प्यार निरंतर और सुनिश्चित है। वह हमारे जीवन के सभी पहलुओं से बहुत जुड़े हुए हैं। हम संकट या भ्रम के समय उस पर भरोसा कर सकते हैं। हमें बस उस पर भरोसा करने की आवश्यकता है क्योंकि मसीह की आत्मा हमारे जीवन का नेतृत्व करती है। पति को यह आरोप अपनी पत्नी को बिना शर्त प्यार करने के लिए दिया जाता है। पत्नी को उसकी देखभाल में आराम करने की जरूरत है।

हे पतियों, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया। इसी प्रकार उचित है, कि पति अपनी अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखें। जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है। (इफिसियों 5:25, 28)

कलिसिया और पत्नी दोनों को भरोसा देने की जरूरत है कि सभी प्यार जो हमेशा की आवश्यकता होती है। जैसा कि वे करते हैं, उनके स्वभाव और व्यक्तियों को परमेश्वर के प्यार को अपने जीवन के माध्यम से चमकने की अनुमति देने के लिए मीठा आकार दिया जाएगा।

4) लेकिन अगर ...

पत्नियों के लिए चीजें हमेशा इतनी आसान नहीं होती हैं। पतरस क्या सलाह देता है? वाक्यांश के साथ शुरू, "भले ही ..."

आप पत्नियों, अपने स्वयं के पति के प्रति विनम्र रहें, ताकि भले ही उनमें से कोई भी शब्द के प्रति अवज्ञाकारी हो, लेकिन उन्हें अपनी पत्नी के व्यवहार के बिना एक शब्द के बिना जीता जा सकता है (1 पतरस 3: 1)।

आवेदन

परमेश्वर और अपने पति या पत्नी के साथ अपने रिश्ते के लिए धन्यवाद। उसे अपना विश्वास बनाने के लिए कहें।

विश्वास और दान

हमारी एकता को जीना

1) अपनी एकता पर काम करना

एकता, विवाह में अविभाज्य एकता, दोनों विवाहित जोड़े के साथ-साथ मसीह के लिए एक मसीही रिश्ते का वर्णन करती है। चाहे कुछ कठिनाइयों से गुज़रना हो या सिर्फ अपने रिश्ते को समृद्ध करना हो, इस शिक्षण का उपयोग आपकी मदद करने के लिए करें!

2) कभी दो

सो व अब दो नहीं, परन्तु एक तन हैंइसलिये जिसे परम ेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे। (मत्ती 19: 6)।

जितना हम अपने रिश्ते में खिंचाव महसूस कर सकते हैं, हमें उसे स्वीकार करने से इंकार करना होगा। यह सुनने में थोड़ा अजीब लग सकता है, लेकिन यह पूरी तरह से यीशु के कहे अनुसार है। हम अपनी एकता की पुष्टि करते हैं और कुछ भी करने से बचते हैं जो अलग करता है: नकारात्मक आलोचना, मारना, चिल्लाना, नाम बुलाना, दोष लगाना, आदि।

प्रतिबिंब

जब एक पत्नी का मनोदशा दिन होता है, तो वह आलोचनात्मक और विरोधी हो सकती है। एक पति वास्तव में 'जुड़वाँ' महसूस कर सकता है और निरंतर प्यार की आवश्यकता को अनदेखा करके आसानी से उस भावना को प्रतिबिंबित कर सकता है। इसके बजाय, उसके प्रति अपनी प्रतिबद्धता को याद रखें। आप उसे प्यार करने का मन नहीं करते हैं लेकिन होशपूर्वक यह तय करें कि आप उससे प्यार करेंगे। आप इस बात से अधिक प्रभावित होंगे कि क्या सच है-'दोनों एक हैं। 'उसे घायल करने के लिए निर्णय न लें, बल्कि उसे अपना समर्थन और देखभाल प्रदान करें जैसे कि वह आप थी (वह है) (इफिसियों 5:28) । यह काम करता हैं। इससे कम कुछ भी वास्तविक समस्या को सुलझाने में हस्तक्षेप करता है।

3) शुद्ध और विश्वास योग्य

यीशु के शब्द "हर वह व्यक्ति जो अपनी वासना के लिए एक महिला को देखता है उसने उसके साथ पहले से ही दिल में व्यभिचार किया है" (मैथ्यू 5:28) अच्छी तरह से जाना जाता है। कई बार हम किसी दूसरे व्यक्ति के प्रति आकर्षित होने के लिए ललचाएँगे, विशेषकर तब जब हमारे वैवाहिक संबंध कठिन समय का अनुभव कर रहे हों।

हमें पवित्रता के जीवन की पुष्टि करने की आवश्यकता है। एक एकल के रूप में, आप अपने मन को उसके वासना पथ से बचने के लिए प्रशिक्षित करते हैं। यदि विवाहित हैं, तो आप अपनी पवित्रता को याद करते हैं और इस तरह के विचारों को अस्वीकार करते हैं। पहले पछताने की आवश्यकता होने पर भी अपने मन को पवित्रता पर ठीक करें।

4) दयालुता और देखभाल

भगवान के आदेश हमें अपनी एकता की पुष्टि करने में मदद करते हैं। "एक दूसरे के साथ संबंध रखना, और एक दूसरे को क्षमा करना, जिसे किसी के खिलाफ शिकायत है; जैसे प्रभु ने तुम्हें क्षमा किया, वैसे ही तुम्हें भी चाहिए। और इन सब बातों से परे प्यार ... "(कुलुस्सियों 3: 13-14)।

जब हम उन कार्यों पर कार्रवाई करने से इंकार करते हैं, तो हम अपनी एकता की पुष्टि करते हैं जो हमें अलग करते हैं और जानबूझकर उन चीजों को करने का निर्णय लेते हैं जो हमें एक साथ खींचते हैं। नीचे दिए गए कार्यों को हल करें जो एक विवाहित जोड़े के बीच एकता की पुष्टि करते हैं।

कोई तलाक नहीं | कड़वाहट | शिकायतें | येल | सुनो गौरवशाली | एक दूसरे के साथ रखो | नाजुक धैर्य | जिद्दी | प्रेम

आवेदन

उन दो क्षेत्रों को चुनें जिन पर आप काम करेंगे। ठोस कार्यों और प्रार्थना के साथ अपने निर्णयों को पूरा करें। टेक होम प्रोजेक्ट देखें।

सारांश

a) अधिकारी ईश्वर से जुड़े होते हैं। मैं उन्हें स्वीकार करूंगा और सम्मान दूंगा।

b) मैं हमेशा उन पर अधिकार करूंगा।

c) मैं अपने जीवनसाथी के साथ केवल उन चीजों को करके अपने रिश्ते की पुष्टि करता हूं जो हमारे रिश्ते का निर्माण करते हैं।

होम प्रोजेक्ट लें

• **मेमोरी वर्सेज कोलोसियन 3: 13-14**

और यदि किसी को किसी पर दोष देने को कोई कारण हो, तो एक दूसरे की सह लो, और एक दूसरे के अपराध क्षमा करोजैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए :, वैसे ही तुम भी करो। और इन सब के ऊपर प्रेम को जो सिद्धता का कटिबन्ध है बान्ध लो। (कुलुस्सियों 3: 13-14)।

• **सिर और पैर की उंगलियों**

जब आप पर अधिकार रखने वाला कोई व्यक्ति आपको ऐसा कुछ करने के लिए निर्देशित करता है, जो आपको पसंद नहीं है? अपनी प्रतिक्रिया अपनी आत्मिक पत्रिका में लिखिए। ऐसा कम से कम दो स्थितियों के लिए करें। अपने कार्यों, शब्दों और दृष्टिकोणों पर टिप्पणियों को शामिल करना सुनिश्चित करें। समझाइए कि क्या आपकी प्रतिक्रिया प्रभु को भाती है। प्रार्थना करें, किसी भी पाप को स्वीकार करें और उसे खुश करने के लिए अपनी प्रतिक्रिया बदलें।

मुद्दा	जिम्मेदारी	अच्छा	सुधार करने के लिए कदम
शब्द		☐	
कार्रवाई		☐	
रवैया		☐	

• **हमेशा के लिए**

फार्म भाग 'सी वे दो चीज़ें निकालिए जो आपको अपनी शादी की पुष्टि करने में मदद करेंगी। यदि आप शादीशुदा नहीं हैं, तो यह ठीक है, बस प्रभु के साथ अपने रिश्ते के साथ ऐसा करें। एक ही अर्जी काम करती है। बाईं ओर के दो क्षेत्रों को लिखें और वास्तविक कदम उस सकारात्मकता को लें।

(1)

(2)

क्रूस प्रशिक्षण

संबंधपरक शिष्यत्व

#12 बेल ⟷ शाखाएँ

प्यार में बढ़ रहा है
परमेश्वर और दूसरों के लिए!

बेल और शाखाओं

मसीह में निवास करना

बेल और शाखाएँ प्रचुर मात्रा में मसीही जीवन का सबसे स्पष्ट और सम्मोहक चित्र प्रदान करती हैं। अद्भुत अंतरंगता, निरन्तर भक्ति और प्रभु यीशु के साथ घनिष्ठ संबंध से सभी वसंतों में प्रचुरता। उनके उद्देश्य को देखते हुए परमेश्वर के साथ व्यवहार करने की एक अच्छी समझ हमारे पूरे दृष्टिकोण को जीवन में बदल देती है।

एक प्रचुर जीवन

क्या आपने कभी परमेश्वर से दूरियां महसूस की हैं? हम में से अधिकांश एक समय या किसी अन्य पर है। परमेश्वर के बच्चों के रूप में, उन्होंने हमें हर समय उनके करीब रहने का एक तरीका प्रदान किया है। बेल की उपमा यीशु मसीह और हमारे पिता के साथ हमारे संबंधों की सबसे अधिक आकर्षक तस्वीरों में से एक है। यीशु के शब्द, हमें उस जटिल बंधन को बेहतर ढंग से समझने में सक्षम करते हैं जो हमने परमेश्वर के साथ किया है।

शाखाएँ बेल से अपना जीवन बनाती हैं। बेल पर प्रकोप की निरंतर निर्भरता महत्वपूर्ण है। शाखाएं केवल बेल से पूरी तरह से जुड़ी होने और उनके माध्यम से जीवन रस प्रवाह की अनुमति देती हैं। यह परमेश्वर के लोगों की तस्वीर है जो हमारे स्वर्गीय पिता परमेश्वर पर निर्भर रहकर जीवन में पूर्णता प्राप्त करते हैं।

जैसा कि हम इस सादृश्य पर प्रतिबिंबित करते हैं, हम बेहतर समझेंगे कि परमेश्वर हमारे लिए क्यों परवाह करता है जिस तरह से वह करता है। उदाहरण के लिए, हमारा मसीही जीवन सूखा हो सकता है क्योंकि हम उसके साथ घनिष्ठ संगति से दूर हो गए हैं। हमारी जीवन की कई समस्याओं को यीशु मसीह की बेल पर हमारी निर्भरता पर ध्यान केंद्रित करके और उनकी उपस्थिति का आनंद लेकर हल किया जा सकता है। इसे नीचे विस्तार से बताया जाएगा।

परमेश्वर माली हैं

वह ध्यान से बेल की देखभाल करता है

1) परमेश्वर अपने लोगों की परवाह करता है

मैं सच्ची दाखलता हूँ, और मेरे पिता माली हैं (यूहन्ना 15: 1)।

परमेश्वर पिता बेल का बागान और देखभाल करने वाला है। पिता ध्यान से बेल प्राप्त करने के लिए मिट्टी तैयार करता है और फिर जब मौसम आ गया है और समय सही है, वह बेल लगाता है। ध्यान से वह बेल की देखभाल करता है, उसे यह देता है कि उसे क्या चाहिए और इसे फसल के समय तक लाने के लिए देख रहा है। जब फसल आती है, तो वह अपने मजदूरों से इकट्ठा करता है और इसके फलों में प्रसन्नता होती है। परमेश्वर ध्यान से अपने लोगों की जरूरतों की उम्मीद के साथ परवाह करता है कि हम फल लेंगे।

2) परमेश्वर अपने लोगों के साथ अलग तरीके से पेश आते हैं

जो डाली मुझ में है, और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है, और जो फलती है, उसे वह छांटता है ताकि और फले। (यूहन्ना 15: 2)।

यूहन्ना 15 : 2 में दो प्रकार के लोगों में क्या अंतर है? माली (पिता) इन लोगों में से प्रत्येक के साथ कैसा व्यवहार करता है?

1. _____ _____

2. _____ _____

3) परमेश्वर का अनुशासन उनके बच्चों के लिए

क्योंकि प्रभु, जिस से प्रेम करता है, उस की ताड़ना भी करता है; और जिसे पुत्र बना लेता है, उस को कोड़े भी लगाता है। तुम दुख को ताड़ना समझकर सह लोपरमेश्वर तुम्हें पुत्र जान कर : तुम्हारे साथ बर्ताव करता है, वह कौन सा पुत्र है, जिस की ताड़ना पिता नहीं करता? (इब्रानियों 12: 6-7)

लिफ्ट अप 'से तात्पर्य एक माली से है जो पौधे को रोग से बचाने के लिए कीचड़ से बाहर निकालेगा। इस हिब्रू के मार्ग में तीन सिद्धांत हैं जो हमें यह समझने में मदद करने के लिए हैं कि जब हम उसे फैल करते हैं तो ईश्वर हमें कैसे उठाता है '

तथ्य # 1। परमेश्वर तुम्हे प्यार करते है। जब आप पाप करते हैं तो परमेश्वर आपको प्यार करना बंद नहीं करते हैं।

तथ्य # 2। जब वे पाप करते हैं तो परमेश्वर सभी विश्वासियों को अनुशासित करते हैं।

तथ्य # 3। परमेश्वर अपने लोगों को पाप से बाहर लाने के लिए प्यार से अनुशासन का इस्तेमाल करता है।

यह परमेश्वर की इच्छा है कि आप उसके करीब रहें। वह आपको अनुशासित करता है ताकि आप उसके पास लौट आएं। जैसे-जैसे हम स्वीकारोक्ति के माध्यम से उनके पास लौटते हैं, परमेश्वर के साथ हमारी अंतरंगता पूरी तरह से और तुरंत बहाल हो जाती है।

आवेदन

- अपने जीवन में आने वाली किसी भी कठिनाई को पहचानें।
- निरीक्षण करें कि क्या ये समस्या अवज्ञा से संबंधित हो सकती है
- उस निर्णय को बदलने के लिए क्या किया जाना चाहिए, यह तय करें।

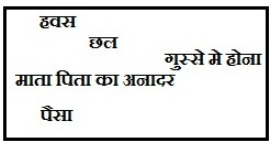

- अपना गुनाह कबूल करो। प्रार्थना, विनम्रता और प्यार में बहाली की तलाश करें।
- अपने आप को फिर से जोड़ने के लिए उसकी प्रशंसा करें।

अधिक फल का उत्पादन

उन्होंने कहा कि यह अधिक फल सहन कर सकता है

1) लक्ष्य: उत्पादन फल

बेल की शाखाओं को नियमित रूप से छंटनी चाहिए अन्यथा वे नियंत्रण से बाहर हो जाएंगे और अन्य चीजों से उलझ जाएंगे, जो फलों के उत्पादन में बाधा हैं। शाखाओं को लगातार देखा जाना चाहिए और उनकी देखभाल की जानी चाहिए। यहाँ जिस कटिंग या सफाई से यीशु बात कर रहा है वह शाखाओं की छंटाई या कटिंग है (यूहन्ना 15: 1-11)।

यदि छंटाई नहीं होती है, तो शाखाएं इतनी बड़ी और भारी हो सकती हैं कि वे अब उत्पादक नहीं हैं। मसीही के रूप में हम आसानी से किसी भी फल के उत्पादन के बारे में सहज और असंबद्ध हो सकते हैं, लेकिन परमेश्वर चिंतित रहते हैं।

2) छंटाई की प्रक्रिया

अधिक फलों की कटाई के लिए छंटाई एक अत्यंत आवश्यक कदम है। छंटाई कई उद्देश्य प्रदान करता है:

* रोगग्रस्त या मृत शाखाओं को हटाता है।
* अधिक उत्पादन सुनिश्चित करता है।
* जंगली विकास को खत्म करता है।

छंटाई अनुशासन से अलग है। छंटाई उन लोगों को लेता है जो मसीह में निवास कर रहे हैं और उन्हें कुछ महत्वपूर्ण कठिनाई या जीवन चुनौती से अधिक उत्पादक बनाते हैं। हालाँकि, अनुशासन उन लोगों को कठिन समय में मसीह में नहीं रहने देता है ताकि वे पश्चाताप करें और प्रभु के पास लौट आएं।

परमेश्वर हमारे पिता की आवश्यकता होने पर हमें प्रणाम करता है, लेकिन हम आत्म-परीक्षा द्वारा कुछ परीक्षणों से बच सकते हैं। आत्म-परीक्षा वह आत्मिक अनुशासन है जिसके द्वारा हम अपने जीवन में जो कुछ भी कर रहे हैं उसकी सावधानीपूर्वक जाँच करते हैं और बदलाव लाने की पहल करते हैं ताकि हम अधिक प्रभावी ढंग से विकसित हो सकें और फल-फूल सकें।

आवेदन

यदि मेरी अंगूर की शाखाएँ खुद को काटती हैं, तो मुझे कोई छंटाई करने की ज़रूरत नहीं है! हम चीजों को बेहतर बनाने के लिए प्रभु के साथ कैसे काम कर सकते हैं? निम्नलिखित प्रश्नों का ईमानदारी से उत्तर दें।

- जो कुछ आप करने जा रहे हैं उससे आपका कीमती समय और ऊर्जा खत्म हो सकती है।
- आप प्रभु के साथ अधिक स्थिर चलना कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं?
- आप सांसारिक प्रलोभनों से खुद को बेहतर कैसे ढाल सकते हैं?

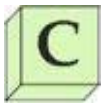

दाखलता के करीब रहना

मसीह में रहने से बहुत फल मिलता है

1) मसीह में निवास करना

मैं दाखलता हूंतुम डालियां हो .; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। (यूहन्ना 15: 5)।

मसीह में निवास करना अपनी इच्छा को आत्मसमर्पण करना है और उसे अपना संपूर्ण अस्तित्व देना है: फल का चयन करना, पालन करना और वह सब प्राप्त करना जो वह हमारे लिए है। यह छोटे बच्चों की तरह बनना है, पूरी तरह से जीविका, सुरक्षा और मार्गदर्शन के लिए उस पर निर्भर है। पालन से तत्काल परिपक्वता नहीं आती है और न ही यह तत्काल फल देता है। बल्कि यह परिपक्व होने और फसल के लिए असरदार फल बनने का वादा है।

2) उनके वादे को समझना

यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा। (यहुन्ना15-7)।

उसके अंदर रहने के द्वारा, और उसके वचन का हम पर प्रभाव पड़ता है, मसीह ने वादा किया कि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ भी पूछ सकते हैं और यह हमारे लिए किया जाएगा। कई लोग अपने स्वयं के स्वार्थी उद्देश्यों के लिए यह वादा करते हैं, कभी भी खुद की जीवनशैली के लिए प्रतिबद्ध नहीं होते हैं। लेकिन जो लोग इसके निर्देश का पालन करते हैं, उनके पास जो कुछ भी होता है, उसके लिए वे परमेश्वर के वचन से भरे होते हैं और उस शब्द के अनुसार पूछते हैं जो उनमें रहता है।

प्रतिबिंब

शिक्षा या प्रचार करते समय परमेश्वर पर विश्वास करना सीखना एक चुनौती रही है। अगर मैं आत्मविश्वासी हूं, तो मुझे नहीं लगता कि मुझे उसकी जरूरत है। यदि, हालांकि, मैं अपर्याप्त महसूस करता हूं, तो अपर्याप्त काम करने के बारे में चिंता करना आसान है। मुझे धीरे-धीरे पता चला कि कुंजी हमेशा सचेत रूप से उसी पर निर्भर है। यह तब शुरू होता है जब मुझे एहसास होता है कि मैं कुछ भी अच्छा नहीं कर सकता और जब तक वह इसमें रहेगा। मुझे उसे जरूरत हैं। मेरी प्रार्थना की ईमानदारी इस बात पर निर्भर है कि मैं वास्तव में कितना विश्वास करता हूं कि मुझे उसकी आवश्यकता है।

3) एक उद्देश्य के लिए चुना

तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है और तुम्हें ठहराया ताकि तुम जाकर फल लाओ; और तुम्हारा फल बना रहे, कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो, वह तुम्हें दे। (यहुन्ना15:16)।

हम अपने लिए परमेश्वर के उद्देश्य को जितना बेहतर समझेंगे, कठिन और भ्रामक समयों को पार करना उतना ही आसान होगा। यहाँ ध्यान दें कि परमेश्वर ने हमें कैसे चुना। उसने बुरा चुनाव नहीं किया। उसने हमें चुना क्योंकि वह चाहता था कि हम उसकी अद्भुत कृपा का अनुभव करें। उन्होंने हमारे जीवन के माध्यम से विशेष और महान काम करना भी चुना। यद्यपि परमेश्वर हमारे द्वारा परमेश्वर के प्रेम और शक्ति को दुनिया को दिखाने के लिए हमारे माध्यम से महान कार्य कर सकता है, हम हमेशा यह याद रखने के लिए विनम्र होते हैं कि मसीह बेल सब कुछ अच्छा है। हम केवल उसके पात्र (शाखा) हैं।

आवेदन

प्रार्थना करें और अपने मिशन को अंजाम देने के लिए प्रभु का धन्यवाद करें। उसे आपकी उपयोग करने की इच्छा की पुष्टि करें।

सारांश

a) परमेश्वर हमारे जीवन का सावधानीपूर्वक निरीक्षण करता है और जब हम उसकी आज्ञा नहीं मानते हैं तो हमें अनुशासित करेंगे।

b) हम अधिक फल पैदा करने के लिए तैयार हो जाएंगे। हमें इस कठिन प्रक्रिया के दौरान उस पर भरोसा करने की जरूरत है।

c) जब हम आज्ञाकारिता के माध्यम से मसीह के करीब रहते हैं, तो मसीह हमारे लिए बहुत फल देता है।

होम प्रोजेक्ट लें

- **स्मरण छन्द यहुन्ना 15: 4-5**

"तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम मेंजैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे ;, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते। 5 मैं दाखलता हूंतुम डालियां हो ;; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। । "

- **मसीह के साथ घनिष्ठता का विकास करना**

1) परमेश्वर के साथ अपने आत्मिक चलने की एक पत्रिका रखें। अपने जीवन में उन बातों पर ध्यान दें जो आपको पूरी तरह से उनका पालन करने से रोकती हैं। परमेश्वर से एक-एक करके अपने जीवन की इन बाधाओं को दूर करने के लिए कहें ताकि आप उनकी आराधना करने पर ध्यान केंद्रित कर सकें। यह एक आत्मिक अनुशासन है जो हम आशा करते हैं कि आप यहां से शुरू करेंगे और अपने जीवन के अंत तक जारी रखेंगे।

2) नियमित रूप से उसे धन्यवाद दें आप और परमेश्वर के सभी लोग उसकी पसंद का खजाना है। आप विशेष नहीं हैं क्योंकि आपने क्या किया है या करेंगे लेकिन क्योंकि उन्होंने आपके माध्यम से काम करना चुना है।

परमेश्वर की अद्भुत कृपा

परिशिष्ट # 1 संबंधपरक शिष्यत्व का उद्देश्य

परमेश्वर और लोगों के साथ हमारे संबंधों में बढ़ना

प्रभावी रूप से परमेश्वर की आवश्यक संबंधपरक सच्चाइयों को युवा मसीही और कलिसिया की छवियों के माध्यम से स्थानांतरित करने के लिए ताकि प्रत्येक मसीह आत्मा से भरे रहने की पूरी क्षमता का अनुभव करे।

समस्या:

बहुत कम लोग अनुशासित होते हैं। वे उन शिशुओं की तरह हैं जिनकी देखभाल नहीं की गई है। यीशु ने यह स्पष्ट कर दिया है कि हमें शिष्यों को बनाना चाहिए न कि केवल आत्माओं को बचाना चाहिए। 'वास्तव में, परमेश्वर के लोगों को शिष्य बनाने की आवश्यकता है, लेकिन हमें अच्छे शिष्य बनाने की भी आवश्यकता है। जिस तरह एक अच्छा या बुरा माता-पिता हो सकता है, उसी तरह एक अच्छा या बुरा अनुशासन हो सकता है।

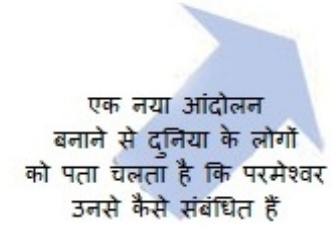

कुछ लोगों द्वारा उपयोग की जाने वाली अनुशासन सामग्री एक अच्छी शुरुआत है, लेकिन इसमें महत्वपूर्ण क्षेत्रों में प्रशिक्षण का अभाव है। क्या आप वह बच्चा बनना पसंद करेंगे जो दूसरों को विनम्र होने के लिए प्रशिक्षित नहीं है?

हम अधिक सामग्री के साथ बुनियादी शिष्यत्व सामग्री को अधिभारित करने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। एक बच्चा विभिन्न चरणों में चीजें सीखता है। मसीहीयों के साथ भी यही सच है। फिर यह क्या है कि इन बुनियादी शिष्यत्व पाठ्यक्रमों में उपेक्षित किया जा रहा है?

प्रमुख कारण

हमारी मुख्य चिंता यह है कि प्रत्येक मूल शिष्यत्व परमेश्वर के साथ मनुष्य के संबंधों पर केंद्रित है। यह अच्छा और आवश्यक है, लेकिन वे चीजों के एक और पूरे पक्ष को खो रहे हैं - आदमी का आदमी के साथ संबंध।

इसका परिणाम उन मसीहीयों के रूप में सामने आया है जो होनहार अगुवे प्रतीत होते हैं लेकिन अंत में वे दूसरों के साथ अच्छा काम करने की परीक्षा में असफल हो जाते हैं। इससे भी ज्यादा खतरनाक वे हैं जो बिना अपनी जिंदगी को ठीक से तैयार किए नेतृत्व में आगे बढ़ते हैं। या तो मामले में उनकी खराब शादी या सहकर्मियों के साथ संबंध अनावश्यक तनाव और समस्याएं पैदा करते हैं।

सत्य की हमेशा हमारे जीवन पर मांग रहती है। कुछ मामलों में हम पहले ही उसकी सच्चाई से आकार ले चुके हैं, इसलिए हम इसके प्रभाव को महसूस नहीं करते हैं। उदाहरण के लिए, जो लोग अच्छे विवाह के आशीर्वाद के तहत बड़े हुए हैं, वे पहले से ही उन सच्चाइयों के बारे में बहुत कुछ सीख चुके हैं जो एक महान विवाह बनाते हैं।

यीशु ने कहा कि सभी आदेशों का सारांश परमेश्वर और अन्य लोगों से प्रेम करने पर केंद्रित है। हमें परमेश्वर और लोगों के साथ उनके संबंधों में परमेश्वर के लोगों को प्रशिक्षित करने के लिए बुनियादी शिष्यत्व प्रशिक्षण के अवसर का उपयोग करने की आवश्यकता है। ऐसा करने से अन्य महत्वपूर्ण दुष्प्रभाव हैं।

माध्यम

प्रभावी रूप से चरित्र गुणों को हमारे जीवन में स्थानांतरित करने के लिए जैसा कि नीचे दिए गए चार्ट में देखा गया है।

परिशिष्ट # 2 रिलेशनल शिष्यत्व उपयोगकर्ता की मार्गदर्शिका

रिलेशनल डिसिप्लिनशिप एक बुनियादी शिष्यत्व पाठ्यक्रम है।

यह अधिक विशिष्ट प्रशिक्षण के विपरीत है जो अन्य शिष्यत्व सामग्री के लिए पाया जाता है। हमारा सुझाव है कि इसका उपयोग एक नए विश्वासियों के मसीही जीवन के परिचय के बाद किया जाता है। BFF में 3 X E मूलभूत शिष्यत्व पुस्तिका है, जो मूल मसीही जीवन और कर्तव्यों का एक अच्छा समग्र लाभ प्राप्त करने के लिए नए आस्तिक (या जिनके पास अनुशासित नहीं है) की मदद करता है।

गैप भरना।

रिलेशनल डिसिप्लिनशिप श्रृंखला शिष्यत्व सामग्री में एक बड़ा अंतर भरने में मदद करती है जो अब उपलब्ध है। अधिकांश बुनियादी शिष्यत्व सामग्री में दो मुख्य कमजोरियां हैं।
वे आत्म केंद्रित हैं। वे उस चर्च के संदर्भ को नजरअंदाज करते हैं जिसमें प्रत्येक ईसाई पैदा होता है और उससे जुड़ा होना चाहिए। इसका कारण यह है कि यह गैर-कलिसिया सेवकाई है, जिनमें मुख्य रूप से शिष्यत्व सामग्री विकसित की गई है, ज्यादातर छात्र सेवक हैं। अधिकांश छात्रों को एक स्थानीय कलिसिया में सक्रिय सदस्य बनने में बड़ी कठिनाई होती है।

वे लगभग विशेष रूप से परमेश्वर के साथ एक मसीही के आत्मिक संबंध पर ध्यान केंद्रित करते हैं। बेशक यह वही है जो नया है। पहले उनका परमेश्वर से कोई संबंध नहीं था और अब वे रखते हैं। समस्या यह है कि जब लोग इन चीजों को दूसरों के साथ अपने संबंधों के साथ जोड़कर परमेश्वर की बातें सीखते हैं, तो उनके दृष्टिकोण में बड़े अंतराल दिखाई देते हैं।

या तो परिदृश्य में, किसी भी शिष्यत्व प्रशिक्षण के और भी गंभीर अभाव का उल्लेख नहीं करने के लिए, अन्य ईसाइयों से संबंधित समस्याओं का विकास होता है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य आध्यात्मिक (ऊर्ध्वाधर) और व्यक्ति-से-व्यक्ति (क्षैतिज) संबंधों दोनों के विकास को एकीकृत करना है। अगर एक मसीही को विकसित करना है, तो उसे समझना चाहिए।

यह या वे भविष्य के विकास से अपंग हो जाएंगे। इस सामग्री को कैसे डिजाइन किया गया था, इस बारे में अधिक जानने के लिए संबंधपरक शिष्य परिचय पढ़ें।

किसी पाठ का अवलोकन। बारह पाठ सबसे प्रभावी हैं

एक नब्बे मिनट के एक-से-एक संरक्षक-शिष्यत्व की स्थिति। उनका उपयोग दो या तीन या यहां तक कि एक वर्ग के छोटे समूहों में किया जा सकता है। जितना बड़ा वर्ग, उतना कम प्रभावी प्रत्येक पाठ व्यक्तिगत अनुप्रयोग की कमी के कारण बन जाता है। यह दुर्भाग्य से प्रशिक्षण के साथ हमेशा सच है।

अध्ययन को आम तौर पर नीचे दिए गए आदेश का पालन करना चाहिए। यदि केवल साठ मिनट उपलब्ध हैं, तो प्रत्येक मुख्य बिंदु से एक या दो छोटे वर्गों को छोड़ें और उन्हें घर पर पढ़ें। यदि केवल बीस या तीस मिनट की व्यवस्था की जा सकती है, तो एक समय में एक या दो गोल करें, बस हर बार विषय और तीन लक्ष्यों को लागू करना याद रखें।

90 मिनट की अनुसूची

एक-दूसरे को शुभकामनाएं दें; संक्षिप्त बातचीत करें। प्रार्थना के साथ खोलें।

• पिछले पाठ की समीक्षा करें और होम प्रोजेक्ट (10-15 ') लें।

• सप्ताह के पाठ का परिचय दें। उन्हें पुस्तिका सौंप दो। विषय, परिचय और तीन लक्ष्यों का परिचय दें। ईश्वर के बारे में जानने और दूसरों के साथ संबंध बनाने पर जोर दें (10 ')।

• लक्ष्य ए का परिचय दें और चर्चा करें। एक साथ आवेदन करें (20 ')।

• लक्ष्य बी का परिचय दें और चर्चा करें। एक साथ आवेदन करें (20 ')।

• लक्ष्य C का परिचय दें और चर्चा करें। एक साथ आवेदन करें (20 ')।

• होम प्रोजेक्ट्स (5 ') को संक्षेप और स्पष्ट करें।

• प्रार्थना में बंद करें। प्रत्येक व्यक्ति विशेष रूप से सीखे गए पाठों के बारे में प्रार्थना करता है।

इस सामग्री का उपयोग करने के दो तरीके हैं।

• एक सामान्य सामयिक मार्गदर्शक के रूप में।

इस मामले में संरक्षक पाठ का बारीकी से पालन नहीं करता है। वह छात्र को सप्ताह में एक बार घर पर इसे पढ़ने देगा। हालाँकि, वह सामान्य रूपरेखा का पालन करता है और उस सामग्री को छूता है जिसे वह बाइबल के छंदों, महत्वपूर्ण बिंदुओं और दृष्टांतों सहित उपयोग करना चाहता है। जब प्रशिक्षु घर लौटता है, तो सामग्री और टेक होम प्रोजेक्ट को पढ़ना पहले जो सिखाया गया था उसे सुदृढ़ करेगा। अगली बार समीक्षा के लिए कुछ बिंदु चुने जाएंगे।

• एक विशिष्ट रीडिंग गाइड के रूप में।

यहाँ संरक्षक पुस्तिका का बारीकी से अनुसरण करता है। इसके बड़े हिस्से को एक साथ पढ़ा जाएगा। संरक्षक एक भाग पढ़ सकता है और फिर प्रशिक्षु को एक भाग पढ़ने के लिए कह सकता है। हम आपको सुझाव देंगे कि आप परिचय को अपने शब्दों में कहें या अपने व्यक्तिगत रूप से विकसित करें। एक बार जब आप कुछ पाठों को पढ़ लेते हैं, तो पाठ की मूल संरचना ध्यान देने योग्य हो जाएगी। आप प्रशिक्षण उपकरण (पुस्तिका) का बेहतर उपयोग करने में सक्षम होंगे। यह बदले में अधिक 'शिक्षण' स्वतंत्रता का परिणाम देगा। प्रत्येक मेंटर को समय पर हावी होने के बजाय बातचीत को सुविधाजनक बनाने में मदद करने के लिए बुकलेट का उपयोग करने के लक्ष्य की ओर काम करना चाहिए। इस बीच, उपेक्षितों की तुलना में शिष्यत्व बेहतर होता है। याद रखें कि पुस्तिकाएं बिना किसी संरक्षक के पढ़े जाने के लिए डिज़ाइन की गई हैं, भले ही कोई सामग्री को 'खत्म' न करे, वह ठीक है। इसे घर पढ़ने के रूप में निर्दिष्ट करें या बस थोड़ा धीमा चलें। आवेदन बिंदुओं पर ध्यान दें जो पूरे सामग्री में फैले हुए हैं।

• पाठ सामग्री का उपयोग।

हमारा सुझाव है कि शिक्षक निर्देश पुस्तिकाओं को क्रमबद्ध या कॉपी करने की व्यवस्था करें और जैसे ही आप मिलते हैं, उन्हें एक-एक करके सौंप दें। इसके दो फायदे हैं। सबसे पहले, छात्र उनके साथ है। दूसरा, वे नई आने वाली सामग्री को पेश करके उम्मीद का निर्माण करते हैं। अंत में, कोई भी उन्हें अतिरिक्त शिक्षक सामग्री दे सकता है और चर्चा कर सकता है कि आप कैसे आशा करते हैं कि वे किसी अन्य व्यक्ति को प्रशिक्षित कर सकते हैं। शायद एक दूसरे के साथ प्रशिक्षण समय में बैठने के लिए स्वेच्छा से वे किसी अन्य व्यक्ति का नेतृत्व करते हैं या उन्हें आपके साथ एक अन्य प्रशिक्षण वर्ग में बैठते हैं। आप उन्हें उन कुछ चीजों को साझा करने के लिए कह सकते हैं जो उन्होंने सीखी थीं

पिछले सबक! उन्हें साझा करने, दूसरों को प्रेरित करने और अपने दम पर करने के लिए आत्मविश्वास प्राप्त करने के लिए मिलता है।

संबंधपरक शिष्यत्व संसाधनों को प्राप्त करना

हम आपके छात्रों के लिए पुस्तिकाओं की प्रतियां बनाने के लिए आपका स्वागत करते हैं।

हम महसूस करते हैं कि कुछ के लिए सुविधा और लागत महत्वपूर्ण हैं।

दूसरे उनका अनुवाद करेंगे। यह ठीक है।

BFF शिष्यत्व प्रशिक्षण पुस्तकालय # 1 के कई फायदे हैं। न केवल रंग में विभिन्न पीडीएफ़ प्रारूप उपलब्ध हैं, बल्कि इसलिए रिलेशनल डिसिप्लिनशिप पॉवर पॉइंट स्लाइड्स और शिक्षक के निर्देश मैनुअल १।

जितना संभव हो उतना सबक निजीकृत करें। कुछ लोगों को लगता है कि यह पुस्तक से जाना जाता है। " हमारा सुझाव है कि आप अपने स्वयं के चित्र, विशेष रूप से निजी लोगों को अपने जीवन से जोड़ने के लिए स्वतंत्र महसूस करें। एक व्यक्ति जितना अधिक पाठ को निजीकृत कर सकता है, उतना ही बेहतर होगा। एक शिष्य सीखने से बहुत कुछ सीखता है कि उसका संरक्षक सीखने की परिस्थितियों से कैसे गुजरा।

बाइबिल। हमारी सारी सामग्री बाइबिल से निर्मित है! हम पूरी तरह से बाइबल-विश्वासी रूढ़िवादी हैं जो मानते हैं कि बाइबल हमारे जीवन में पर्याप्त विश्वास नहीं कर रही है। हम लोगों को विश्वास करने और उन्हें जीवित करने के लिए प्रशिक्षित करना चाहते हैं ताकि वे अपने जीवन में मसीह की शक्ति को देखें।

क्या उन्होंने वास्तविक बाइबिल पाठ जोर से पढ़ा है। शिष्य को अपनी बाइबल का उपयोग करने के लिए तैयार होना चाहिए, भले ही अधिकांश छंद पाठ (NASB) में शामिल हों। शिष्य को अपनी स्वयं की बाइबल में छंदों को ढूंढना और पढ़ना चाहिए, ताकि वे स्वयं को परमेश्वर के वचन से परिचित करा सकें, खासकर यदि वे बाइबल में नए हैं।

पाठ को अलग-अलग करें। अनुशासित व्यक्ति को अनुशासित होने की जरूरतों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इस पाठ्यक्रम का उपयोग विभिन्न स्तरों पर लोगों को शिष्य बनाने के लिए किया जा सकता है। कुछ लोगों की बाइबल में बहुत कम पृष्ठभूमि है जबकि अन्य एक महत्वपूर्ण राशि को समझते हैं। अनुशासक को अपने प्रश्नों, गति और आवश्यकतानुसार अन्य सामग्रियों के परिचय को समायोजित करना चाहिए। अगर सामग्री भी है

एक सत्र के लिए, इस पर कुछ सत्र खर्च करें। प्रशिक्षु की आवश्यकता के अनुसार जाएं। क्रॉस ट्रेनर शिक्षक गाइड संरक्षक या अनुशासन के लिए अतिरिक्त संसाधन प्रदान करता है।

कभी-कभी ऐसे रिक्त या अन्य प्रश्न होते हैं, जो उत्तर देने से बचते हैं। जवाब खोजने में आवश्यकतानुसार प्रशिक्षु को धैर्यपूर्वक मार्गदर्शन करें। पढ़ाई मिनी-अध्ययन 'मेंटर और प्रशिक्षु दोनों की मदद करने के लिए हैं। यह प्रशिक्षु को अध्ययन करने का तरीका दिखाने का अवसर देता है। थ ई स्टूडेंट को इसके माध्यम से प्रशिक्षित किया जाएगा कि सरल सीधे सवालों के जवाब के लिए बाइबल पाठ में कैसे देखा जाए। प्रश्नों को जानबूझकर बहुत सरल रखा गया है। वे आपके लिए आसान हो सकते हैं लेकिन वे प्रशिक्षु के लिए नहीं हो सकते हैं।

साफ संगठन। प्रत्येक पाठ में अपने उद्देश्य के साथ शुरू में तीन लक्ष्य होते हैं। यह ट्रेनर और प्रशिक्षु दोनों के लिए एक साथ समय व्यवस्थित करने में मदद करता है। एक सेक्शन को एक या अधिक समय दे सकते हैं लेकिन आवंटित समय के भीतर रहने का प्रयास करें। आवश्यकतानुसार चर्चा को समायोजित करें। एक मामूली बिंदु या दो को छोड़ दें। बस तीन प्रमुख बिंदुओं पर चर्चा करना याद रखें। यदि छात्र ने पहले से ही एक क्षेत्र में महारत हासिल कर ली है, तो किसी को जल्दी जाने में सक्षम होना चाहिए, या उनके पास जो कुछ भी सीखा है उसे अधिक साझा करना चाहिए या उन्होंने ऐसी चीजें कैसे सीखी हैं। संरक्षक को उन लक्ष्यों तक पहुंचने में छात्र की मदद करने के लिए बाध्य महसूस करना चाहिए।

बहुत कहने को! एक शिक्षक के रूप में कई बार आपके दिमाग में कई अतिरिक्त विचार आएँगे जो आप पढ़ाना चाहते हैं। आपके पास इतना कहने के लिए है! ध्यान से पाठ के उद्देश्यों पर वापस जाएँ और सबसे अच्छा विचार या चित्रण चुनें जो पाठ के उद्देश्य या पाठ के उद्देश्य का समर्थन करता है। आप उन अतिरिक्त छंदों, विचारों और यहां तक कि चित्र भी ले सकते हैं और उन्हें अपनी पुस्तिका में रख सकते हैं। या तो अपने विचारों को मार्जिन में लिखें या किसी अन्य पेज को जोड़ें और इसे अपने निर्देश पुस्तिका में सम्मिलित करें।

दूसरों को शिष्य बनाने का प्रशिक्षण देना।

इन प्रशिक्षुओं को शुरू से ही अच्छे नोट्स लेने के लिए प्रोत्साहित करना याद रखें ताकि वे दूसरों को वैसे ही शिष्य बना सकें जैसे आप कर रहे हैं। आप छात्र को हाइलाइट करने, सर्कल करने या निश्चित करने के लिए कह सकते हैं

उनके निर्देश पुस्तिका में शब्द। यह उनकी प्रति बन जानी चाहिए कि वे बाद में दूसरों को निर्देश देने में मदद कर सकें। बेशक उनके पास अपनी आत्मिक पत्रिकाओं से कई अन्य विचार होंगे।

आध्यात्मिक पत्रिका।

मसीहीयों को प्रभु के सामने अपने जीवन की घटनाओं को प्रतिबिंबित करने के लिए सीखने की जरूरत है। हमारे व्यस्त दिन में, मैदान में इत्मीनान से टहलना आम नहीं है। इसलिए इसके बजाय उन्होंने एक नोटबुक (या कंप्यूटर दस्तावेज़) बनाया है जो उन्हें अपने जीवन के माध्यम से प्रतिबिंबित करने में मदद करता है। छात्र को अपनी आध्यात्मिक पत्रिका में अपने कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करें। हम आशा करते हैं कि यह लंबे समय तक चलने वाले आध्यात्मिक अनुशासन में विकसित होगा। उन्हें यह बताओ! आंख नीचे प्रार्थना, विशेष बाइबिल मार्ग, जीवन-पाठ, मजबूत प्रलोभन, प्रार्थना अनुरोध आदि लिख सकते हैं।

होम प्रोजेक्ट लें।

यह महत्वपूर्ण है कि छात्र सूचीबद्ध अध्ययन करता है। वे निश्चित रूप से प्रशिक्षु की आवश्यकता के अनुकूल हो सकते हैं। हालांकि, उन्हें किया जाना चाहिए। समय के लिए आवंटित किया जाना चाहिए और देखें कि क्या उन्होंने अपने छंदों को याद किया और वास्तविक अध्ययन कैसे चले। यह एक अनुशासन का समय है। आपको व्यक्तिगत होने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, उनसे पूछें कि उन्हें किन लोगों को माफ करने की जरूरत थी। विशिष्ट हो जाओ! इतना विनम्र मत बनो कि पढ़ाई निष्फल हो जाए। यह जरूरी है कि जानकारी का निजी तौर पर व्यवहार किया जाए। ये अध्ययन परमेश्वर के सत्य को उनके जीवन में लाने के लिए तैयार किए गए हैं।

प्रार्थना करना सीखना।

कई असाइनमेंट के लिए युवा आस्तिक को प्रार्थना करने की आवश्यकता होती है। कभी-कभी ईसाई प्रार्थना के लिए अनिच्छुक हो सकते हैं क्योंकि उन्होंने पहले कभी किसी को प्रार्थना करते नहीं सुना। कुछ चर्चों में दुर्भाग्यवश केवल पादरी प्रार्थना करते हैं। संरक्षक को प्रार्थना करने के लिए धीरे से उन्हें नेतृत्व करने की आवश्यकता होती है। छोटे से शुरू करो। कभी-कभी वे सिर्फ यह नहीं जानते कि कैसे शुरू करें (स्वर्ग में प्रिय पिता) या रोकें (यीशु मसीह के नाम से हम प्रार्थना करते हैं, आमीन)। यदि वे बहुत अनिच्छुक हैं, तो बस उन्हें छोटे वाक्यांशों में आपके बाद दोहराएं।

अन्य संसाधन।

BFF (www.foundationsforfreedom.net) वेबसाइट पर अन्य सामग्री के साथ खुद को परिचित करें। यदि व्यक्ति ज्यादा पहल दिखाता है, तो उन्हें होमपेज पर जाएं और बस टाइप करें

एब्साइडिंग, बेल या फाउंडेशन जैसे विषय। वह या तो महान बाइबिल निर्देश के साथ कई पृष्ठ पाएंगे।

प्रश्न एवं उत्तर

प्रश्न: क्या सामग्री उन लोगों के लिए उपयुक्त है जो कुछ समय से ईसाई हैं?

एक: बिल्कुल। कई ईसाइयों ने मूल बातें नहीं सीखी हैं। दुर्भाग्य से देर होने पर भी सबक की जरूरत है।

प्रश्न: मुझे लगता है कि सीखने के लिए अभी बहुत कुछ है लेकिन इतना कम समय।

A: यह सीखने और सिखाने के लिए एक महान दृष्टिकोण है! पुस्तिकाओं के माध्यम से जाओ और फिर कुछ वर्षों में उनके माध्यम से फिर से जाओ। जीवन में हर स्तर पर, वे अलग-अलग महत्वपूर्ण हो जाते हैं। याद रखें जीवन में बुनियादी रिश्ते लगातार हमें निर्देश दे रहे हैं।

प्रश्न: क्या मैं इन सामग्रियों का उपयोग एक नए मसीही पर कर सकता हूं?

A: आप कर सकते हैं। कोई हर्ज नहीं। मूल बातें यहां सिखाई जाती हैं लेकिन एक अलग रूपरेखा में। हम सुझाव देते हैं कि आप पहले एक छोटे से सबसे बुनियादी शिष्यत्व पाठ्यक्रम से गुजरें जैसे कि ऊपर सुझाया गया (3 X E)।

प्रश्न: मुझे लगता है कि मैं अभी बहुत कुछ सीख रहा हूं। मैं दूसरे को कैसे शिष्य बना सकता हूं?

A: कोई भी अपने दम पर सिखाने के लिए पूरी तरह तैयार नहीं है। हमें सीखने की ज़रूरत है कि पवित्र आत्मा के साथ कैसे पढ़ाया जाए। अति आत्मविश्वास उतना ही खतरनाक है जितना आत्मविश्वास की कमी। हम शिष्य हैं क्योंकि हम मसीह की आज्ञा के आज्ञाकारी हैं।

प्रश्न: संबंधपरक शिष्यत्व के बाद हम किन प्रशिक्षण सामग्रियों का उपयोग कर सकते हैं?

A: द लाइफ कोर देखें, जो स्पष्ट समझ प्रदान करता है कि आध्यात्मिक विकास कैसे और क्यों होता है। यह आपको पूरे शिष्यत्व प्रक्रिया का सर्वेक्षण देता है और स्थानीय चर्च में प्रशिक्षण इतना महत्वपूर्ण क्यों है। प्रत्येक चर्च को इस बात की रूपरेखा तैयार करनी चाहिए कि ईसाई के प्रत्येक चरण के लिए उनके पास क्या लक्ष्य हैं और फिर उपयुक्त सामग्री का चयन करें

विश्वासियों को प्रशिक्षित करें। हमारे पास आस्तिक को बाइबल पढ़ने और उसका अध्ययन करने के साथ-साथ हमारे दूसरे स्तर के शिष्यत्व संसाधन सीखने में मदद करने के लिए संसाधन हैं, जो युवा आस्तिक को पूर्ण परिपक्वता की ओर बढ़ने में मदद करते हैं। यह दूसरा चरण आस्तिक को यह जानने में मदद करता है कि कैसे उपयोग करना है परमेश्वर का वचन नियमित रूप से प्रलोभनों को दूर करता है और विभिन्न जीवन स्थितियों में भगवान पर भरोसा करता है।

परिशिष्ट # 3 पुस्तक
सारांश

रिलेशनल डिसिप्लिनशिप एक बुनियादी शिष्यत्व पाठ्यक्रम है जिसे मसीहीयों के लिए उनके शुरुआती मसीही चलने के लिए एक ठोस बाइबिल ग्राउंडिंग विकसित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। आदर्श रूप से, इस सामग्री का नेतृत्व एक संरक्षक द्वारा किया जाना चाहिए। मरकुस 12: 30-31 में स्थापना की गई है।

"और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना। और दूसरी यह है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखनाइस से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं। :"

शास्त्र अन्य लोगों के साथ संबंधों के साथ परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते को एकीकृत करता है। हम परमेश्वर के साथ अपने संबंधों में और अधिक वृद्धि नहीं कर सकते हैं, जितना हम दूसरे लोगों के साथ अपने संबंधों में विकसित होने के लिए तैयार हैं। विपरीत भी सत्य है। हम दूसरों के साथ अपने रिश्ते में किसी भी तेजी से नहीं बढ़ सकते हैं जितना हम परमेश्वर के करीब बढ़ते हैं।

क्रूस प्रशिक्षण के लाभ

- शास्त्र के नमूना कई विषयों का निर्माण करते हैं
- नमूना के आसपास की सच्चाइयों का संश्लेषण करें
- परमेश्वर के साथ हमारे बढ़ते संबंधों पर लागू बुनियादी सत्य लागू करें
- लोगों के साथ बढ़ते संबंधों पर लागू बुनियादी सत्य लागू करें
- ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज दोनों रिश्तों को विलय करके सीखना
- एक अच्छा आधार निर्धारित करें, जिस पर नए शिष्य अपने पूरे जीवन में पर्मेश्वर के शानदार काम को समझते हैं।
- एक-से-एक, छोटे समूह या शिक्षण स्थिति में उपयोग किया जा सकता है।

परिशिष्ट 4: क्रूस प्रशिक्षण

बाइबल संदर्भ

* कंठस्थ छंद

शीर्षकों की कुंजी

- # 1 पिता - पुत्र (एफएस)
- # 2 चरवाहा - मेम्ने (SL)
- # 3 शिक्षक - शिष्य (टीडी)
- "1 राजा - किंगडम (केके)"
- # 5 दुल्हन - दुल्हन (बीबी)
- # 6 न्यायाधीश - पापी (जेएस) "
- # 7 पुजारी - लोग (पीपी) "
- # 8 मास्टर - नौकर (एमएस) "
- # 9 उद्धारक - चुना (RC)
- # 10 आधारशिला - पत्थर (सीएस)
- # 11 पति - पत्नी (HW)
- # 12 बेल - शाखाएँ (VB)

पुराना नियम

संख्या 21: 7-9 (पीपी)
व्यवस्थाविवरण 10:15 (RC)
नौकरी 36:22 (टीडी)
भजन 23: 1-2,4 (SL)
भजन ४५: १०-११ (बीबी)
भजन १००: २ (केके)
भजन १००: २-३ (SL)
सोलोमन 6:30 (बीबी) का गीत
यशायाह 28:16 (सीएस)
* यशायाह 50: 4 (टीडी)
यशायाह 53: 5-6 (आरसी)
यशायाह 53:12 (पीपी)
यशायाह 55: 7 (बीबी)
यशायाह 59: 2 (आरसी)
यशायाह 59:16 (पीपी)
यशायाह 64: 6-7 (जेएस)
यिर्मयाह 29: 12-13 (SL)
यहेजकेल 34: 11-12 (SL)

नया नियम

मत्ती 3:17 (एफएस)
मत्ती 5: 7 (जेएस)
मत्ती 5: 9 (एफएस)
मत्ती 5:16 (एफएस)
मत्ती 5:28 (एचडब्ल्यू)
मत्ती 5: 44-45 (एफएस)
मत्ती 6:10 (केके)
मत्ती 7:11 (एफएस)
मत्ती 10:16 (एसएल)
मत्ती 18: होस्ट (जेएस)
मत्ती 19: 6 (एचडब्ल्यू)
मत्ती 25: 1-13 (बीबी)
मत्ती 25: 22-23 (एमएस)
मत्ती 26: 52-53 (एफएस)
मत्ती 28: 18-20 (टीडी; एसएल)
मरकुस 1:22 (टीडी)
मरकुस 2:18 (टीडी)
मरकुस 6:34 (SL)
मरकुस 10:15 (केके)
ल्यूक 2: 46-47 (टीडी)
* लूका 6: 35-36 (जेएस)
लूका 6:40 (टीडी)
लूका 9:24 (एमएस)
लूका 16:13 (एमएस)
लूका 22: 24-27 (एमएस)
लूका 22:42 (एमएस)
यूहन्ना 3: 14-16 (पीपी)
यूहन्ना 3:16 (पीपी)
यूहन्ना 3:36 (जेएस)
यूहन्ना 5:39 (SL)
यूहन्ना 6:38 (एफएस; एमएस)
यूहन्ना 6: 66-69 (टीडी)
यूहन्ना 10:11 (SL)
यूहन्ना 10:14 (SL)
* यूहन्ना 10: 14-15 (SL)
यूहन्ना 10:16 (SL)
यूहन्ना 12:26 (एमएस)

यूहन्ना 12:28 (एफएस)
यूहन्ना 13: 13-16 (एमएस)
यूहन्ना 13:34 (सीएस)
यूहन्ना 14: 2-3 (बीबी)
यूहन्ना 14: 6 (टीडी)
यूहन्ना 14: 8-9 (एफएस)
यूहन्ना 15: 1-2 (वीबी)
* यूहन्ना 15: 4-5 (वीबी)
यूहन्ना 15: 5,7 (वीबी)
यूहन्ना 15:15 (SL)
यूहन्ना 15:16 (RC; VB)
यूहन्ना 15:17 (एमएस)
यूहन्ना 15:19 (SL)
यूहन्ना 16:27 (एफएस)
यूहन्ना 17:18, 20 (एफएस)
यूहन्ना 18:36 (केके)
यूहन्ना 21:22 (सीएस)
प्रेरित 1: 3 (केके)
प्रेरित 11:26 (टीडी)
रोमन 1:18 (जेएस)
रोमन 3:23 (जेएस)
रोमियों 6:11 (MS)
रोमियों 8: 6 (एमएस)
रोमियों 8:28 (एफएस)
रोमन 8:34 (पीपी)
रोम 9:16 (आरसी)
रोम 9:23 (आरसी)
रोम 9:29 (आरसी)
रोमियों 11:22 (जेएस)
रोमियों 12: 17-21 (आरसी)
1 कुरिन्थियों 3: 10-13 (सीएस)
1 कुरिन्थियों 4: 5 (जेएस)
* 2 कुरिन्थियों 6:16 (सीएस)
इफिसियों 1: 4 (आरसी)
इफिसियों 2: 19-20 (सीएस)
इफिसियों 2: 21-22 (सीएस)
इफिसियों 5: 3 (बीबी)
इफिसियों 5: 5 (केके)
इफिसियों 5: 22-24 (HW)
इफिसियों 5: 25,28 (एचडब्ल्यू)
इफिसियों 5: 28-29 (HW)
इफिसियों 5: 32-33 (एचडब्ल्यू)
* फिलिप्पियों 2: 5-7 (एमएस)
फिलिप्पियों 2: 5-8 (एमएस)
फिलिप्पियों 2: 9-11 (एमएस)
कुलुस्सियों 1:13 (केके)
* कुलुस्सियों 1: 13-14 (आरसी)
* कुलुस्सियों 3: 13-14 (HW)
1 थिस्सलुनीकियों 1: 7-8 (केके)
1 थिस्सलुनीकियों 2:12 (केके)
1 थिस्सलुनीकियों 5:17 (SL)
2 थिस्सलुनीकियों 1: 8-10 (जेएस)
1 तीमुथियुस 2: 1-2 (केके)
1 तीमुथियुस 2: 5 (पीपी)
1 तीमुथियुस 6: 14-16 (केके)
2 तीमुथियुस 2: 2 (टीडी)
2 तीमुथियुस 2:22 (बीबी)
2 तीमुथियुस 4:18 (केके) इब्रानियों 5: 8-9 (पीपी)
इब्रानियों 10:25 (केके) इब्रानियों 11:25 (आरसी)
इब्रानियों 12: 6-7 (वीबी) जेम्स 2: 8 (केके)
1 पतरस 1: 18-19 (आरसी)
1 पतरस 2: 4 (सीएस)
1 पतरस 2: 5 (सीएस)
1 पतरस 2: 5 (पीपी)
1 पतरस 2: 9 (केके)
* 1 पतरस 2: 9-10 (पीपी)
1 पतरस 2:20 (आरसी)
1 पतरस 3: 1 (एचडब्ल्यू)
1 पतरस 5: 2-4 (SL)
2 पतरस 2:19 (एमएस)
1 जॉन 1: 5 (जेएस) * 1 जॉन 3: 1 (एफएस)
1 जॉन 3: 5 (जेएस) रहस्योद्घाटन 1: 6 (केके)
रहस्योद्घाटन 2: 4 (बीबी) रहस्योद्घाटन 14: 17-18: 4 (जेएस) * रहस्योद्घाटन 17:14 (केके) * रहस्योद्घाटन 19: 7-8 (बीबी)) रहस्योद्घाटन 19:16 (केके)

परिशिष्ट 5: लेखक

परिचय

परमेश्वर के लोगों में शिष्यत्व की उपेक्षा पर पॉल की बड़ी चिंता है। उन्होंने पहली बार 1980 के दशक के दौरान विदेशी चर्च प्लानर के रूप में काम करते हुए इस तरह की आवश्यकता के बारे में सीखा। 1990 के दशक के दौरान अमेरिका में रहते हुए उन्होंने अपना पहला शिष्यत्व प्रशिक्षण सामग्री विकसित की। बाद में, प्रभु ने उन्हें 2000 में स्वतंत्रता के लिए बाइबिल की नींव स्थापित करने के लिए बुलाया। तब से वे सक्रिय रूप से लेखन, अंतरराष्ट्रीयव मसीही अगुवे प्रशिक्षण सेमिनार आयोजित कर रहे हैं और स्थानीय चर्च में सेवा कर रहे हैं।

पॉल की शादी आश्चर्यजनक रूप से पैंतीस वर्षों से अधिक हो चुके है। आठ बच्चों और तीन पोते, पॉल और उनकी पत्नी के साथ लिंडा लगातार अपने जीवन में परमेश्वर का आशीर्वाद प्रकट करते हैं।

मसीही जीवन पर पॉल की विस्तृत श्रृंखला, शिष्यत्व, ईश्वरीय जीवन, नेतृत्व प्रशिक्षण, विवाह, पालन-पोषण, चिंता, पुराने और नए नियम और अन्य आत्मिक जीवन विषय विशेष अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं जो उनकी कई पुस्तकों और प्रशिक्षण सामग्रियों में मिश्रित होती हैं।

पॉल और बीएफएफ सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए यहां देखें: